ETHICS & EMOTIONAL INTELLIGENCE

नैतिकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता

प्रस्तावना

हमारे समाज की गतिशील टेपेस्ट्री में, **नैतिकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के धागे मानव बातचीत के ताने-बाने में जुड़े हुए हैं।**जैसे-जैसे हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के सिद्धांतों से प्रेरित युग में आगे बढ़ **रहे हैं, समग्र शिक्षा के लिए एक दूरदर्शी रोडमैप,** नैतिकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व और भी स्पष्ट हो जाता है। इसी संदर्भ में 'एथिक्स एंड इमोशनल इंटेलिजेंस: ए एनईपी 2020 एंड एनसीईआरटी पर्सपेक्टिव' पुस्तक उभरती है, जो व्यक्तिगत, पेशेवर और राष्ट्रीय विकास की दिशा में मार्ग को रोशन करने वाली एक मार्गदर्शक रोशनी है.

रिसर्च एंड एनालिसिस विंग के तत्वावधान में परिवर्तनकारी पहल "बने भारत भाग्य निर्माण" के हिस्से के रूप में सावधानीपूर्वक देखभाल के साथ तैयार की गई यह पुस्तक शिक्षा की पारंपरिक सीमाओं से परे है। एनईपी 2020 के सिद्धांतों के साथ सहज रूप से संरेखित, यह नैतिकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के जटिल लेकिन महत्वपूर्ण विषयों को समझने योग्य कथाओं में शामिल करता है, जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं को लक्षित करने वाले उम्मीदवारों के लिए एक अमूल्य संसाधन प्रदान करता है।

सरकारी और कॉर्पोरेट नौकरी प्लेसमेंट के दायरे से परे, यह पुस्तक केंद्रीय विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा (सीयूईटी) की तैयारी करने वालों के लिए एक अनिवार्य साथी के रूप में कार्य करती है। **"संविधान को जानो, भारत को पहचानो" के मार्गदर्शक दर्शन में निहित,** यह भारत की पहचान के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में नैतिक सिद्धांतों और भावनात्मक कौशल की एक व्यावहारिक खोज प्रदान करता है।

इस पुस्तक के पृष्ठ नैतिक सिद्धांतों, नैतिक दुविधाओं और व्यक्तिगत और सामूहिक बेहतरी के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग करने की कला के क्षेत्र के माध्यम से यात्रा करते हैं। यह उन मूल्यों के सार को समाहित करता है जो आधुनिक दुनिया की चुनौतियों के लिए भावनात्मक लचीलापन को बढ़ावा देते हुए एक सामंजस्यपूर्ण समाज को रेखांकित करते हैं। यह पुस्तक केवल जानकारी का भंडार नहीं है; यह एक प्रबुद्ध और सहानुभूतिपूर्ण नागरिक बनाने की दिशा में एक रोडमैप है।

जैसा कि पाठक इस परिवर्तनकारी यात्रा पर निकलते हैं, वे खुद को न केवल परीक्षाओं के लिए बल्कि जीवन के लिए भी सुसज्जित पा सकते हैं। **"नैतिकता और भावनात्मक खुफिया: एक एनईपी 2020 और एनसीईआरटी परिप्रेक्ष्य"** व्यक्तियों को ईमानदारी, करुणा और ज्ञान के साथ तेजी से बदलती दुनिया की जटिलताओं को नेविगेट करने का अधिकार देता है।

सर्वाधिकार सुरक्षित

यह प्रकाशन और इसकी सामग्री कॉपीराइट कानून द्वारा संरक्षित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल तरीके शामिल हैं, पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय (संक्षिप्त उद्धरणों के मामले में एवं आलोचनात्मक समीक्षाओं और कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत कुछ अन्य गैर-व्यावसायिक उपयोगों में)

अनुमति अनुरोधों के लिए, कोठारी प्रकाशन एलएलपी, इंदौर से संपर्क करें।

इस प्रकाशन की सामग्री की अनधिकृत प्रतिलिपि या वितरण निषिद्ध है और इसके परिणामस्वरूप कानूनी कार्रवाई हो सकती है। प्रकाशक और लेखक ने इस पुस्तक में सटीक और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत की है, लेकिन वे सामग्री की सटीकता या पूर्णता, या इसके आधार पर की गई किसी भी कार्रवाई के लिए कोई कानूनी जिम्मेदारी नहीं लेते हैं।

पूछताछ और जानकारी के लिए संपर्क करें:

कोठारी पब्लिकेशन एलएलपी इंदौर

अनुक्रमणिका

क्र.सं	अध्याय	पृष्ठ सं
1.	निर्णय लेना क्या है	2 - 6
2.	नैतिक निर्णय लेने	7- 9
3	व्यापार को नैतिकता	10-13
4.	जीवन और व्यवसाय में नैतिकता	14-16
5.	भारत में संवैधानिक नैतिकता	17- 22
6.	पर्यावरणीय नैतिकता:	23-27
7.	दृष्टिकोण: सामग्री, संरचना और कार्य	27-38
8.	कॉर्पोरेट या व्यावसायिक नैतिकता	39-42
9.	भावनात्मक बुद्धिमत्ता	43-63
10	कृत्रिम होशियारी & नीति	64-69
11।	सरकारी और निजी क्षेत्र में नैतिक चिंताएँ और दुविधाएँ	70 - 79
12.	नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण	80-95
13.	समग्र विकास (अणुव्रत के सन्दर्भ में)	95-100

1.निर्णय लेना क्या है?

समकालीन प्रबंधन प्रणाली में संगठन की सफलता के लिए निर्णय लेने का बहुत महत्व है। प्रबंधकों को हर स्तर पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं । निर्णय लेना योजना, आयोजन, स्टाफिंग, निर्देशन और नियंत्रण जैसे सभी प्रबंधकीय कार्यों में व्याप्त है। उदाहरण के लिए योजना बनाने में प्रबंधक निर्णय लेता है कि क्या उत्पादन करना है, कहां और कब करना है और आयोजन में प्रबंधक कार्य के वितरण, अधिकार सौंपने और जिम्मेदारी तय करने के बारे में निर्णय लेता है। निर्णय लेना किसी चीज़ के प्रति प्रतिबद्धता और एक सिद्धांत या कार्रवाई का तरीका है। यह कार्रवाई के वैकल्पिक तरीकों में से सर्वश्रेष्ठ का चयन कर रहा है। निर्णय लेने में विभिन्न कारक शामिल होते हैं। निर्णय लेने का अर्थ है कि विभिन्न विकल्प हैं और समस्या को हल करने के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प चुना जाता है। एक अन्य कारक विकल्पों का अस्तित्व है जिसमें निर्णय लेने वाले को अपनी पसंद का विकल्प चुनने की स्वतंत्रता होती है। निर्णय लेना लक्ष्योन्मुख है। इसका तात्पर्य यह है कि निर्णय लेने वाला महत्वपूर्ण निर्णय लेकर कुछ परिणाम प्राप्त करने का प्रयास करता है।

सैद्धांतिक अध्ययनों में, यह स्थापित किया गया है कि निर्णय लेना प्रबंधन का एक अनिवार्य हिस्सा है। निर्णय लेना निर्णय लेने की एक प्रक्रिया है। कॉलिन्स (1999) निर्णय को विभिन्न स्रोतों से महत्वपूर्ण विचारों को इकट्ठा करके, साझा करके अपना मन बनाने की क्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं। इसके अलावा, लॉन्गमैन (2000) का वर्णन है कि "निर्णय एक विकल्प या निर्णय है जो आप चर्चा या विचार की अवधि के बाद लेते हैं"। लॉन्गमैन की परिभाषा बहुत स्पष्ट है लेकिन यह निर्णय लेने या निर्णय लेने की परिभाषा पर एक प्रश्न उठाती है। फ़ुलान का मानना है कि निर्णय लेना स्थिति की मांग के अनुरूप कार्रवाई के वैकल्पिक तरीकों की पहचान करने और चुनने की प्रक्रिया है (1982)। बेकर एट अल के अनुसार. (2001), निर्णय लेने की शुरुआत निर्णय में निर्णय लेने वालों और हितधारकों की पहचान से होनी चाहिए, जिससे समस्या की परिभाषा, आवश्यकताओं, लक्ष्यों और मानदंडों के बारे में संभावित असहमति को कम किया जा सके। फ्रीमाउंट , एट अल, ने निर्णय लेने को "जागरूक और मानवीय प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें तथ्यात्मक और मूल्य परिसर के आधार पर व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों घटनाएँ शामिल हैं, जो एक या अधिक विकल्पों में से एक व्यवहारिक गतिविधि के विकल्प के साथ समाप्त होती हैं । कुछ वांछित स्थिति की ओर बढ़ना (1970)। एक निर्णय निर्माता, एक व्यक्ति के रूप में, या संगठन के बारे में अपने दृष्टिकोण और धारणा के साथ औपचारिक संगठन के सदस्य के रूप में, संगठन द्वारा लगाए गए बाधाओं के भीतर मूल्यों को अनुकूलित करने का चयन करता है (वार्ष्णेय, 1997)

निर्णयों के प्रकार: निर्णयों को कई प्रकार से समूहीकृत किया जाता है :

प्रोग्राम किए गए और गैर-प्रोग्राम किए गए निर्णय: प्रोग्राम किए गए निर्णय वे होते हैं जो नीति, प्रक्रिया और नियमों के अनुरूप किए जाते हैं । ये निर्णय नियमित और चक्रीय होते हैं और क्रमबद्ध निर्णय लेना तुलनात्मक रूप से आसान होता है। गैर-प्रोग्राम किए गए निर्णय नए और गैर-दोहराव वाले होते हैं। यदि कोई समस्या पहले उत्पन्न नहीं हुई है या यदि उससे निपटने का कोई सटीक तरीका नहीं है, तो उसे गैर-प्रोग्राम किए

गए निर्णय द्वारा निपटाया जाना चाहिए। क्रमादेशित निर्णय के लिए, निश्चित नियम मौजूद हैं और इसलिए दो व्यक्तियों के लिए किसी समस्या का अलग-अलग समाधान खोजना संभव नहीं है। गैर-प्रोग्राम किए गए निर्णय के मामले में, समस्या से निपटने के लिए कोई निर्धारित नियम नहीं हैं। प्रत्येक प्रबंधक निर्णय लेने के लिए अपनी व्यक्तिगत मान्यताएँ, दृष्टिकोण और निर्णय ला सकता है। इस मामले में, दो प्रबंधकों के लिए एक ही समस्या का अलग-अलग समाधान ढूंढना संभव है। शीर्ष स्तर के प्रबंधक के पास गैर प्रोग्राम किए गए निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए।

बड़े और छोटे निर्णय: बड़े निर्णय मानवीय निर्णय और अनुभव के प्रयोग द्वारा सावधानीपूर्वक और जानबूझकर लिए जाते हैं जबकि छोटे निर्णय लगभग अवचेतन रूप से नियमों का उपयोग करके लिए जाते हैं। विभागों पर दीर्घकालिक प्रभाव डालने वाले निर्णयों को प्रमुख निर्णय की श्रेणी में रखा जाता है। वैकल्पिक रूप से, कॉर्पोरेट निर्णय जिनका दीर्घकालिक प्रभाव नहीं होता है उन्हें छोटे निर्णय के रूप में जाना जाता है। संगठन में कुछ प्रमुख निर्णय उदाहरणों में मौजूदा उत्पाद श्रृंखला का विविधीकरण, नई तकनीक को अपनाना प्रमुख निर्णय हैं। कच्चा माल प्राप्त करने का निर्णय एक छोटा निर्णय है, बड़े निर्णय शीर्ष स्तर पर और छोटे निर्णय संगठनात्मक सीढ़ी में निचले स्तर पर लिए जाते हैं।

सरल और जटिल निर्णय: निर्णय लेने की एक अन्य श्रेणी सरल और जटिल निर्णय लेना है। सरल निर्णय उस स्थिति में लिया जाता है जहां किसी समस्या को हल करने के लिए कुछ चर पर विचार किया जाता है। यदि चर अनेक हैं तो यह एक जटिल निर्णय है।

रणनीतिक और सामरिक या परिचालन निर्णय: रणनीतिक निर्णय संगठन के लक्षित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संसाधनों के आवंटन और योगदान से संबंधित कार्यों का अच्छा विकल्प बनाना है। रणनीतिक निर्णय बड़े और गैर-प्रोग्राम किए गए निर्णय होते हैं और इनका दीर्घकालिक प्रभाव होता है। एक रणनीतिक निर्णय में पिछली प्रणाली से प्रमुख निष्कासन शामिल हो सकता है। उदाहरण के लिए, उत्पाद मिश्रण में संशोधन। रणनीतिक निर्णय वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा लिए जाते हैं। सामरिक या परिचालन निर्णय रणनीतिक निर्णय से उत्पन्न होता है। यह संगठन के दैनिक कामकाज से जुड़ा है और एयर कंडीशनिंग, पार्किंग सुविधाओं के प्रावधानों के लिए निर्णय लेने जैसी स्थापित नीतियों और प्रक्रियाओं के संदर्भ में बनाया गया है। इस प्रकार के निर्णय निचले स्तर के प्रबंधकीय कर्मचारियों द्वारा लिए जाते हैं।

व्यक्तिगत और समूह निर्णय: निर्णय किसी व्यक्ति या समूह द्वारा लिया जा सकता है। जो निर्णय प्रकृति में नियमित होते हैं, कुछ परिवर्तनशील होते हैं और उनसे निपटने के लिए सटीक प्रक्रियाएं मौजूद होती हैं, वे व्यक्तियों द्वारा लिए जाते हैं। ऐसे निर्णय जिनका प्रभाव अन्य विभागों पर पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप संगठन में कुछ परिवर्तन हो सकता है, समूहों द्वारा लिए जाते हैं।

निर्णय लेने की प्रक्रिया:

कोई निर्णय उचित होता है यदि वह संगठन के लिए उपयुक्त हो अर्थात लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सर्वोत्तम विकल्प चुनें। तर्कसंगत निर्णय लेने में विभिन्न चरण होते हैं:

1. समस्या को पहचानना.
2. समस्याओं के बीच प्राथमिकताएं तय करना।

3. समस्या का निदान.
4. वैकल्पिक समाधान या गतिविधियों के पाठ्यक्रम का विकास करना।
5. विकल्पों का मूल्यांकन करना.
6. निर्णय को प्रभावी कार्यवाही में परिवर्तित करना एवं कार्यवाही का अनुवर्तन करना।

निर्णय लेने की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण चरण . **(1) समस्या को पहचानना:** निर्णय का संगठन के संचालन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जब कोई प्रबंधक कोई निर्णय लेता है, तो यह वास्तव में किसी समस्या के प्रति संगठन की प्रतिक्रिया होती है। इसलिए, किसी समस्या के अस्तित्व के लिए पर्यावरण की खोज करना आवश्यक है। समस्या तब होती है जब पिछले अनुभव से विचलन होता है या योजना से विचलन होता है। समस्या तब उभरती है जब प्रतिस्पर्धी अच्छा प्रदर्शन करते हैं या जब लोग प्रबंधक के सामने समस्याएं लेकर आते हैं। समस्याओं के मूल कारणों का गहराई से पता लगाना प्रबंधक की जिम्मेदारी है।

(2) समस्याओं के बीच प्राथमिकताएँ तय करना: समस्याओं की पहचान करने के बाद, प्रबंधक को यह आकलन करना चाहिए कि कौन सी समस्या संगठन पर अधिक हानिकारक प्रभाव डालती है। उसे लग सकता है कि कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जिन्हें उनके सहायक हल कर सकते हैं क्योंकि वे उनके सबसे करीब हैं। ऐसी सभी समस्याओं को अधीनस्थों को हस्तांतरित किया जाना चाहिए। कुछ समस्याओं के लिए केवल उच्च स्तर पर या अन्य विभागों को प्रभावित करने वाली जानकारी की आवश्यकता हो सकती है। ऐसी समस्याओं को उच्च स्तरीय प्रबंधकों के पास भेजा जाता है। और उन समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करना है जिन्हें वह सबसे अच्छे से हल कर सकता है।

(3) समस्याओं का निदान : समस्या की तीव्रता को समझना आवश्यक है। प्रबंधक द्वारा देखे गए समस्या के लक्षण कई बार उसे गलत जानकारी दे सकते हैं। यह लक्षण प्रबंधक को एक भाग के बारे में सोचने पर मजबूर कर सकता है जबकि दोष दूसरे भाग में छिपा हो सकता है। उदाहरण के लिए , यदि बिक्री में गिरावट आती है, तो प्रबंधन सोच सकता है कि समस्या खराब बिक्री प्रक्रिया या पुराने बाजार की संतृप्ति में से एक है। लेकिन वास्तविक समस्या ग्राहकों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शीघ्रता से आगे बढ़ने में असमर्थता हो सकती है। समस्या का निदान करने के लिए, एक प्रबंधक को सिस्टम दृष्टिकोण का पालन करना चाहिए। उसे अपने संगठन के उन सभी उप-भागों का अध्ययन करना चाहिए जो उस उप-भाग से जुड़े हुए हैं जिसमें समस्या स्थित है।

(4) वैकल्पिक समाधान विकसित करना: संगठन में एक समस्या के कई समाधान होते हैं। हालाँकि, सभी तरीके समान रूप से संतोषजनक नहीं हो सकते। किसी निर्णय का सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए निर्णय निर्माता को उपलब्ध विभिन्न विकल्पों को पहचानना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि सभी विकल्पों पर विचार करना संभव नहीं है क्योंकि सभी विकल्पों के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकती है या सीमाओं के कारण कुछ विकल्पों पर विचार नहीं किया जा सकता है। इसलिए विकल्प चुनते समय सीमित कारक की अवधारणा पर विचार करना आवश्यक है। सीमित कारक वह है जो किसी वांछित उद्देश्य को पूरा करने में बाधक बनता है। एक निर्णय निर्माता अपने स्वयं के अनुभव, दूसरों द्वारा अपनाई गई प्रथाओं और रचनात्मक अभ्यास का उपयोग करके विकल्पों को वर्गीकृत कर सकता है। पिछले अनुभव से , निर्णय निर्माता कार्रवाई

को ध्यान में रखता है। अतीत का सफल कार्य भविष्य के लिए विकल्प बन सकता है। लेकिन इस तरह के विचार का मुख्य प्रतिबंध यह है कि व्यावसायिक स्थिति में बदलाव के कारण पिछले अनुभव में सफलता वर्तमान संदर्भ में आवश्यक नहीं हो सकती है। विकल्प विकसित करने की अन्य विधि रचनात्मक प्रक्रिया के माध्यम से होती है जहां पूरी तरह से नए विचारों को बनाने के लिए विभिन्न अभ्यास किए जाते हैं। व्यक्तियों या समूहों के रचनात्मक विचार विकल्प विकसित करने में मदद करते हैं। एक लोकप्रिय समूह तकनीक ब्रेन स्टॉर्मिंग है। ब्रेन स्टॉर्मिंग ग्रुप में 5 से 10 लोग होते हैं। विचार-मंथन के पीछे सबसे अच्छा विचार यह है कि बिना रुके जितना संभव हो सके उतने अधिक विकल्पों के बारे में सोचा जाए।

(5) वैकल्पिक समाधान के परिणामों को मापना और तुलना करना: विभिन्न विकल्पों को विकसित करने के बाद, गुणवत्ता और स्वीकार्यता का उपयोग करके विकल्पों के उनके परिणामों को मापना और तुलना करना आवश्यक है। किसी निर्णय की गुणवत्ता मूर्त और अमूर्त दोनों परिणामों को ध्यान में रखकर निर्धारित की जानी चाहिए। मूर्त परिणाम वे होते हैं जिन्हें मात्रात्मक रूप से मापा जा सकता है या गणितीय रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है। अमूर्त परिणामों को मात्रात्मक रूप से नहीं मापा जा सकता। कोई निर्णय गुणवत्ता में अच्छा होते हुए भी स्वीकार्यता में ख़राब हो सकता है या स्वीकार्य होते हुए भी निर्णय गुणवत्ता में अच्छा नहीं हो सकता है। ऐसे मामलों में प्रबंधकों को इन दोनों के सापेक्ष महत्व का पता लगाना चाहिए।

(6) निर्णय को प्रभावी कार्रवाई में बदलना और कार्रवाई का अनुसरण करना: इस चरण में, निर्णय को स्पष्ट और स्पष्ट शब्दों में कर्मचारियों को सूचित किया जाना चाहिए। निर्णय लेने के कुछ चरणों में कर्मचारियों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक प्रयास किए जाने चाहिए। निर्णय लेने में कर्मचारियों के सहयोग से न केवल स्वीकार्यता में सुधार होता है, बल्कि निर्णय की गुणवत्ता में भी सुधार होता है।

निश्चितता के तहत निर्णय लेना: निश्चितता शब्द प्रत्येक विकल्प के परिणाम के सटीक ज्ञान को दर्शाता है। निर्णय लेने के लिए सभी प्रासंगिक डेटा उपलब्ध हैं।

जोखिम के तहत निर्णय लेना: जोखिम के तहत निर्णय लेने में, किसी विशेष निर्णय का परिणाम निश्चितता के साथ विशिष्ट नहीं हो सकता है, लेकिन ज्ञात संभाव्यता मूल्यों के साथ निर्दिष्ट किया जा सकता है। प्रायिकता का मान उस घटना के घटित होने की प्रायिकता का माप है। ऐसे मामलों में, प्रत्येक विकल्प से जुड़े भुगतान के अपेक्षित मूल्य की गणना करके विकल्पों का मूल्यांकन किया जाता है।

अनिश्चितता के तहत निर्णय लेना: अनिश्चितता तब मौजूद होती है जब निर्णय लेने वाले को संभावित परिणामों से संबंधित संभावनाओं का अच्छा ज्ञान नहीं होता है, हालांकि वह संभावित परिणामों और उनके संबंधित भुगतानों को पहचानने में सक्षम होता है। चूंकि संभावनाओं की पहचान नहीं की गई है, इसलिए निर्णय निर्माता भुगतान को अधिकतम करने के सिद्धांत का उपयोग नहीं कर सकता है।

संक्षेप में कहें तो, निर्णय लेना कार्रवाई के वैकल्पिक तरीकों में से सर्वश्रेष्ठ का चयन करना है। प्रभावी और सफल निर्णय कंपनी के लिए फायदेमंद हो सकते हैं और नुकसान को रोक सकते हैं। इसलिए, कॉर्पोरेट निर्णय लेने की प्रक्रिया किसी भी संगठन में सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में , प्रबंधक कुछ संभावित विकल्पों में से एक कार्रवाई का तरीका चुनते हैं। निर्णय लेने की प्रक्रिया में, हम कई उपकरणों, तकनीकों और धारणाओं का उपयोग कर सकते हैं। निर्णयों को क्रमादेशित और गैर-क्रमादेशित निर्णय, बड़े

और छोटे निर्णय, सरल और जटिल निर्णय, रणनीतिक और परिचालन निर्णय के रूप में समूहीकृत किया जा सकता है। निर्णय के वातावरण को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है जिनमें निश्चितता, जोखिम और अनिश्चितता शामिल हैं।

2.नैतिक निर्णय

परिभाषा

नैतिक निर्णय विश्वास को प्रेरित करते हैं और इसके साथ ही निष्पक्षता, जिम्मेदारी और दूसरों की देखभाल भी करते हैं। नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया इन स्थितियों को पहचानती है और सभी उपलब्ध विकल्पों की समीक्षा करने, अनैतिक विचारों को खत्म करने और सर्वोत्तम नैतिक विकल्प चुनने की आवश्यकता होती है।

अच्छे निर्णय प्रभावी और नैतिक दोनों होते हैं। पेशेवर रिश्तों में, अच्छे निर्णय सम्मान, विश्वास पैदा करते हैं और आम तौर पर अच्छी नागरिकता के अनुरूप होते हैं। प्रभावी निर्णय तब प्रभावी होते हैं जब वे वह हासिल कर लेते हैं जिसके लिए वे बने थे। एक विकल्प जो अनपेक्षित परिणाम उत्पन्न करता है वह अप्रभावी है और इसलिए अच्छा नहीं है।

अच्छे निर्णय लेने की कुंजी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आगे आने वाले विभिन्न विकल्पों के बारे में सोचना है। इसी कारण से, अल्पकालिक बनाम मध्यम से दीर्घकालिक उद्देश्यों के बीच अंतर को समझना भी बहुत महत्वपूर्ण है।

नैतिक निर्णय लेने के लिए नैतिक मुद्दों के प्रति एक निश्चित संवेदनशीलता और निर्णय से जुड़े सभी विचारों की जांच करने की एक विधि की आवश्यकता होती है। इसलिए नैतिक निर्णय लेने के लिए एक विधि या संरचना का होना आवश्यक है। इस प्रक्रिया को कुछ बार निष्पादित करने के बाद, विधि विश्वसनीय हो जाती है और चरणों के माध्यम से चलना आसान हो जाता है।

नीचे नैतिक निर्णय लेने के तरीकों का विवरण दिया गया है।

रूपरेखा, मॉडल और तरीके

यदि नैतिकता धर्म, भावनाओं, कानून, सामाजिक प्रथाओं या विज्ञान पर आधारित नहीं है, तो यह किस पर आधारित है? अनगिनत दार्शनिकों और नीतिशास्त्रियों ने इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया है। कम से कम पांच अलग-अलग नैतिक मानदंड या मानक प्रस्तावित किए गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण को नीचे समझाया गया है।

उपयोगितावादी दृष्टिकोण -यह दृष्टिकोण यह निर्देश देता है कि जो कार्य सबसे अधिक नैतिक है वह वह कार्य है जो सबसे अधिक लाभ पैदा करता है और सबसे कम नुकसान पहुंचाता है। दूसरे शब्दों में, वह निर्णय जो अच्छे और बुरे के बीच सबसे बड़ा संतुलन बनाता है।

कारोबारी माहौल में, यह वह निर्णय है जो सबसे अधिक लाभ देता है और ग्राहकों, कर्मचारियों, शेयरधारकों, पर्यावरण आदि को कम से कम नुकसान पहुंचाता है।

सही दृष्टिकोण

सही दृष्टिकोण बताता है कि सबसे नैतिक निर्णय वह है जो सभी संबंधित लोगों के नैतिक अधिकारों की सर्वोत्तम रक्षा और सम्मान करता है। इस दृष्टिकोण का तर्क है कि लोगों की गरिमा मानव स्वभाव या स्वतंत्र रूप से यह चुनने की क्षमता पर आधारित होती है कि वे अपने जीवन के साथ क्या करना चाहते हैं।

उस गरिमा के आधार पर, उन्हें दूसरों के साथ समान व्यवहार करने का अधिकार है, न कि केवल किसी अन्य उद्देश्य के साधन के रूप में।

निष्पक्षता या न्याय दृष्टिकोण

सभी समान लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए। यूनानी दार्शनिक अरस्तू और अन्य लोगों ने उस विचार में योगदान दिया। आज, इस विचार का उपयोग यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि नैतिक निर्णय सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं। यदि समान नहीं है, तो यह एक ऐसे मानक पर आधारित होना चाहिए जो समझाने योग्य हो।

जब लोग संगठन में अधिक योगदान देते हैं तो उन्हें उनकी कड़ी मेहनत के लिए अधिक भुगतान किया जाता है। यह उचित है। लेकिन कई लोग आश्चर्य करते हैं कि क्या सीईओ का वेतन, दूसरों की तुलना में लगभग 100 गुना अधिक, उचित है। क्या यह मानक रक्षात्मक है?

सामान्य अच्छा दृष्टिकोण

यूनानी दार्शनिकों ने भी इस विचार में योगदान दिया कि एक समुदाय में रहना अच्छी बात है। लोगों के कार्यों और कार्यों को इसमें योगदान देना चाहिए। यह दृष्टिकोण बताता है कि समाज के भीतर रिश्ते नैतिक तर्क और अभिनय का आधार हैं। अन्य सभी के लिए सम्मान और करुणा, विशेष रूप से कमजोर लोगों के लिए, जीवन के नैतिक तरीके को बनाए रखने के लिए आवश्यक शर्तें हैं।

सदाचार दृष्टिकोण

नैतिकता के प्रति एक प्राचीन दृष्टिकोण यह विश्वास है कि नैतिक रूप से कार्य करना कुछ गुणों के अनुसार होना चाहिए जो सामान्य रूप से मानवता के विकास को सुनिश्चित करते हैं। सद्गुण वे प्रवृत्तियाँ और आदतें हैं जो मनुष्य को मानवीय चरित्र की उच्चतम क्षमता के साथ कार्य करने में सक्षम बनाती हैं।

नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया और रोडमैप

नीचे नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया के रोडमैप का सारांश दिया गया है।

1. तथ्य इकट्ठा करें

जब तक तथ्य सामने न आ जाएं, तब तक किसी निष्कर्ष पर न पहुंचें। मौजूदा मुद्दे के बारे में अपने आप से प्रश्न पूछें, जैसे कि 5 क्यों विधि। तथ्यों को ढूंढना हमेशा आसान नहीं होता है, खासकर उन स्थितियों में जहां नैतिकता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कुछ तथ्य उपलब्ध नहीं हैं या स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने योग्य नहीं हैं। यह भी बताएं कि कौन सी धारणाएं बनाई गई हैं।

2. नैतिक मुद्दे को परिभाषित करें -समाधान या नई योजनाओं पर विचार करने से पहले, नैतिक मुद्दे को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है। यदि कई नैतिक केंद्र बिंदु हैं, तो केवल सबसे महत्वपूर्ण को पहले संबोधित किया जाना चाहिए।

3. हितधारकों की पहचान करें

सभी हितधारकों की पहचान करें. वे प्राथमिक हितधारक कौन हैं? और द्वितीयक हितधारक कौन हैं? उन्हें इस मुद्दे में दिलचस्पी क्यों है?

4. प्रभावों और परिणामों को पहचानें

निर्णय से जुड़े संभावित सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों के बारे में सोचें। इन परिणामों की भयावहता क्या है? और क्या संभावना है कि ये परिणाम वास्तव में घटित होंगे ? अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणामों के बीच अंतर करें।

5. सत्यनिष्ठा और चरित्र पर विचार करें

इस संदर्भ में समुदाय क्या सोचता है कि यह एक अच्छा निर्णय होगा, इस पर विचार करें। यदि राष्ट्रीय समाचार पत्र आपके निर्णय के बारे में लिखे तो आपको यह कैसा लगेगा? जनमत क्या है? आपका चरित्र और व्यक्तित्व आपके निर्णय को किस प्रकार प्रभावित करता है?

6. संभावित कार्यों के साथ रचनात्मक बनें

क्या ऐसे अन्य विकल्प या विकल्प हैं जिन पर अभी तक विचार नहीं किया गया है? यदि छोटी संख्या पर विचार किया जाता है तो अतिरिक्त समाधान या विकल्प देने का प्रयास करें।

7. सही नैतिक कार्रवाई का निर्णय लें

प्रत्येक विकल्प के परिणामों, कर्तव्यों और चरित्र पहलुओं के आधार पर विकल्पों पर विचार करें। चुनाव को सही ठहराने के लिए कौन से तर्क सबसे उपयुक्त हैं?

3. व्यावसायिक नैतिकता

व्यावसायिक नैतिकता क्या हैं?

बिजनेस एथिक्स अध्ययन करता है कि कॉरपोरेट गवर्नेंस, व्हिसलब्लोइंग, कॉरपोरेट संस्कृति और कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी से कैसे निपटा जाए। यह शासी निकायों द्वारा निर्धारित मानक सिद्धांतों पर जोर देता है। व्यावसायिक नैतिकता का अनुपालन न करने पर अनावश्यक कानूनी कार्रवाइयां होती हैं।

अनुशासन आचार संहिता पर भी जोर देता है; अलिखित नियमों का एक समूह जो कानूनी रूप से लागू करने योग्य नहीं है। जब कॉर्पोरेट नियमों में लगातार बदलाव की बात आती है तो इसमें बहुत सारी बारीकियाँ होती हैं। इसलिए, व्यावसायिक नैतिकता व्यवसायियों और कर्मचारियों को नैतिक प्रक्रियाओं और गैर-अनुपालन के लिए दंड के बारे में शिक्षित करती है।

- व्यावसायिक नैतिकता व्यवसायों के लिए निर्धारित आचार संहिता है। यह विभिन्न प्रक्रियाओं से नैतिक रूप से निपटने के लिए दिशानिर्देशों का एक सेट है।
- अनुशासन में कॉर्पोरेट जिम्मेदारी, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, सामाजिक जिम्मेदारी, वफादारी, निष्पक्षता, सम्मान, भरोसेमंदता और प्रौद्योगिकी नैतिकता शामिल है। यह स्थिरता, ग्राहक वफादारी, ब्रांड छवि और कर्मचारी प्रतिधारण पर जोर देता है।

- इसका उद्देश्य जानबूझकर और अनजाने में होने वाली अनैतिक व्यावसायिक प्रथाओं को रोकना है। कुछ अनैतिक आचरण कानून प्रवर्तन को बाधित करते हैं। फिर भी, व्यवसाय एक छिपी हुई लागत - प्रतिष्ठा की हानि - का भुगतान करने का जोखिम उठाते हैं।

व्यावसायिक नैतिकता की व्याख्या

व्यावसायिक नैतिकता सामाजिक, सांस्कृतिक, कानूनी और अन्य आर्थिक सीमाओं का पता लगाती है और इसमें शामिल पक्षों के हितों की रक्षा करती है। इसके अलावा, यह उपभोक्ता संरक्षण, कल्याण, निष्पक्ष व्यवसाय प्रथाओं और समाज की सेवा जैसे नैतिक और सामाजिक मूल्यों पर जोर देता है।

व्यवसायों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने सभी लेन-देन में निष्पक्ष और ईमानदार रहें। यदि व्यवसाय ऐसा करने में विफल रहते हैं, तो उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। वैधानिक कानून नैतिकता को नियंत्रित करते हैं। लेकिन नैतिकता प्रवर्तन से परे है; उन्हें स्वयं थोपा जाना चाहिए और लगन से उनका पालन करना चाहिए। नैतिकता बनाए रखने के लिए, व्यवसायों को नियमित अंतराल पर **आंतरिक ऑडिट** और गुणवत्ता नियंत्रण जांच करनी चाहिए। साथ ही, हर कंपनी की नैतिकता अलग-अलग होती है।

व्यावसायिक नैतिकता को प्रभावित करने वाले कारक

नैतिकता का प्रयोग व्यवसाय मालिकों के व्यक्तिगत मूल्यों पर निर्भर करता है। दिन के अंत में, किसी कंपनी के भीतर क्या सही और क्या गलत है , यह व्यक्तिगत नैतिकता पर निर्भर करता है। इसलिए, जब प्रबंधन नेताओं को चुनता है, तो नैतिकता एक बड़ी भूमिका निभाती है। ये व्यक्ति फर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी कार्यकारी या कर्मचारी द्वारा किए गए किसी भी अनैतिक आचरण के लिए प्रबंधन अंततः उत्तरदायी है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि काम करने की स्थिति, उत्पाद सुरक्षा, वैधानिक चेतावनी और सामाजिक जिम्मेदारियों के लिए उद्योग-विशिष्ट सरकारी दिशानिर्देश हैं। फर्म के सुचारू कामकाज के लिए दिशानिर्देशों का पालन करना आवश्यक है। सामाजिक संस्कृति नैतिकता को प्रभावित करती है; व्यवसायों से कुछ सामाजिक और नैतिक प्रथाओं को अपनाने की अपेक्षा की जाती है। यदि व्यवसाय सामाजिक मानदंडों का पालन करने में विफल रहते हैं, तो वे ब्रांड छवि, प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता को बर्बाद करने का जोखिम उठाते हैं।

व्यावसायिक नैतिकता उदाहरण

नैतिक होने का एक सरल उदाहरण प्लास्टिक की थैलियों से बचना है। वर्तमान में, कॉर्पोरेट नैतिकता दृढ़ता से स्थिरता पर जोर देती है - भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन खतरे में हैं।

9 दिसंबर, 2021 को, विंट्रस्ट फाइनेंशियल कॉरपोरेशन ने एथिक्स के लिए बेटर बिजनेस ब्यूरो (बीबीबी) **टॉर्च अवार्ड जीता** । विंट्रस्ट शिकागो स्थित एक वित्तीय सेवा है। कंपनी अपने नैतिक मानकों और निष्पक्ष व्यावसायिक प्रथाओं के लिए जानी जाती है।

विंट्रस्ट एक मूल्य-संचालित संगठन के रूप में उभर कर सामने आया। प्रत्येक कर्मचारी संबंध-केंद्रित बैंकिंग समाधान प्रदान करने का प्रयास करता है। बीबीबी सामुदायिक सेवा और वित्तीय देखभाल में अपने योगदान के लिए लोकप्रिय है।

व्यावसायिक नैतिकता के सिद्धांत

व्यावसायिक नैतिकता के मूल सिद्धांत इस प्रकार हैं:

1. **जवाबदेही** : नैतिकता व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने के बारे में है। यह दोनों तरह से चलता है. फर्म की अनैतिक गतिविधियों के लिए व्यक्ति जिम्मेदार हैं क्योंकि वे मुखबिर बनने के लिए आगे नहीं आए। इसी तरह, जब कोई कर्मचारी अनैतिक व्यावसायिक गतिविधियों में लिप्त होता है, तो फर्म जिम्मेदार होती है।
2. **देखभाल और सम्मान** : सहकर्मियों के बीच व्यावसायिक बातचीत जिम्मेदार और सम्मानजनक होनी चाहिए। कंपनियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कार्यस्थल सुरक्षित और सामंजस्यपूर्ण हो।
3. **ईमानदारी** : कर्मचारियों का विश्वास हासिल करने का सबसे अच्छा तरीका उनके साथ पारदर्शी संचार करना है।
4. **संघर्षों से बचें** : कंपनियों को कार्यस्थल में हितों के टकराव को कम करने की आवश्यकता है। कार्यबल के भीतर अत्यधिक प्रतिस्पर्धा विनाशकारी रूप से समाप्त हो सकती है।
5. **अनुपालन** : फर्मों को सभी नियमों और विनियमों का अनुपालन करना होगा।
6. **वफादारी** : कर्मचारियों को संगठन के प्रति वफादार होना चाहिए और ब्रांड छवि को बनाए रखना चाहिए। शिकायतें, यदि कोई हों, आंतरिक रूप से निपटाई जानी चाहिए।
7. **प्रासंगिक जानकारी** : ऐसी जानकारी प्रदान करना आवश्यक है जो समझने योग्य हो। सभी प्रासंगिक तथ्य, चाहे सकारात्मक हों या नकारात्मक, प्रकट किये जाने चाहिए। फाइन प्रिंट में अनुचित नियम और शर्तों को छिपाना अनैतिक है।
8. **कानून का पालन** : कॉर्पोरेट कानून समाज के हर वर्ग के अधिकारों की रक्षा करते हैं। किसी भी प्रकार का भेदभाव अनैतिक है. व्यक्तियों के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों का नेताओं के निर्णय लेने पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।
9. **प्रतिबद्धताओं को पूरा करना** : समझौतों की अनुचित व्याख्या करके गैर-अनुपालन को उचित ठहराना अनैतिक है।

व्यावसायिक नैतिकता के प्रकार

नीचे मानक नैतिक प्रथाएँ दी गई हैं जिन्हें किसी व्यवसाय को अपनाना चाहिए:

1. **कॉर्पोरेट जिम्मेदारी** : संगठन कुछ नैतिक और नैतिक दायित्वों के साथ एक अलग कानूनी इकाई के रूप में काम करता है। ऐसी नैतिकता फर्म से जुड़े सभी आंतरिक और बाहरी पक्षों के हितों की रक्षा करती है। इसमें कर्मचारी, ग्राहक और **शेयरधारक शामिल हैं** ।
2. **सामाजिक उत्तरदायित्व** : मुनाफा कमाना समाज की कीमत पर नहीं होना चाहिए। इसलिए, कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारियाँ (सीएसआर) एक आम प्रथा रही है जहाँ व्यवसाय पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक कारणों और जागरूकता फैलाने की दिशा में काम करते हैं।
3. **व्यक्तिगत जिम्मेदारी** : कर्मचारियों से अपेक्षा की जाती है कि वे ईमानदारी, परिश्रम, समय की पाबंदी और अपवादित कर्तव्यों को निभाने की इच्छा के साथ जिम्मेदारी से काम करें। व्यक्तियों को समय पर बकाया का भुगतान करना चाहिए और आपराधिक कृत्यों से बचना चाहिए।

4. **प्रौद्योगिकी नैतिकता** : 21 वीं सदी में, कंपनियों ने ई-कॉमर्स प्रथाओं को अपनाया है। प्रौद्योगिकी नैतिकता में ग्राहक-गोपनीयता, व्यक्तिगत जानकारी और बौद्धिक संपदा निष्पक्ष प्रथाएं शामिल हैं।
5. **निष्पक्षता** : पक्षपात अत्यधिक अनैतिक है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ व्यक्तिगत पूर्वाग्रह होते हैं। लेकिन कार्यस्थल पर, व्यक्तिगत मान्यताओं और पूर्वाग्रहों का निर्णय लेने पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। फर्म को सभी के लिए विकास और पदोन्नति की उचित संभावनाएँ सुनिश्चित करनी होंगी।
6. **विश्वसनीयता और पारदर्शिता : व्यवसायों को व्यावसायिक प्रथाओं और वित्तीय रिपोर्टों** में पारदर्शिता बनाए रखनी चाहिए।

चुनौतियां

कर्मचारियों को उनकी नैतिक आचार संहिता के बारे में शिक्षित करना एक बड़ी चुनौती है। व्यक्तिगत नैतिकता के विपरीत, कॉर्पोरेट नियम और विनियम जटिल हैं। गैर-अनुपालन से किसी कर्मचारी पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ सकता है, लेकिन फर्म को भारी नुकसान हो सकता है। बड़ी कंपनियों में, यह एक कठिन काम है; सीधा संवाद कम है. ईमेल इच्छित संदेश को सटीक रूप से संप्रेषित करने में सफल नहीं होते हैं। यदि कॉर्पोरेट विचारधारा श्रमिकों को अच्छी तरह से संप्रेषित नहीं की जाती है, तो अनुपालन न होने की संभावना है। एक कर्मचारी की एक साधारण गलती एक बड़ी इकाई की ब्रांड छवि को धूमिल कर सकती है।

नैतिक अनुपालन, रिश्वत, यौन उत्पीड़न और विषाक्त वातावरण कंपनियों के सामने आने वाली आम चुनौतियाँ हैं। लेकिन, दूसरा चरम भी है. नैतिकता के नाम पर तैयार किए गए कड़े नियम व्यवसायों की वृद्धि और लाभप्रदता में बाधा डालते हैं। सभी परोपकार और कल्याण के अलावा, कंपनियों को लाभ कमाने की ज़रूरत है। मुनाफ़े के बिना, व्यवसाय अपने कर्मचारियों को भुगतान नहीं कर सकते।

4. जीवन और व्यवसाय में नैतिकता

हम सभी को नैतिक विकल्प चुनने और अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिकता लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। लेकिन नैतिकता का क्या मतलब है, और व्यवसाय के लिए नैतिकता क्यों मायने रखती है? हम नैतिकता को उन सिद्धांतों के रूप में सोच सकते हैं जो सर्वोत्तम विकल्प चुनने की दिशा में हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं जो सभी के सामान्य हित में योगदान करते हैं। नैतिकता वह है जो हमें सच बोलने, अपने वादे निभाने या किसी जरूरतमंद की मदद करने के लिए मार्गदर्शन करती है। दैनिक आधार पर हमारे जीवन में नैतिकता का एक ढाँचा अंतर्निहित होता है , जो हमें ऐसे निर्णय लेने में मदद करता है जो सकारात्मक प्रभाव पैदा करते हैं और हमें अन्यायपूर्ण परिणामों से दूर रखते हैं। नैतिकता हमारे द्वारा चुने गए विकल्पों के माध्यम से दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है।

व्यवसाय में नैतिकता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता। व्यावसायिक नेताओं की अपने व्यवसायों की नैतिक संस्कृति को आकार देने में एक अनूठी भूमिका और बड़ी जिम्मेदारी होती है, और इस तरह वे अपने व्यापक समुदायों को भी प्रभावित करते हैं।

पूछे जाने वाले मुख्य प्रश्न

व्यवसायिक नेता अपने व्यवसाय की नैतिक संस्कृति को परिभाषित करने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं, लेकिन वे अनिवार्य रूप से ऐसा करते हैं। अपनी व्यावसायिक मानसिकता में नैतिकता लाने के लिए विचार करने के लिए यहां कुछ प्रमुख प्रश्न दिए गए हैं:

- मैं अपने व्यवसाय के लिए सामान्य भलाई को कैसे परिभाषित करूं? इसका मेरे ग्राहकों, मेरे कर्मचारियों, उस समुदाय जहां मेरा व्यवसाय स्थित है, मेरे निवेशकों और मेरे समर्थकों के लिए क्या मतलब है?
- मैं अच्छे नैतिक निर्णय कैसे ले सकता हूँ? मैं किसी स्थिति का विश्लेषण कैसे करूँ और ऐसा निर्णय कैसे लूँ जो आम भलाई में सकारात्मक योगदान दे?
- मैं अपने व्यवसाय के चरित्र को कैसे प्रभावित कर सकता हूँ?
- एक नैतिक संस्कृति बनाने के लिए मुझे किस प्रकार की संरचनात्मक स्थितियाँ या कंपनी की नीतियाँ स्थापित करने की आवश्यकता है?
- मैं अपने व्यवसाय की नैतिक संस्कृति की निगरानी कैसे करूँगा?
- मैं अपने व्यवसाय में अनैतिक व्यवहार को कैसे संबोधित या सुधारूँगा?

नैतिकता का परीक्षण कैसे किया जा सकता है

व्यावसायिक नेता और विशेष रूप से उद्यमी अत्यधिक दबाव में हैं और उन्हें बहुत महत्वपूर्ण नैतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। उद्यमियों के लिए अनैतिक निर्णय कैसे उत्पन्न होते हैं इसके कुछ उदाहरण यहां दिए गए हैं:

- यदि मैं अपने ग्राहकों या ऑर्डरों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर बताऊं, तो मैं अधिक निवेशकों को आकर्षित कर सकता हूं और बेहतर फंडिंग प्राप्त कर सकता हूं।
- अगर मैं ग्राहकों को बताऊं कि हमारे उत्पाद रोडमैप की सभी सुविधाएं अब उपलब्ध हैं, तो मैं और अधिक सौदे कर सकता हूं।
- यदि मैं ऐसी उत्पादन सुविधा चुनता हूं जो पर्यावरण कानूनों का पालन नहीं करती है तो मैं कुछ पैसे बचा सकता हूं।

नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी

सामाजिक उत्तरदायित्व यह विचार है कि एक व्यक्ति (या संगठन) का दायित्व है कि वह बड़े पैमाने पर समाज के लाभ के लिए कार्य करे। आज, सामाजिक जिम्मेदारी सभी आकार के व्यवसायों में संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। TOMS शूज़ एक ऐसे व्यवसाय का उत्कृष्ट उदाहरण है जो सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देता है। TOMS की स्थापना जरूरतमंद बच्चे को खरीदे गए जूतों की प्रत्येक जोड़ी के लिए एक नई जोड़ी जूते प्रदान करने की प्रतिबद्धता के साथ की गई थी। कंपनी ने अब सुरक्षित पानी, मानसिक स्वास्थ्य और समानता जैसे अन्य कारणों का समर्थन करने के लिए विस्तार किया है। TOMS शूज़ की प्रेरणादायक टैगलाइन "स्टैंड फ़ॉर टुमॉरो" केवल तीन शब्दों में सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति उसके समर्पण को बताती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन प्रतिदिन छोटे-बड़े तरीकों से किया जा सकता है। व्यवसाय स्थानीय संगठनों के साथ स्वेच्छा से काम कर सकते हैं, किसी चुने हुए उद्देश्य के लिए धन दान कर सकते हैं, पड़ोस के समूह या खेल टीम को प्रायोजित कर सकते हैं और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। यहां तक कि फूल लगाने, पेंट का ताजा कोट लगाने या अपने स्टोर के सामने कूड़ा उठाने से भी आपके व्यवसाय के आसपास के समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब व्यवसाय वापस देते हैं, तो वे न केवल आम भलाई में योगदान देते हैं, बल्कि

वे सार्थक तरीकों से अपने समुदायों के साथ जुड़ते हैं, कर्मचारियों के बीच मनोबल बनाते हैं और व्यवसाय के लिए सकारात्मक सम्मान पैदा करते हैं।

चीजें गलत होने पर नैतिकता

व्यावसायिक संकट को संभालना आसान नहीं है, लेकिन इसे टालना या प्रतिक्रिया को स्थगित करना इसे और भी बदतर बना सकता है। नैतिक संकट से निपटने के लिए कोई योजना बनाते समय व्यवसायों को नैतिक रूप से सोचना चाहिए। दूसरे शब्दों में, इस तरह से कार्य करें जो सबसे बड़े सामान्य हित को बढ़ावा दे और विश्वास को कम करने के बजाय प्रोत्साहित करे।

कुछ स्थितियों में वकील और संकट विशेषज्ञ की सलाह की आवश्यकता हो सकती है। यहां कुछ सामान्य प्रथाएं दी गई हैं जिनका पालन किया जा सकता है:

- खुले और पारदर्शी रहें
- स्थिति से प्रभावित लोगों को प्राथमिकता दें
- क्षमा माँगना
- समस्या हल करो

स्रोत: " नैतिकता संकट से निपटने के सिद्धांत ," किर्क ओ. हैनसन, सांता क्लारा विश्वविद्यालय में मार्ककुला सेंटर फॉर एप्लाइड एथिक्स के वरिष्ठ साथी और केंद्र के पूर्व कार्यकारी निदेशक

नैतिकता एक जीवन शैली है

नैतिकता का हमारे व्यक्तिगत जीवन से लेकर पेशेवर करियर और उससे आगे तक हमारे द्वारा लिए गए निर्णयों और हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों पर प्रभाव पड़ता है। हम सभी एक परस्पर जुड़े हुए वैश्विक समुदाय का हिस्सा हैं। आम भलाई के लिए हमारा योगदान, चाहे कितना भी बड़ा या कितना छोटा हो, स्थायी प्रभाव डाल सकता है। नैतिक जीवनशैली का चयन यह सुनिश्चित करेगा कि हमारा प्रभाव सकारात्मक हो। व्यावसायिक नेताओं के पास अपने व्यवसायों और अपने हितधारकों के बीच नैतिक संस्कृति बनाने और प्रभावित करने का एक अनूठा अवसर है। यहां तक कि अपनी व्यावसायिक मानसिकता में नैतिकता लाने से आपको स्थितियों को अधिक नैतिक तरीके से देखने में मदद मिलेगी। और यदि आप अनिश्चित हैं कि अपने व्यवसाय में नैतिक संस्कृति कैसे बनाई जाए, तो उदाहरण के साथ नेतृत्व करना शुरुआत करने का एक शानदार तरीका है। यह सरल है जैसे अच्छे बनो, अच्छा करो।

5. भारत में संवैधानिक नैतिकता

परिचय

ए हिस्ट्री ऑफ ग्रीस ' में , लेखक जॉर्ज ग्रोट ने सार्वजनिक भावना के महत्व का विश्लेषण किया , जिसे उन्होंने क्लेस्थनीज के तहत एथेनियन लोकतंत्र का एक अभिन्न अंग बताया। उन्होंने इस सामाजिक शक्ति के जनता से सत्ता में मौजूद लोगों तक पहुंचने और समाज के सभी वर्गों, बहुसंख्यक या अल्पसंख्यक, के बीच इसके प्रसार की समीक्षा की। वह अनिवार्य रूप से 'संवैधानिक नैतिकता' की अवधारणा के बारे में बात कर रहे थे , जिसे वर्षों बाद डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 4 नवंबर 1948 को ' संविधान का मसौदा ' नामक अपने भाषण में संविधान सभा को संबोधित करते हुए दोहराया था। हाल के वर्षों में, इसका आह्वान किया गया भारतीय न्यायपालिका में विभिन्न निर्णयों में यह शब्द काफी लोकप्रिय हो गया है।

संवैधानिक नैतिकता क्या है?

संवैधानिक नैतिकता की शुरुआती परिभाषाओं में से एक ग्रोट द्वारा दी गई थी, जिसे उन्होंने देश के संविधान के विभिन्न पहलुओं के प्रति सर्वोच्च आज्ञाकारिता के रूप में वर्णित किया था। उनके अनुसार, संवैधानिक नैतिकता में नागरिकों के साथ-साथ प्राधिकारी दोनों के लिए कुछ दायित्व निहित हैं जिन्हें नीचे सूचीबद्ध किया गया है:

- संविधान और उससे आदेश प्राप्त करने वाले सभी प्रकार के प्राधिकारियों का सम्मान करना।
- नागरिकों को अपने संवैधानिक कर्तव्यों के पालन में कार्य करने वाले सभी अधिकारियों की आलोचना करने और उन्हें जवाबदेह ठहराने के लिए स्वतंत्र भाषण के अधिकार की उपलब्धता।
- संविधान द्वारा उन्हें दिए गए स्वीकृत प्रभार के भीतर अच्छी तरह से कार्य करने के लिए अनिवार्य प्राधिकारी और सार्वजनिक अधिकारियों का दायित्व।
- राजनीतिक सत्ता के लिए चुनाव लड़ रहे लोगों और उनके विपक्ष को संविधान के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए।

इसलिए, ग्रोट के लिए, 'आत्म-संयम' और 'बहुलता' के सिद्धांतों ने संवैधानिक नैतिकता के मूलभूत तत्वों का गठन किया, जहां पूर्व में एक संवैधानिक शासन में सभी हितधारकों की जिम्मेदारियां शामिल थीं (जैसा कि ऊपर बिंदुओं में सूचीबद्ध है) और बाद वाले का उल्लेख किया गया है शासित हो रहे समाज की विविध प्रकृति को।

संवैधानिक नैतिकता पर अम्बेडकर का दृष्टिकोण

डॉ. अंबेडकर के अनुसार, संवैधानिक नैतिकता की अवधारणा का तात्पर्य शासक और शासित के बीच सामंजस्यपूर्ण बातचीत से है, जिसमें किसी भी बड़े टकराव में शामिल हुए बिना या हिंसक क्रांतियों का सहारा लिए बिना उनके बीच उत्पन्न होने वाले असंतोष और हितों के टकराव का शांतिपूर्ण समाधान शामिल है। उन्होंने समाज में तत्कालीन (और अभी भी) मौजूदा असमानता और असमानता को हल करने की जिम्मेदारी

न केवल सरकार या संविधान पर बल्कि इस विश्वास प्रणाली या संवैधानिक नैतिकता के सिद्धांत पर भी डाली। उनका मानना था कि यह सिद्धांत देश में प्रशासन और संविधान के स्वरूप के बीच पुल और अंतर से छुटकारा पाने में मदद कर सकता है। भीमराव अंबेडकर की यह मान्यता थी कि भारतीय समाज स्वभावतः काफी हद तक अलोकतांत्रिक है और इस देश में संवैधानिक नैतिकता का बहुत महत्व है, जहां लोकतंत्र केवल मिट्टी पर 'टॉप-ड्रेसिंग' बनकर रह गया है।

संवैधानिक नैतिकता की समसामयिक व्याख्या

वर्तमान युग के संदर्भ में, संवैधानिक नैतिकता को मुख्य रूप से दो उप-वर्गीकरणों से परिभाषित किया जा सकता है: संविधान की भावना या शक्ति के रूप में और लोकप्रिय नैतिकता के विपरीतार्थी के रूप में।

भारत में संवैधानिक शासन की शुरुआत के बाद वर्षों की प्रगति के बाद से, संवैधानिक नैतिकता का उपयोग अदालतों द्वारा शायद ही किया गया है। शीर्ष अदालत के बेहद प्रसिद्ध केशवानंद फैसले में इसका सूक्ष्म संकेत दिया गया था जब उसने संविधान की मूल संरचना की अवधारणा को प्रतिपादित किया था। एक और प्रसिद्ध मामला जब "संवैधानिक नैतिकता के उल्लंघन" का उल्लेख किया गया था, वह प्रथम न्यायाधीश मामला, यानी *एसपी गुप्ता बनाम भारत संघ था* । इसके बाद, हाल ही में 2010 में जस्टिस अजीत प्रकाश शाह ने *नाज़ फाउंडेशन बनाम एनसीटी दिल्ली सरकार मामले में* पहली बार इसे लोकप्रिय स्वीकृति और नैतिकता के मानकों के विपरीत तरीके से इस्तेमाल किया। इस रूप में, राज्य के कार्यों का मूल्यांकन करते समय अदालतों के लिए सामाजिक मानदंडों, कलंकों और सीमाओं की उपेक्षा करने के लिए एक मिसाल कायम की गई थी। उदाहरण के लिए, इस मामले में, समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर करने के मुद्दे पर विचार करते समय , जो भारतीय दंड संहिता की धारा 377 के तहत एक आपराधिक अपराध था, न्यायालय ने इसके संबंध में समाज की धारणा के बजाय संवैधानिक सिद्धांतों को बनाए रखने के आदर्श को संज्ञान में लिया। समलैंगिक संबंधों की वैधता.

यह प्रवृत्ति जारी रही, क्योंकि इसके बाद न्यायाधीशों ने अपने निर्णयों में संवैधानिक नैतिकता का तर्क देना शुरू कर दिया। भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश, न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने *दिल्ली एनसीटी सरकार बनाम भारत संघ मामले में* संवैधानिक नैतिकता को 'दूसरे बुनियादी संरचना सिद्धांत ' के बराबर बताया। नागरिकों और अधिकारियों दोनों द्वारा सिद्धांत का सम्मान और पालन किए जाने के तथ्य को बहाल किया गया और यह, इन दोनों वर्गों पर समान रूप से एक जाँच के रूप में कार्य करते हुए, न्यायाधीशों द्वारा प्रबलित किया गया। हाल के लगभग सभी क्रांतिकारी फैसले, चाहे वह समलैंगिकता पर नवतेज सिंह जौहर का फैसला हो या व्यभिचार पर जोसेफ शाइन का फैसला , संवैधानिक नैतिकता उनके महत्वपूर्ण बुनियादी सिद्धांतों में से एक थी। वास्तव में, *इंडियन यंग लॉयर्स एसोसिएशन बनाम भारत संघ मामले में, जिसे आमतौर पर* सबरीमाला फैसले के रूप में जाना जाता है , सर्वोच्च न्यायालय ने सर्वोच्चता को बनाए रखने के लिए अनिवार्यता के सिद्धांत (किसी समुदाय की 'अभिन्न' धार्मिक प्रथाओं की रक्षा करने वाला सिद्धांत) को भी नजरअंदाज कर दिया था। संवैधानिक नैतिकता का.

संवैधानिक नैतिकता के स्रोत संविधान में 'नैतिकता' शब्द का अत्यधिक उल्लेख नहीं किया गया है, संवैधानिक नैतिकता की तो बात ही छोड़ दीजिए। हालाँकि, ऐसे चार स्रोत हो सकते हैं जिनसे संवैधानिक नैतिकता प्राप्त होती है। ये इस प्रकार हैं:

1. संवैधानिक नैतिकता की उत्पत्ति संविधान के भीतर से ही हो सकती है। अगर ठीक से पढ़ा जाए और व्याख्या की जाए, तो अनुच्छेद 12 से 35 (मौलिक अधिकार), अनुच्छेद 36 से 51 (राज्य नीति के निदेशक सिद्धांत), प्रस्तावना और मौलिक कर्तव्यों में संवैधानिक नैतिकता पर जोर देने वाला व्यापक सार है।
2. संवैधानिक सभा में होने वाली बहसें और चर्चाएँ संवैधानिक नैतिकता के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक रही हैं क्योंकि अम्बेडकर के विचारों को उसी की आधुनिक समझ के आधार के रूप में लिया गया है।
3. संविधान के निर्माण के दौरान घटित घटनाएँ और उससे जुड़ा अपेक्षित संवैधानिक इतिहास।
4. विशेष रूप से आधुनिक युग में माननीय सर्वोच्च न्यायालय और विभिन्न उच्च न्यायालयों द्वारा संवैधानिक भावना, नैतिकता की भावना को बनाए रखने और लोकतांत्रिक आदर्शों को मजबूत करने के लिए कई कठोर कानूनों को लागू किया गया है।

संवैधानिक नैतिकता का महत्व

संवैधानिक नैतिकता को इसके कई समर्थकों द्वारा परिवर्तनकारी और क्रांतिकारी प्रकृति में से एक के रूप में वर्णित किया गया है। संवैधानिक नैतिकता का महत्व नीचे सूचीबद्ध किया जा सकता है:

- जबकि इसका उद्देश्य बदलते समय, सिद्धांतों और समाज की महत्वाकांक्षाओं के साथ तालमेल बनाए रखना है, संवैधानिक नैतिकता का सिद्धांत देश में कानून के शासन को लागू करने की सुरक्षा और समर्थन भी करता है। इस प्रकार, यह किसी भी तरह से एकतरफा नहीं है और नागरिकों के साथ-साथ सरकार दोनों पर सवाल उठाता है।
- संवैधानिक नैतिकता का सिद्धांत राष्ट्र के लोकतांत्रिक आदर्शों को बढ़ावा देने और सुदृढ़ करने में सभी हितधारकों के सौहार्दपूर्ण सहयोग और समन्वय के लिए भी सहायक है। यह संवैधानिक महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए लोगों के बीच अधिक मिलनसारिता का प्रयास करता है जिसे एकता और टीम भावना के बिना हासिल करना संभव नहीं है। इस प्रकार, यह लोकतांत्रिक संस्थाओं पर लोगों के विश्वास को प्रचारित करने के विचार की ओर इशारा करता है।
- संवैधानिक नैतिकता के सिद्धांत का उपयोग उन कानूनों या क़ानूनों को पढ़ने के लिए किया जा सकता है जो मौजूदा समय के साथ असंगत हैं और इसका उपयोग सामाजिक या सार्वजनिक नैतिकता की धारणा में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, सती प्रथा पर रोक लगाने वाले कानून को पारित करके, जीवन और सम्मान का अधिकार उन भारतीय विधवाओं को दिया गया, जिन्हें पहले दुर्भाग्य और दुर्भाग्य का अग्रदूत माना जाता था। हालाँकि, इस कानून के पारित होने के बाद भारत में सती प्रथा और विधवाओं के अधिकारों को लेकर जनता की मानसिकता में स्पष्ट

बदलाव आया है। इससे उनके लिए अधिक अधिकारों की घोषणा भी हुई, जैसे कि पुनर्विवाह करना और अपने पति के निधन के बाद शिक्षा प्राप्त करना।

- संवैधानिक नैतिकता भारत जैसे जीवंत और विविधतापूर्ण देश के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिसकी आबादी बहुत अधिक है और इसके कई उपवर्ग हैं: जाति, धर्म, रंग , यौन रुझान, भाषाएं, लिंग, आदि। चूंकि 'बहुलता' महत्वपूर्ण में से एक है संवैधानिक नैतिकता के सिद्धांत का लोकाचार, यह इस भेद और गैर-एकरूपता को पहचानता है और विविधता को बढ़ावा देता है, जिससे समाज को अधिक समावेशी बनाने में मदद मिलती है।
- ऐसा देखा गया है कि कुछ आंदोलनों के प्रति एकजुटता दिखाने और संवैधानिक नैतिकता को कायम रखने के लिए बहुत सारे अधिकारी इस्तीफा दे देते हैं या अपनी सरकारी नौकरी छोड़ देते हैं। हालाँकि, संवैधानिक नैतिकता का सिद्धांत इसके विपरीत है; यह लोगों को व्यवस्था में सक्रिय भागीदार बनने और असमानताओं और गैर-संवैधानिक तत्वों से लड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संवैधानिक नैतिकता की आलोचना

संवैधानिक नैतिकता से जुड़े फायदे और महत्व के अलावा, कुछ चिंताएं भी हैं जिन पर कानूनी विशेषज्ञों, विधायकों, न्यायविदों और अदालतों को ध्यान देने की जरूरत है। इन पर नीचे चर्चा की गई है:

- भारत के संविधान में 'संवैधानिक नैतिकता' शब्द का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है। इसके अलावा, सिद्धांत पर आधारित कई मिसालों या निर्णयों की मौजूदगी के बावजूद, ऐसी कोई निश्चित परिभाषा नहीं है जिसे संवैधानिक नैतिकता के लिए जिम्मेदार ठहराया गया हो। इस प्रकार, इसका एक खुला अर्थ है और यह विभिन्न धारणा धारकों द्वारा व्यक्तिपरक व्याख्याओं के लिए गुप्त है। इसके अलावा, इसके सार की व्याख्या करना और अपेक्षित स्थितियों में लागू करना व्यक्तिगत न्यायाधीशों के विवेक पर छोड़ दिया गया है।
- संवैधानिक नैतिकता के सिद्धांत के विरोध में उन लोगों द्वारा प्रस्तुत एक और दृष्टिकोण यह है कि यह उदारवाद के जैविक और प्राकृतिक विकास या समाज की गलतियों या नैतिक बुराइयों के सुधार में बाधा डालता है क्योंकि यह 'शीर्ष' को लागू करने के लिए अदालतों के हाथों में शक्तियां प्रदान करता है। नैतिकता के मोर्चे पर आदर्श का 'गिरावट' दृष्टिकोण। कुछ लोगों ने इस प्रस्ताव को इस निष्कर्ष के साथ पूरक किया है कि यह अप्रत्यक्ष रूप से लोकतंत्र के सच्चे आदर्शों पर विश्वास की कमी को दर्शाता है जो शासित होने वाली आबादी के ज्ञान पर आधारित है।
- न्यायिक सिद्धांत के रूप में संवैधानिक नैतिकता के अस्तित्व के खिलाफ एक मजबूत तर्क यह है कि यह लोकतंत्र के बहुत ही बुनियादी सिद्धांत का स्पष्ट उल्लंघन है, यानी राज्य शासन ढांचे के तीन अंगों: न्यायपालिका, विधायिका और के बीच शक्ति का पृथक्करण । कार्यकारिणी। असहमत लोग इस विचार को आगे बढ़ाते रहते हैं कि संवैधानिक नैतिकता का उपयोग करके लोकतंत्र को बनाए रखने और बढ़ावा देने का अनुमानित उद्देश्य केवल एक दिखावा है क्योंकि यह न्यायिक सर्वोच्चता और अदालतों द्वारा अत्यधिक सक्रियता स्थापित करता है, जिससे उन कार्यों में हस्तक्षेप होता है जिन्हें मुख्य रूप से करने की मंजूरी दी जाती है। विधायिका। कुछ लोग इसकी व्याख्या संवैधानिकता को बढ़ावा देने की आड़ में संविधान के साथ धोखाधड़ी के रूप में भी करते हैं।

- पिछले बिंदु की एक और परिणामी आलोचना संवैधानिक नैतिकता को सामाजिक नैतिकता के विरुद्ध रखकर न्यायिक अतिरेक को बढ़ावा देना है।
- हाल ही में, भारत के अटॉर्नी जनरल, श्री केके वेणुगोपाल ने संवैधानिक नैतिकता को देश के लिए "खतरनाक" बताया। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट धीरे-धीरे "तीसरे संसद कक्ष " में तब्दील हो रहा है। स्वयं एजी जैसे वरिष्ठ कानूनी अधिकारी की ओर से कहा गया है कि यह इस सिद्धांत के संबंध में जनता के बीच नकारात्मक धारणा को बढ़ावा दे सकता है।

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अम्बेडकर और ग्रोटे दोनों ने संवैधानिक नैतिकता को सरकारी कार्रवाई का मुकाबला करने या हल करने के साधन के रूप में नहीं देखा; बल्कि, उन्होंने इसकी तुलना संवैधानिक आदर्शों को बनाए रखने के लिए लोगों द्वारा स्वयं लगाए गए संयम से की। हालाँकि, समय बीतने के साथ और डॉ. अम्बेडकर द्वारा 1948 में संविधान सभा में अपना भाषण देने के लगभग सत्तर दशक बाद, विभिन्न विद्वानों और न्यायाधीशों द्वारा सिद्धांत की कई अलग-अलग व्याख्याएँ की गई हैं। अभी के लिए, संवैधानिक नैतिकता की दो-आयामी परिभाषा शामिल है: सबसे पहले, लोकप्रिय नैतिकता से लड़ने का एक कानूनी तंत्र और एक अनुस्मारक कि न्यायालयों को खुद को कभी-कभी कठोर, सामाजिक मान्यताओं और विचारों से मुक्त रखना चाहिए, जिन्हें बेहतरी और व्यापक उन्नति के लिए सुधार की आवश्यकता होती है। देश की। दूसरे, यह अदालतों को भारतीय संविधान की भावना और विवेक की जांच करने की सुविधा देकर सरकार को जवाबदेह बनाने में मदद करता है।

इस प्रकार, इसे सही रूप से दूसरे बुनियादी संरचना सिद्धांत के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह अपनी परिभाषा के संबंध में थोड़ा अस्पष्ट और अस्पष्ट है, अधिकांश अन्य संवैधानिक सिद्धांतों की तरह जो विभिन्न मामलों में निर्णय देते समय न्यायाधीशों की व्याख्या पर बहुत अधिक निर्भर और निर्भर हैं। हालाँकि, देश में जिस तरह की न्यायिक प्रणाली मौजूद है, वह इसे एक आवश्यकता बनाती है, और न्यायाधीशों के लिए "इन सिद्धांतों के खोखले जहाजों" को कानूनी विशेषज्ञता और अभ्यास के वर्षों में अर्जित अनुभव के शब्दों से भरना भी अनिवार्य बनाती है।

6. पर्यावरणीय नैतिकता: प्रकार, महत्व, उदाहरण

पर्यावरण नैतिकता अध्ययन का एक क्षेत्र है जो पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के लिए मनुष्यों के नैतिक दायित्वों को समझने का प्रयास करता है। यह नैतिकता की एक शाखा है जो प्रकृति के आंतरिक मूल्य, सभी जीवित चीजों के अंतर्संबंध और नैतिक सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने की मनुष्यों की जिम्मेदारी को पहचानती है। यह लेख पर्यावरणीय नैतिकता के प्रकार, पर्यावरणीय नैतिकता के सिद्धांतों और कुछ उदाहरणों का पता लगाएगा। इसमें व्यावसायिक निर्णयों पर पर्यावरणीय नैतिकता के प्रभाव, पर्यावरणीय नैतिकता को लागू करने की चुनौतियों और व्यावसायिक संचालन में पर्यावरणीय नैतिकता को शामिल करने के लाभों पर भी चर्चा की जाएगी। अंत में, हम पर्यावरण नैतिकता सेवाओं पर चर्चा करेंगे।

पर्यावरणीय नैतिकता क्या हैं?

पर्यावरण नैतिकता नैतिक विचार की एक शाखा है जो मनुष्यों और उनके प्राकृतिक पर्यावरण के बीच संबंधों पर केंद्रित है। यह पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के लिए हमारे नैतिक दायित्वों को समझने और उनका मूल्यांकन करने का एक समग्र दृष्टिकोण है। पर्यावरणीय नैतिकता मानव और पर्यावरण दोनों के हितों को एक साथ लाने का प्रयास करती है, यह मानते हुए कि दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं और उनका आंतरिक मूल्य है। परिणामवाद, उपयोगितावाद और सदाचार नैतिकता सहित विभिन्न प्रकार के नैतिक सिद्धांत पर्यावरणीय नैतिकता को परिभाषित करते हैं। ये नैतिक सिद्धांत पर्यावरण के प्रति हमारे नैतिक दायित्वों को समझने और इसकी रक्षा के लिए हमें कैसे कार्य करना चाहिए, यह समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। पर्यावरणीय नैतिकता दर्शन, अर्थशास्त्र, पारिस्थितिकी और कानून के क्षेत्रों पर भी आधारित है, जो मानव कार्यों के नैतिक निहितार्थों को समझने और उनका मूल्यांकन करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

पर्यावरणीय नैतिकता के प्रकार

- **उदारवादी विस्तार:** उदारवादी विस्तार एक प्रकार की पर्यावरणीय नैतिकता है जो किसी व्यक्ति के पर्यावरण और उसके संसाधनों के साथ जो चाहे करने के अधिकार पर केंद्रित है। यह अवधारणा इस बात पर भी जोर देती है कि किसी व्यक्ति को अपने मूल्य दूसरों पर नहीं थोपने चाहिए और इसके बजाय दूसरों की पसंद का सम्मान करना चाहिए।
- **पारिस्थितिक विस्तार:** पारिस्थितिक विस्तार एक प्रकार की पर्यावरणीय नैतिकता है जो पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन और स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक पर्यावरण और उसके संसाधनों को संरक्षित करने पर केंद्रित है। यह अवधारणा भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे बनाए रखने के लिए प्रकृति के साथ काम करने वाले मनुष्यों के महत्व पर जोर देती है।
- **संरक्षण नैतिकता:** संरक्षण नैतिकता एक प्रकार की पर्यावरणीय नैतिकता है जो यह सुनिश्चित करके भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करती है कि वर्तमान संसाधन मरम्मत से परे समाप्त या क्षतिग्रस्त न हों। यह अवधारणा व्यक्तियों को प्राकृतिक संसाधनों का जिम्मेदारीपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है ताकि भावी पीढ़ियों के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध रहें।

संक्षेप में, उदारवादी विस्तार किसी व्यक्ति के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के अधिकार को बढ़ावा देता है, पारिस्थितिक विस्तार मनुष्यों को प्रकृति के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है, और संरक्षण नैतिकता प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी उपयोग पर जोर देती है। इनमें से प्रत्येक प्रकार की पर्यावरणीय नैतिकता के अपने फायदे हैं और पर्यावरण की सर्वोत्तम सुरक्षा कैसे की जाए, इस पर विचार करते समय इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए।

पर्यावरणीय नैतिकता का महत्व

- पर्यावरण, प्रजातियों और संसाधनों की सुरक्षा के लिए पर्यावरणीय नैतिकता आवश्यक है।
- यह टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देता है और लोगों को उनके कार्यों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में अधिक जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- यह सभी जीवित चीजों के परस्पर जुड़ाव और उनका सम्मान करने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह हमें दुनिया में अपने स्थान के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है और हम प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण में कैसे योगदान दे सकते हैं।
- पर्यावरणीय नैतिकता प्रकृति के साथ बेहतर संबंध बनाने में मदद करती है, न कि केवल इसके वाद्य मूल्य को, बल्कि इसके आंतरिक मूल्य को पहचानती है।
- यह हमें अपनी तात्कालिक जरूरतों से परे सोचने और हमारे कार्यों के दीर्घकालिक प्रभावों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- यह हमें हमारे पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी सिखाता है, पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं की वकालत करता है जो प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा में मदद करते हैं।
- पर्यावरणीय नैतिकता बेहतर सार्वजनिक नीतियों और कानूनों को भी बढ़ावा देती है, जो यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि हमारे पर्यावरण की उचित देखभाल की जाती है।

पर्यावरणीय नैतिकता के उदाहरण

कार्रवाई में पर्यावरणीय नैतिकता का एक उदाहरण नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत ऊर्जा के वे स्रोत हैं जिनकी प्राकृतिक रूप से पूर्ति होती है और जिनका उपयोग प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट किए बिना किया जा सकता है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उदाहरणों में सौर, पवन और जल विद्युत शामिल हैं। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को एक नैतिक विकल्प के रूप में देखा जाता है, क्योंकि वे प्रदूषण का कारण नहीं बनते हैं या सीमित संसाधनों को ख़त्म नहीं करते हैं।

पर्यावरणीय नैतिकता के सिद्धांत

1. प्रकृति के आंतरिक मूल्य का सम्मान: प्रकृति को दोहन या त्यागने योग्य वस्तु या संसाधन के रूप में नहीं माना जाना चाहिए।
2. प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्रों की परस्पर निर्भरता: मनुष्य प्रकृति और प्राकृतिक प्रणालियों पर निर्भर करता है। हमें पर्यावरण के संरक्षण और सुरक्षा में अपनी भूमिका को पहचानना चाहिए।
3. पारिस्थितिक स्थिरता: हमें संसाधनों का जिम्मेदारीपूर्वक और पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता के संरक्षण को ध्यान में रखते हुए उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

4. मानवीय जिम्मेदारी: हम अपने कार्यों और निर्णयों और पर्यावरण पर उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं।
5. मानव समानता: हमें एक न्यायपूर्ण दुनिया के लिए प्रयास करना चाहिए जहां मनुष्यों, जानवरों और पौधों के अधिकारों और जरूरतों का सम्मान और सुरक्षा की जाए।
6. एहतियाती सिद्धांत: हमें पर्यावरणीय नुकसान के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए, भले ही वैज्ञानिक प्रमाण अनिर्णायक हों।
7. जानने का अधिकार: व्यक्तियों को पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है।
8. भाग लेने का अधिकार: नागरिकों को पर्यावरणीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने का अधिकार है।

पर्यावरणीय नैतिकता और धर्म?

पर्यावरणीय नैतिकता और धर्म आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं, क्योंकि धार्मिक ग्रंथ अक्सर हमें पर्यावरण और अपने साथी मनुष्यों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। कई धर्म, जैसे ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म, प्राकृतिक दुनिया को महत्व देते हैं और इसकी देखभाल करने की हमारी जिम्मेदारी को पहचानते हैं। विशेष रूप से, तीन इब्राहीम धर्म - यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम - पृथ्वी के प्रबंधन में विश्वास साझा करते हैं, उत्पत्ति की पुस्तक में घोषणा की गई है, "और भगवान ने कहा, 'आइए हम मानव जाति को अपनी छवि में, अपनी समानता में बनाएं, इसलिए कि वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं, और भूमि पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर प्रभुता करें।" इससे पता चलता है कि मनुष्य का प्रकृति के साथ एक विशेष संबंध है और उसे इसकी देखभाल और सुरक्षा करनी चाहिए।

हिंदू धर्म में, धर्म नामक एक अवधारणा है जो प्रत्येक व्यक्ति के अपने पर्यावरण के प्रति नैतिक और नैतिक दायित्वों से संबंधित है। इसमें अहिंसा या अहिंसा का विचार शामिल है , जो बताता है कि सभी जीवित चीजों के साथ करुणा और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। बौद्ध धर्म हमें इस बात पर विचार करके प्राकृतिक दुनिया के प्रति नैतिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित करता है कि हमारे कार्यों का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

अंततः, किसी की आस्था की परवाह किए बिना, पर्यावरण को समझना और उसका सम्मान करना इस ग्रह पर सौहार्दपूर्ण ढंग से रहने के लिए महत्वपूर्ण है। पर्यावरणीय नैतिकता के बारे में धार्मिक शिक्षाओं को अपने जीवन में शामिल करके, हम यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि प्रकृति के साथ हमारा रिश्ता आशावादी है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न :

Q1. पर्यावरणीय नैतिकता क्या है?

उत्तर: पर्यावरण नैतिकता नैतिकता की एक शाखा है जो मनुष्यों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच नैतिक संबंधों का अध्ययन करती है। यह सवालों का जवाब देना चाहता है जैसे कि जानवरों के प्रति हमारे क्या

कर्तव्य हैं, हमें पर्यावरण के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए और हम पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ समाज कैसे बना सकते हैं।

Q2. पर्यावरणीय नैतिकता के प्रकार क्या हैं?

उत्तर: पर्यावरणीय नैतिकता के तीन मुख्य प्रकार हैं: उदारवादी विस्तार, पारिस्थितिक विस्तार और संरक्षण नैतिकता। उदारवादी विस्तार इस विचार पर आधारित है कि लोगों को अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का उपयोग करने का अधिकार है। पारिस्थितिक विस्तार मानता है कि किसी भी मानवीय उपयोग या लाभ से परे प्रकृति का अपने आप में मूल्य है। अंत में, संरक्षण नैतिकता मानव उपयोग और प्रकृति के संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखने पर केंद्रित है।

Q3. पर्यावरणीय नैतिकता के उदाहरण क्या हैं?

उत्तर: कार्रवाई में पर्यावरणीय नैतिकता का एक और उदाहरण टिकाऊ कृषि विधियों का उपयोग है। सतत कृषि पद्धतियाँ वे हैं जो यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं कि कृषि में उपयोग की जाने वाली भूमि और संसाधन उत्पादक बने रहें और भविष्य में भी उनका उपयोग जारी रखा जा सके। टिकाऊ कृषि विधियों के उदाहरणों में फसल चक्र, एकीकृत कीट प्रबंधन और संरक्षण जुताई शामिल हैं। अंत में, टिकाऊ वानिकी प्रथाएँ कार्रवाई में पर्यावरणीय नैतिकता का एक उदाहरण हैं। सतत वानिकी प्रथाओं को यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि वनों का प्रबंधन इस तरह से किया जाए जिससे उनकी जैव विविधता और पारिस्थितिक अखंडता बरकरार रहे। टिकाऊ वानिकी प्रथाओं के उदाहरणों में चयनात्मक कटाई, पुनर्वनीकरण और पुराने-विकास वाले जंगलों की सुरक्षा शामिल है।

Q4. पर्यावरणीय नैतिकता का महत्व क्या है?

उत्तर: पर्यावरणीय नैतिकता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक नैतिक रूपरेखा प्रदान करती है कि मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण के साथ कैसे बातचीत करते हैं। यह हमारे कार्यों के ग्रह पर पड़ने वाले प्रभावों पर विचार करने में हमारी मदद करता है और अधिक नैतिक और टिकाऊ निर्णय लेने में हमारा मार्गदर्शन करता है।

Q5. पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय नैतिकता के बीच क्या अंतर है?

उत्तर: पारिस्थितिकी जीवों और उनके पर्यावरण के बीच संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन है, जबकि पर्यावरणीय नैतिकता इस बात पर केंद्रित है कि मनुष्य को प्राकृतिक पर्यावरण के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए। पारिस्थितिकी यह देखती है कि जीव एक-दूसरे के साथ और अपने पर्यावरण के साथ कैसे संपर्क करते हैं। इसके विपरीत, पर्यावरणीय नैतिकता यह देखती है कि मनुष्य को नुकसान को कम करने और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक पर्यावरण के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए।

7. मनोवृत्ति: सामग्री, संरचना और कार्य

मनोवृत्ति क्या है?

- यह एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है जो किसी विशेष इकाई का कुछ हद तक पक्ष या नापसंद के साथ **मूल्यांकन करके व्यक्त की जाती है** ।
- **लोग** जो मूल्यांकन करते हैं वह अत्यंत **प्रतिकूल से लेकर अत्यंत अनुकूल तक** या अधिक मध्यम हो सकते हैं।
- दृष्टिकोण **मिश्रित हो सकते हैं, और एक ही वस्तु के संबंध में** , समय-समय पर भिन्न हो सकते हैं।
  - **वर्गीकरण:**
    यदि कोई **व्यक्ति अपने दृष्टिकोण से अवगत है,** और वे उसके व्यवहार और विश्वासों को प्रभावित करते हैं, तो उसका दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।
  - स्पष्ट दृष्टिकोण **सचेत रूप से बनते हैं।**
  - **अंतर्निहित:**
    एक व्यक्ति **अपनी अंतर्निहित मान्यताओं से अनजान हो सकता है,** हालांकि इनका उसके आचरण और व्यवहार पर कुछ प्रभाव पड़ता है ।
  - अन्तर्निहित मनोवृत्तियाँ **अवचेतन मनोवृत्तियाँ हैं।**

मनोवृत्ति के घटक क्या हैं?

- मनोवृत्ति के **तीन घटक होते हैं।**
  प्रभावशाली (भावनात्मक):
  इसमें **वह भावना शामिल होती है जो वस्तु,** व्यक्ति, मुद्दा या घटना उत्पन्न करती है।
  व्यवहारिक भाग **में वह तरीका शामिल होता है जिससे रवैया** किसी व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है ।
  - **उदाहरण के लिए:** मुझे मकड़ियों से डर लगता है .
    - **व्यवहारिक (संयोजक):**
      में कन्टिव का अर्थ इच्छा-आवेग, इच्छा या संकल्प से जुड़ी **एक मानसिक प्रक्रिया है ।**
    - **उदाहरण के लिए** : मैं मकड़ियों से बचूंगा और अगर कोई दिखे तो चिल्लाऊंगा।
- **संज्ञानात्मक:**
- **कारण, अंतर्ज्ञान और धारणा के** माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया से संबंधित '।

इसमें दृष्टिकोण वस्तु के बारे में किसी **व्यक्ति के विचार और विश्वास शामिल होते हैं।**

उदाहरण के लिए: मेरा मानना है कि मकड़ियाँ खतरनाक होती हैं।

दृष्टिकोण के निर्माण के पीछे कारक क्या हैं?

- **संस्कृति:**
  संस्कृति **व्यक्ति पर सामान्य प्रभाव डालती है।** संस्कृति अपने आप में धर्म, परंपरा, रीति-रिवाज, निषेध, पुरस्कार और प्रतिबंध शामिल हैं।
- समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा संस्कृति लोगों के दृष्टिकोण को आकार देती है।
- संस्कृति व्यक्तिगत विश्वास, दृष्टिकोण और व्यवहार सिखाती है जो किसी के जीवन और समाज में स्वीकार्य होते हैं।
- **उदाहरण के लिए:** भारत में गोमांस खाना आम तौर पर वर्जित माना जाता है लेकिन पश्चिमी देशों में ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं है।
- **परिवार:**
  परिवार किसी व्यक्ति के लिए **सबसे महत्वपूर्ण और निकटतम सामाजिक समूह है।** यह मनोवृत्ति निर्माण की नर्सरी है।
- परिवार व्यवस्था में माता-पिता अधिक प्रभावशाली होते हैं जो बच्चे के दृष्टिकोण की संरचना और निर्माण करते हैं ।
- विस्तारित परिवार और भाई-बहन के रिश्ते, विशेष रूप से, दृष्टिकोण निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **सामाजिक समूहों:**
  परिवार के अलावा कई सामाजिक समूह दृष्टिकोण निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिनमें **मित्र, सहकर्मी, सहकर्मी** आदि शामिल हैं।
- भारत में वोटिंग पैटर्न पर विचार करें. ऐसे लोग हैं जो उम्मीदवारों के भाषण नहीं सुनते, समाचार पत्र नहीं पढ़ते या बहस पर नज़र नहीं रखते। वे दोस्तों, परिवार आदि से बात करते हैं और एक उम्मीदवार को वोट देते हैं। परिवार, मित्र और ऐसे अन्य सामाजिक समूह निश्चित रूप से उम्मीदवार की पसंद को प्रभावित करते हैं।
- **संस्थाएँ:**
  इंसान कभी अकेला नहीं होता. जन्म से लेकर कब्र तक वह किसी न किसी संस्था के प्रभाव में होता है।
- **उदाहरण के लिए:** स्कूल और कॉलेज जैसे शैक्षणिक संस्थान ज्ञान के भंडार के रूप में कार्य करते हैं, किसी व्यक्ति के विश्वासों, मूल्यों को निर्देशित और आकार देते हैं और इस प्रकार दृष्टिकोण बनाते हैं।
- **परिचित:**
  परिचय **सकारात्मक दृष्टिकोण को जन्म देता है।** मनुष्य को आम तौर पर अज्ञात का डर होता है, इसलिए कोई भी परिचित चीज़ उसे शांति का अनुभव करा सकती है।
- परिचितता और शास्त्रीय कंडीशनिंग किसी व्यक्ति की भावनाओं पर कार्य करती है और इसलिए दृष्टिकोण के भावनात्मक घटक को आकार देती है।

मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने की तकनीकें क्या हैं?

- **शास्त्रीय/पावलोवियन कंडीशनिंग:**
  इस तकनीक में, व्यक्ति को **बार-बार सकारात्मक और तटस्थ उत्तेजनाओं के संपर्क में लाया जाता है** और कुछ समय बाद तटस्थ उत्तेजनाओं की प्रतिक्रिया सकारात्मक उत्तेजनाओं की प्रतिक्रिया के समान हो जाती है।

- **वाद्य कंडीशनिंग:**
  - एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें **सकारात्मक व्यवहार को पुरस्कृत किए जाने पर उसकी पुनरावृत्ति की संभावना अधिक होती है,** जबकि नकारात्मक व्यवहार की तुलना में यदि उसे दोहराया जाता है तो सजा होगी और इस प्रकार पुनरावृत्ति की संभावना कम होगी।
    - **उदाहरण:**
      माता-पिता दोस्तों के बीच बच्चे की प्रशंसा करके उसकी सफलता का जश्न मनाएंगे, इससे बच्चे में सफलता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा। इसके अलावा, जब माता-पिता बच्चे को उनकी गलतियों के लिए दंडित करते हैं, तो यह बच्चे को उन गलतियों को दोबारा करने से हतोत्साहित करता है।
  - **सामाजिक अवलोकन:**
    इसमें **हमारे सामाजिक परिवेश** जैसे परिवार, स्कूल, मीडिया और उसकी अभिव्यक्ति से सीखना शामिल है।

मनोवृत्ति के कार्य क्या हैं?

- **ज्ञान समारोह:**
  दृष्टिकोण में एक ज्ञान कार्य होता है, **जो व्यक्तियों को अपने परिवेश को समझने** और अपने विचारों और सोच में सुसंगत रहने में सक्षम बनाता है। अधिकांश दृष्टिकोण कुछ हद तक इस बुनियादी कार्य को पूरा करते हैं।
- **उपयोगितावादी कार्य:**
  मनोवृत्ति व्यक्तियों को उनके वातावरण में व्यक्तियों, समूहों और स्थितियों के साथ बातचीत करते समय **लाभ को अधिकतम करने और नुकसान को कम करने में मदद करती है ।**
  उपयोगितावादी दृष्टिकोण ऐसे व्यवहार की ओर ले जाता है जो किसी के हितों को अनुकूलित करता है।
- **सामाजिक भूमिका निभाना:**
  दृष्टिकोण एक सामाजिक भूमिका निभाने में मदद करते हैं, किसी व्यक्ति की आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक संपर्क में मदद करते हैं।
- किसी दिए गए दृष्टिकोण के सेट की सदस्यता लेना किसी के मूल मूल्यों को व्यक्त करने और उसकी पहचान स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ समूहों के साथ उसकी पहचान का संकेत देता है।

दृष्टिकोण की इस सामाजिक भूमिका को सामाजिक पहचान कार्य के रूप में जाना जाता है, यह किसी व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान स्थापित करने की इच्छा को रेखांकित करता है।

किसी व्यक्ति का आत्म-सम्मान बनाए रखें:

दृष्टिकोण किसी व्यक्ति के आंतरिक मानसिक संघर्ष को संभालने के लिए रक्षा तंत्र के रूप में काम कर सकता है जो व्यक्तिगत मानस के भीतर तनाव को दर्शाता है।

- रक्षा **तंत्र किसी व्यक्ति के वास्तविक उद्देश्यों को स्वयं से छिपाते हैं या मनोवैज्ञानिक रूप** से उसे शत्रुतापूर्ण या धमकी देने वाले समूहों से अलग करते हैं।
- मनोवृत्ति अन्य प्रकार से भी आत्मसम्मान बनाये रखती है। कई चीज़ों के प्रति एक व्यक्ति का दृष्टिकोण उसके दृष्टिकोण से प्रभावित होता है कि वे उसके आत्म-मूल्यांकन को कैसे प्रभावित करते हैं।

  उदाहरण के लिए: अपने मित्रों और सामाजिक परिचितों के प्रति हमारा दृष्टिकोण इस बात पर निर्भर करता है कि क्या हम ऐसी संगति को अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने या कम करने के रूप में देखते हैं।

  मनोवृत्ति मूल्य प्रणाली से किस प्रकार संबंधित है?

- एक मूल्य प्रणाली उस **क्रम और प्राथमिकता को संदर्भित करती है जो एक व्यक्ति या समाज** नैतिक और वैचारिक मूल्यों को देता है।
- हालाँकि दो व्यक्ति या समूह समान मूल्यों का एक सेट साझा कर सकते हैं, लेकिन वे उन मूल्यों को समान महत्व या प्राथमिकता नहीं दे सकते हैं।

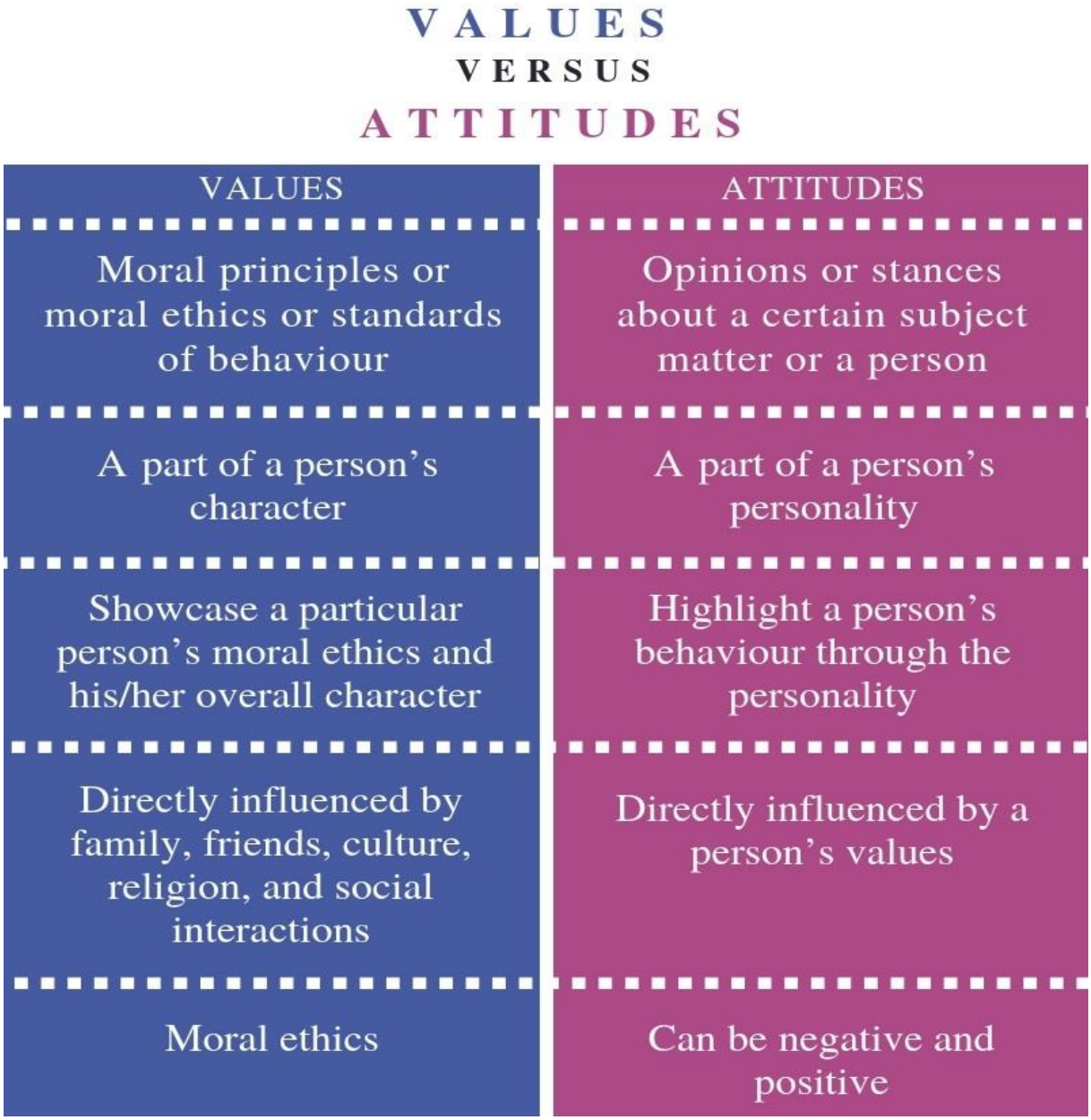

मनोवृत्ति और व्यवहार में क्या अंतर है?

नज़रिया	व्यवहार
▪ मनोवृत्ति को किसी व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में	▪ व्यवहार का तात्पर्य किसी व्यक्ति या समूह द्वारा अन्य व्यक्तियों के प्रति किये जाने वाले कार्यों, चाल, आचरण या कार्यों से है।

उसके सोचने या महसूस करने के तरीके के लिए जिम्मेदार होती है। ▪ के दौरान प्राप्त अनुभवों और अवलोकनों पर आधारित होता है। ▪ मनोवृत्ति एक व्यक्ति के आंतरिक विचार और भावनाएँ हैं। ▪ किसी व्यक्ति के सोचने या महसूस करने का तरीका उसके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। ▪ मनोवृत्ति को हम चीजों को देखने के तरीके से परिभाषित करते हैं जबकि व्यवहार सामाजिक मानदंडों द्वारा शासित होता है।	▪ दूसरी ओर, व्यक्ति का व्यवहार परिस्थिति पर निर्भर करता है। ▪ इसके विपरीत, व्यवहार व्यक्ति के दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। ▪ इसके विपरीत व्यक्ति का आचरण उसके आचरण से झलकता है। ▪ दृष्टिकोण एक मानवीय गुण है लेकिन व्यवहार एक जन्मजात गुण है।

व्यवहार को कैसे प्रभावित करती है ?

सकारात्मक रवैया:

एक व्यक्ति जिसका **काम और सहकर्मियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है** (जैसे संतुष्टि, मित्रता, आदि) वह अपने आसपास के लोगों को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

उदाहरण: अच्छे दृष्टिकोण वाले लोग **सक्रिय और उत्पादक होते हैं** और अपने आस-पास के लोगों के मूड को बेहतर बनाने के लिए वह सब कुछ करते हैं जो वे कर सकते हैं।

नकारात्मक दृष्टिकोण:

एक व्यक्ति **जो नकारात्मक दृष्टिकोण** (जैसे असंतोष, ऊब, आदि) प्रदर्शित करता है, उसी के अनुसार व्यवहार करेगा।

उदाहरण: काम के प्रति इस प्रकार के दृष्टिकोण वाले लोग अपने आस-पास के लोगों को भी प्रभावित कर सकते हैं और इस तरह से व्यवहार कर सकते हैं जिससे दक्षता और प्रभावशीलता कम हो जाती है।

स्वार्थी रवैया:

यह **किसी व्यक्ति के कार्यों को स्वार्थी तरीके से निर्देशित करेगा** ।

उदाहरण: निर्णय लेने के लिए अपने स्वार्थ को मानक बनाना।

तर्क या तर्कसंगत दृष्टिकोण:

यह तर्कसंगत व्यवहार विकसित करता है ।

उदाहरण : एक तर्कसंगत व्यक्ति अंधविश्वासी कार्य नहीं करेगा और हमेशा किसी भी कार्य के पीछे तर्कसंगतता खोजने का प्रयास करेगा।

अहंकारी रवैया:

इसका **परिणाम नकारात्मक रवैया और व्यवहार होगा।**

उदाहरण : बड़े व्यक्ति अपने बड़े होने के अहंकार को संतुष्ट करने के लिए अपने छोटे भाई-बहनों को नियंत्रित करते हैं, भले ही वे गलत हों।

मूल्यों और विश्वासों पर आधारित दृष्टिकोण:

यह मूल्यों के अनुसार कार्य करेगा।

उदाहरण: भारत में **बड़ों के पैर छूना** उन्हें सम्मान देने के दृष्टिकोण से निर्देशित होता है।

नैतिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से हम क्या समझते हैं?

नैतिक दृष्टिकोण: नैतिकता का तात्पर्य

धार्मिकता से है। नैतिक दृष्टिकोण **धार्मिक आचरण से संबंधित दृष्टिकोण हैं।** इस प्रकार, नैतिक दृष्टिकोण एक तटस्थ अवधारणा नहीं है। यह धार्मिकता या सदाचार के प्रति पूर्वाग्रह है। कुछ नैतिक दृष्टिकोण हैं:

- भलाई
- आदर
- प्यार और करुणा
- निस्सवार्थता
- समानुभूति

राजनीतिक दृष्टिकोण:

राजनीतिक दृष्टिकोण एक ऐसा **समूह है जिसमें एक व्यक्ति किसी राजनीतिक समस्या का सामना करता है** और जो उस समस्या के प्रति उसके आचरण की दिशा निर्धारित करता है।

इसका **नियमों और विनियमों, रीति-रिवाजों, परंपराओं, मान्यताओं का एक समूह भी है** जो उस देश की राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करता है।

कुल योग सामाजिक जीवन के राजनीतिक पहलू पर उस व्यक्ति के दृष्टिकोण को प्रकट करता है। वे नागरिक, सरकार और राजनीतिक व्यवस्था के कार्यों के बीच संबंध को परिभाषित करते हैं।

उदाहरण:

चुनावों में मतदाताओं का मतदान व्यवहार व्यक्तिगत और राजनीतिक दलों द्वारा अपनाए जाने वाले राजनीतिक दृष्टिकोण से तय होता है

जब भारत को आजादी मिली तब सरकारी नीतियां समाजवादी प्रकृति की थीं लेकिन 1990 के दशक में **एलपीजी युग के बाद** भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को खोल दिया और बाजार समर्थक नीति का पालन किया।

सामाजिक प्रभाव और अनुनय क्या है?

- **सामाजिक प्रभाव:**

यह एक ऐसा **गुण है जो किसी व्यक्ति के व्यवहार , विचारों** , भावनाओं और दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सकता है जो समाज में किसी अन्य व्यक्ति के साथ बातचीत के परिणामस्वरूप होता है।

अनुनय:

इसे **संचारी गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया गया है जिनकी मध्यस्थता की जाती है** । यह किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण, विश्वास या व्यवहार को बदलने या सुदृढ़ करने की प्रक्रिया है ।

यह **जानबूझकर या अनजाने में हो सकता है** , जिस तरह से बदला हुआ व्यक्ति प्रभावशाली व्यक्ति के संबंध में खुद को समझता है।

यह **अनुरूपता, शक्ति और अधिकार से भिन्न है।** ये संचार के मूलभूत कार्य हैं।

अनुनय का सिद्धांत क्या है?

के बारे में:

कई **व्यावसायिक और प्रशासनिक स्थितियों में, लोगों को उनके दृष्टिकोण, विश्वास और आदतों को बदलने** के लिए प्रेरित करके दृष्टिकोण का निर्माण किया जाता है ।

यह लोगों को उनके विश्वासों, दृष्टिकोणों और आदतों को बदलने के लिए **प्रेरित करने के आदर्श साधनों का वर्णन करता है ।**

दृष्टिकोण के विस्तार संभावना सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है ।

उदाहरण के लिए: सरकारें **ग्रामीण क्षेत्रों में अभिभावकों को अपने बच्चों को प्राथमिक विद्यालयों में दाखिला दिलाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास कर सकती हैं।**

लोगों को मनाने की सफलता निर्धारित करने वाले कारक:

श्रोता विशेषताएँ:

किसी भी वस्तु पर लोगों का नजरिया बदलने के लिए उन्हें वह जानकारी मुहैया करानी होगी जो शायद उनके पास नहीं है ।

यह **दर्शक ही हैं जिन्हें जानकारी प्राप्त करनी है और उसे संसाधित करना है**

ऐसा करने की उनकी क्षमता उनकी बुद्धि पर निर्भर करती है।

उच्च बुद्धि वाले लोगों को एकतरफा संदेशों से प्रभावित होने की संभावना नहीं है।

पारंपरिक दृष्टिकोण यह है कि उच्च आत्म-सम्मान वाले लोगों को नए दृष्टिकोण स्वीकार करने के लिए राजी करना कठिन है।

लेकिन आत्म-सम्मान और किसी के दृष्टिकोण को बदलने की इच्छा के बीच का संबंध टेढ़ा-मेढ़ा प्रतीत होता है।

इसका मतलब **यह है कि औसत स्तर के आत्म-सम्मान वाले व्यक्ति** उच्च आत्म-सम्मान या कम आत्म-सम्मान वाले लोगों की तुलना में अपने दृष्टिकोण को बदलने के लिए अधिक तैयार होते हैं।

लक्षित दर्शकों की मनःस्थिति और मनोदशा भी उनके संदेश पर प्रतिक्रिया देने के तरीके को प्रभावित करती है।

स्रोत विशेषताएँ:

ये उस व्यक्ति को संदर्भित करते हैं जो संदेश पहुंचा रहा है।

वे चर जो **यह निर्धारित करते हैं कि कोई व्यक्ति संदेश देने में कितना प्रभावी होगा, उसकी विशेषज्ञता है,** दर्शकों के लिए विश्वसनीयता और आकर्षण।

दर्शकों को **आश्वस्त होने के लिए, आश्वस्त करना होगा कि संदेश आधिकारिक और प्रामाणिक है।**

संज्ञानात्मक मार्ग: दृष्टिकोण

को बदलने का प्रयास करने वाला संदेश **किसी व्यक्ति की बुद्धि या तार्किक क्षमता को आकर्षित कर सकता है।**

यह अपील या तो **केंद्रीय मार्ग से या परिधीय मार्ग से हो सकती है।**

केंद्रीय मार्ग:

अनुनय के केंद्रीय मार्ग में, **व्यक्ति को डेटा प्रस्तुत किया जाता है और डेटा का मूल्यांकन करने** और दृष्टिकोण बदलने वाले निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए प्रेरित किया जाता है।

परिधीय मार्ग:

दृष्टिकोण परिवर्तन के परिधीय मार्ग में, **व्यक्ति को सामग्री को नहीं बल्कि स्रोत को देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।** यह आमतौर पर आधुनिक विज्ञापनों में देखा जाता है जिनमें मशहूर हस्तियों को दिखाया जाता है।

उदाहरण: उदाहरण के लिए, किसी लोकप्रिय एथलीट से एथलेटिक जूतों का विज्ञापन करवाना युवा वयस्कों को जूते खरीदने के लिए प्रोत्साहित करने का एक सामान्य तरीका है।

मनोवृत्ति से सम्बंधित कुछ उद्धरण

- सही मानसिक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति को उसके लक्ष्य को प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता, गलत मानसिक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति की दुनिया में कोई भी मदद नहीं कर सकता। - **थॉमस जेफरसन**
- बारिश के दौरान सभी पक्षियों को आश्रय मिल जाता है। लेकिन ईगल बादलों के ऊपर उड़कर बारिश से बच जाता है। समस्याएँ आम हैं, लेकिन नजरिया फर्क पैदा करता है। - **एपीजे अब्दुल कलाम**
- रवैये की कमज़ोरी चरित्र की कमज़ोरी बन जाती है। - **अल्बर्ट आइंस्टीन.**
- आशावाद वह विश्वास है जो उपलब्धि की ओर ले जाता है, आशा के बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता। **-हेलेन केलर**

8.कॉर्पोरेट या व्यावसायिक नैतिकता -

अर्थ, लाभ और तत्त्व

एक व्यक्ति के दृष्टिकोण से, एक संगठन का अस्तित्व लाभ कमाने के लिए होता है। हालाँकि, अगर हम इसे सामाजिक रूप से देखें, तो एक संगठन मनुष्यों को वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति करने के लिए मौजूद है। एक संगठन यह उम्मीद कर सकता है कि उसके व्यक्तिगत लक्ष्यों या उद्देश्यों को सामाजिक उद्देश्यों के साथ टकराव का सामना नहीं करना पड़े। हालाँकि, एक व्यावसायिक संगठन मनुष्यों द्वारा चलाया जाता है, और प्रत्येक मनुष्य का जीवन के प्रति एक अलग दृष्टिकोण होता है; इसलिए, यह आवश्यक नहीं है कि उनके निर्णय और कार्य समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप हों। उदाहरण के लिए, एक संगठन मुनाफे और बाजार में स्थिति के मामले में ऊंचाइयां हासिल कर सकता है लेकिन अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों में खराब प्रदर्शन कर सकता है। यह हमें एक प्रश्न पर लाता है कि समाज के दृष्टिकोण से किसी व्यवसाय के लिए क्या सही है और क्या गलत है। इसी का उत्तर देने के लिए नैतिकता की अवधारणा अस्तित्व में आई क्योंकि यह सही और गलत तथा सामाजिक और व्यक्तिगत अच्छाई के बीच संबंध स्थापित करती है।

नैतिकता का अर्थ

एथिक्स शब्द ग्रीक शब्द 'एथोस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है समाज में प्रचलित किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के आदर्श, मानदंड, नैतिकता या चरित्र। इसलिए, नैतिकता को नैतिक व्यवहार के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है और यह परिभाषित करना कि किसी व्यक्ति के व्यवहार में क्या सही है और क्या गलत है, उन्हें एक विशिष्ट क्षेत्र में समाज द्वारा व्यक्त और स्थापित नैतिक आचरण के मानकों के आधार पर आंका जाता है। गतिविधि का. नैतिकता को समाज द्वारा मनुष्यों के कार्यों से जुड़े नैतिक मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है, और उन्हें कोड या नियंत्रण प्रणाली के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि वे मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। आमतौर पर, नैतिक मानक कानूनों में बनाए जाते हैं; हालाँकि, नैतिक व्यवहार इससे कहीं अधिक है और सरकारी नियमों और कानूनों से परे है। इसका मतलब है कि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को नैतिक सिद्धांतों का पालन करना होगा और नैतिक रूप से व्यवहार करना होगा। प्रत्येक पेशे का अपना नैतिक व्यवहार या नैतिकता होती है। उदाहरण के लिए, कानूनी नैतिकता, चिकित्सा नैतिकता, व्यावसायिक नैतिकता, आदि। आज हम व्यावसायिक नैतिकता पर चर्चा करेंगे।

व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ

व्यावसायिक नैतिकता उन सिद्धांतों या मानकों के समूह को संदर्भित करती है जो व्यवसाय के नैतिक आचरण को नियंत्रित करते हैं। इसका संबंध किसी संगठन की तकनीकों, प्रथाओं और उद्देश्यों के बीच संबंध से है। व्यावसायिक नैतिकता कहती है कि व्यवसायों को स्वयं और समाज के प्रति ईमानदार होना होगा । व्यावसायिक नैतिकता के कुछ उदाहरण हैं श्रमिकों के साथ उचित व्यवहार करना, ग्राहकों से उचित मूल्य वसूलना, अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करना, उचित लाभ कमाना, वस्तुओं का सटीक और उचित वजन का उपयोग करना आदि। हालांकि, अनैतिक व्यवहार में लोक सेवकों को लाभ प्राप्त करने

के लिए भ्रष्ट करना शामिल है। भ्रामक विज्ञापनों के माध्यम से ग्राहकों को धोखा देना, अपने खातों और वित्तीय विवरणों में व्यवसाय की गलत छवि प्रदान करना, व्यक्तिगत उपयोग के लिए व्यवसाय की संपत्तियों और परिसंपत्तियों का उपयोग करना, प्रतिस्पर्धियों को व्यापार रहस्य प्रकट करना आदि। एक व्यवसायी को नैतिक माना जाता है यदि वह ईमानदारी से कार्य करता है और समाज के हितों की सेवा करता है। एक नैतिक व्यवसाय एक अच्छा व्यवसाय है क्योंकि यह समाज के हितों के लिए काम करता है। नैतिक व्यवसायों की जनता की नज़र में अच्छी छवि होती है, क्योंकि लोगों को व्यवसाय पर भरोसा होता है, जो अधिक सफलता की ओर ले जाता है। नैतिक गतिविधि न केवल समाज के लिए, बल्कि व्यवसायियों और व्यवसायों के लिए भी अच्छी है क्योंकि यह उन्हें अपने जीवन की गुणवत्ता और उनके द्वारा किए जाने वाले काम को बढ़ाने में मदद करती है।

व्यावसायिक नैतिकता के लाभ

- **अधिक निवेशकों को व्यवसाय की ओर आकर्षित करता है:** विकास और धन जुटाने के लिए निवेशक किसी भी व्यवसाय का एक बड़ा हिस्सा होते हैं। यदि किसी संगठन के निवेशकों को यह एहसास होता है कि जिस कंपनी के साथ वे काम कर रहे हैं वह नैतिक रूप से काम कर रही है और व्यवसाय में उच्च मनोबल को प्राथमिकता देती है, तो वे यह जानकर सुरक्षित महसूस करेंगे कि उनके पैसे का उपयोग जिम्मेदारी से और अच्छे उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है। साथ ही, वे यह जानकर सहज महसूस कर सकते हैं कि वे परोक्ष रूप से किसी अनैतिक कार्य में प्रवेश नहीं कर रहे हैं। इसके अलावा, मजबूत नैतिकता वाली कंपनियां निवेशकों का अधिक ध्यान आकर्षित करती हैं।

- **ग्राहकों के संदर्भ में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करें:** निवेशकों की तरह, ग्राहक भी व्यवसाय का एक बड़ा हिस्सा हैं क्योंकि वे किसी कंपनी की बिक्री और राजस्व का कारण हैं। जब कोई संगठन नैतिक रूप से व्यवहार करता है, तो वह ग्राहकों की वफादारी हासिल कर सकता है और उन्हें अपने सामान और सेवाओं की ओर आकर्षित कर सकता है। यह अंततः व्यवसाय को उसके लाभ कमाने के उद्देश्य को पूरा करने में मदद करता है।
- **कंपनी की प्रतिष्ठा बढ़ाएँ:** नैतिक रूप से व्यवहार करने वाली एक कंपनी जनता की नज़र में एक सकारात्मक छवि बना सकती है, जो व्यवसाय को अपने मौजूदा ग्राहकों को यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है कि वे अपनी मेहनत की कमाई एक नैतिक व्यवसाय पर खर्च कर रहे हैं और नए ला रहे हैं। ग्राहक. इसके अलावा, आज की दुनिया अत्यधिक सामाजिक है, और असंतुष्ट ग्राहक व्यवसाय के नकारात्मक अनुभव और अनैतिक व्यवहार के बारे में आसानी से और जल्दी से समीक्षा दे सकते हैं, जो कंपनी और उसके विकास के लिए बुरा हो सकता है।
- **मजबूत सहयोग:** व्यावसायिक नैतिकता पर एक साथ काम करने वाली कंपनी की टीम के सदस्य या कर्मचारी एक-दूसरे के प्रति सम्मान रखते हैं, जो उन्हें प्रभावी ढंग से एक साथ काम करने के लिए प्रेरित करता है। नैतिकता का अभ्यास न केवल एक अच्छा कार्य वातावरण बनाता है, बल्कि सदस्यों को सहयोग करने और उत्पादकता लाने में भी मदद करता है।
- **मुकदमों से बचें:** नैतिक व्यवहार करना किसी संगठन के लिए महंगा हो सकता है, लेकिन अनैतिक व्यवहार अधिक महंगा हो सकता है क्योंकि अनैतिक प्रथाओं में शामिल संगठन को मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है और भारी जुर्माना देना होगा।

व्यावसायिक नैतिकता के तत्व

- **शीर्ष प्रबंधन प्रतिबद्धता:** किसी संगठन का शीर्ष प्रबंधन व्यावसायिक नैतिकता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे पूरे संगठन को नैतिक आचरण की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं । किसी संगठन के सदस्यों के बीच बेहतर परिणाम प्राप्त करने और नैतिक व्यवहार विकसित करने के लिए, सीईओ और अन्य शीर्ष स्तर के प्रबंधकों को नैतिक आचरण के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है। नैतिक आचार संहिता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता कर्मचारियों के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करेगी और उन्हें स्वयं संहिताओं का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। उन्हें फर्म का विकास जारी रखने और उसके मूल्यों को बनाए रखने के लिए कर्मचारियों का नेतृत्व करना चाहिए।
- **'कोड' का प्रकाशन:** प्रभावी नैतिकता कार्यक्रम वाली कंपनियां पूरे संगठन के लिए आचरण के सिद्धांतों को लिखित रूप में परिभाषित करती हैं। आचरण के सिद्धांतों के इस लिखित दस्तावेज़ को "कोड" के रूप में जाना जाता है। आचार संहिता या आचार संहिता विभिन्न क्षेत्रों को कवर करती है, जैसे उत्पाद की गुणवत्ता, उत्पाद सुरक्षा, मौलिक ईमानदारी, कानूनों का पालन, वित्तीय रिपोर्टिंग, विपणन प्रथाएं, रोजगार प्रथाएं, कार्यस्थल पर स्वास्थ्य और सुरक्षा आदि। ये सिद्धांत या मानक किसी संगठन का मार्गदर्शन करते हैं और इसके कार्य.

- **अनुपालन तंत्र की स्थापना:** आचार संहिता का प्रकाशन तब तक पर्याप्त नहीं है जब तक कि संगठन यह सुनिश्चित करने के लिए एक तंत्र स्थापित नहीं करता है कि कर्मचारियों द्वारा उनका पालन किया जा रहा है और फर्म के कार्य इन मानकों का अनुपालन करते हैं। उदाहरण के लिए, भर्ती करते समय आवेदक के मूल्यों और नैतिकता को सुनिश्चित करना, अनैतिक व्यवहार की किसी भी घटना की रिपोर्ट करने के लिए कर्मचारियों के लिए एक संचार प्रणाली बनाना आदि।
- **सभी स्तरों पर कर्मचारियों को शामिल करना:** किसी संगठन के कर्मचारी व्यवसाय के विभिन्न स्तरों पर नैतिक नीतियों के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे नैतिक व्यवसाय का विचार वास्तविक हो जाता है। इसलिए, संगठनों को नैतिकता कार्यक्रमों में कर्मचारियों को शामिल करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, एक संगठन फर्म की आवश्यक नैतिक नीतियों पर चर्चा करने और इन नीतियों के प्रति कर्मचारियों के दृष्टिकोण का मूल्यांकन करने के लिए कर्मचारियों का एक छोटा समूह बना सकता है।
- **परिणामों को मापना: किसी नैतिकता** कार्यक्रम के परिणामों को पूर्ण सटीकता के साथ मापना आसान नहीं है। इसलिए, नैतिकता कार्यक्रम लागू करने वाले संगठन अंतिम परिणामों को सत्यापित और ऑडिट कर सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कर्मचारी नैतिक मानकों के अनुसार काम करें। एक बार ऑडिटिंग पूरी हो जाने के बाद, शीर्ष स्तर का प्रबंधन और फर्म के अन्य कर्मचारी अपनी आगे की कार्रवाई के लिए अंतिम परिणामों पर चर्चा कर सकते हैं।

9. भावनात्मक बुद्धिमत्ता

एथिक्स की तैयारी के लिए , उम्मीदवारों को **भावनात्मक बुद्धिमत्ता** के बारे में जानना होगा। यह आईएएस परीक्षा और अर्थव्यवस्था पाठ्यक्रम (जीएस-IV) के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों का एक विचार देता है। यूपीएससी परीक्षा में नैतिक दृष्टिकोण से **भावनात्मक बुद्धिमत्ता शब्द महत्वपूर्ण हैं।** आईएएस उम्मीदवारों को उनके अर्थ और अनुप्रयोग को अच्छी तरह से समझना चाहिए, क्योंकि यूपीएससी प्रारंभिक और यूपीएससी मुख्य परीक्षा दोनों में आईएएस पाठ्यक्रम के इस स्थिर भाग से प्रश्न पूछे जा सकते हैं। यहां तक कि ये विषय करेंट अफेयर्स से भी काफी जुड़े हुए हैं। उनसे पूछा गया लगभग हर सवाल समसामयिक घटनाओं से जुड़ा होता है. इसलिए, मानक पाठ्यपुस्तकों के अलावा, आपको इन अनुभागों के लिए समाचार पत्रों और समाचार विश्लेषणों पर भी भरोसा करना चाहिए।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) पर यह अध्याय हमारे स्वयं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। सामान्य तौर पर, यह **आत्म- व्यवहार का अध्ययन करने में मदद करता है** लेकिन विशेष रूप से, यह **दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में मदद करता है** । यह अध्याय आपकी सहायता करता है:

- भावनाओं का प्रबंधन
- नैतिक कार्य करना
- हम अपनी नकारात्मक भावनाओं को कैसे नियंत्रित करें और नकारात्मक भावना का रचनात्मक उपयोग कैसे करें?
- सामाजिक जागरूकता लाने के लिए स्वयं को प्रेरित करने में मदद करता है
- विवादों का समाधान

इंटेलिजेंस क्या है?

- बुद्धिमत्ता ज्ञान और कौशल प्राप्त करने और लागू करने की क्षमता है।
- बुद्धिमत्ता दुनिया को समझने की क्षमता और उसकी चुनौतियों से निपटने की संसाधनशीलता है।
- बुद्धिमत्ता व्यक्ति की क्षमता को संदर्भित करती है:
    - जटिल विचारों को समझना
    - पर्यावरण के प्रति प्रभावी ढंग से अनुकूलन करना
    - पिछले अनुभवों से सीखना
    - तर्क के विभिन्न रूपों में संलग्न होना
    - सोच-विचारकर बाधा को दूर करना

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) क्या है?

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता को हमारी अपनी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं को समझने और किसी की सोच और कार्यों को निर्देशित करने के लिए रचनात्मक रूप से उपयोग करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विभिन्न विद्वानों द्वारा अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया गया है। पीटर सलोवी और जॉन मेयर (1990 के दशक) के अनुसार इसे "अपनी और अन्य लोगों की भावनाओं पर नज़र रखने, विभिन्न भावनाओं के बीच भेदभाव करने और उन्हें उचित रूप से लेबल करने, और सोच और व्यवहार को निर्देशित करने के लिए भावनात्मक जानकारी का उपयोग करने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया गया है।
- इस परिभाषा को गोलेमैन ने अपनाया और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को इसमें वर्गीकृत किया:
    - आत्म-जागरूकता,
    - भावनाओं का प्रबंधन,
    - स्वयं को प्रेरित करना,
    - समानुभूति,
    - रिश्तों को संभालना.
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता सभी प्रकार की स्थितियों में सफलता के लिए आवश्यक कई प्रकार की बुद्धिमत्ता में से एक है।

- भावनाओं की अभिव्यक्ति स्वयं या दूसरों के लिए भावनाओं के नियमन पर निर्भर करती है। जो व्यक्ति स्वयं या दूसरों के लिए भावनाओं के बारे में जागरूकता रखने और तदनुसार नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं उन्हें भावनात्मक रूप से बुद्धिमान कहा जाता है। जो व्यक्ति ऐसा करने में असफल होते हैं, वे विचलित हो जाते हैं और इस प्रकार भावनाओं का ह्रास विकसित होता है, जिसके परिणामस्वरूप क्रोध, निराशा और संघर्ष होता है।

उदाहरण:

- जब मैं परीक्षा में प्रथम रैंक प्राप्त करता हूं, तो मुझे खुशी और खुशी महसूस होती है।
- जब कोई आपको परेशान करता है तो आपको निराशा और गुस्सा आता है
- जब आपका बटुआ और पैसा खो जाएगा तो आपका मन उदास हो जाएगा
- जब आप कोई डरावनी फिल्म देख रहे हों या आधी रात को घूम रहे हों, तो आपको डर लग सकता है
- जब आप साक्षात्कार कक्ष में होते हैं, तो आप उत्साह और घबराहट से ग्रस्त हो सकते हैं

परिद्रश्य 1:

आपका विभाग कुछ चुनौतियों का सामना कर रहा है. बहुत अधिक राजनीति, आलोचना और बहसें हो रही हैं। हाल ही में एक का गुस्सा फूट पड़ा। आपकी टीम के सदस्य. ईआई का उपयोग करके, आप विनाशकारी भावनाओं को प्रबंधित कर सकते हैं और इस स्थिति को प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं।

परिदृश्य 2:

सोमवार को पारिवारिक समस्याओं के कारण मेरा मूड ख़राब था। हालाँकि, मैंने ऑफिस में खुद को प्रेरित और खुश रखा ताकि मेरे काम में कोई बाधा न आए, न ही काम करने की जगह।

परिदृश्य 3:

हाल ही में हुई मीटिंग में जिन मुद्दों पर चर्चा हुई उससे ऑफिस में सभी खुश नहीं थे. हालाँकि हमारे प्रबंधक ने सभी को प्रेरित और उत्साहित रखा, इससे सभी की कार्यक्षमता और मनोदशा में वृद्धि हुई।

औद्योगिक क्रांति के बाद , समाज में व्यक्तिगत स्तर, पारिवारिक स्तर, सामाजिक स्तर पर भारी बदलाव आया। व्यक्तिगत रूप से **भौतिक सुख-सुविधाओं का नेतृत्व करने वाले** और मानवीय संबंधों को कम से कम महत्व देने वाले मानवों के कारण **संयुक्त परिवार** प्रणाली टूट गई और समाज अधिक **स्वार्थी हो गया** ।

- **पूंजीवादी समाज ने** कर्मचारियों के बीच अनिश्चितता और असुरक्षा का माहौल बनाया है जहां वह अक्षमता बर्दाश्त नहीं कर सकता। इस प्रक्रिया में जीवन अधिक भौतिकवादी हो गया। अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम प्रदर्शन करने के लिए कोई आंतरिक प्रेरणा नहीं है।
- नेतृत्व अपने अनुयायियों के बीच अच्छे दृष्टिकोण विकसित करने में विफल रहा जहां स्वयं ऐसे दृष्टिकोण नहीं हैं। लंबे समय में, यदि संगठन इन मुद्दों का समाधान नहीं करते हैं तो वे अक्षम हो जाते हैं।
- यदि व्यक्तिगत स्तर पर मन की शांति नहीं है तो इसका सीधा असर संगठनात्मक स्तर पर उसके प्रदर्शन पर पड़ेगा जिससे संगठन को नुकसान होगा।
- फिर, उन्हें एहसास हुआ कि जनता, कर्मचारियों और अन्य लोगों को प्रेरित करने और उनकी भावनाओं को समझने की जरूरत है और उस जानकारी का उपयोग करके किसी संगठन की दक्षता में सुधार के लिए मार्गदर्शन किया जा सकता है। इस तरह भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा लोकप्रिय हुई और यह हमारी भावनाओं का प्रभावी प्रबंधन और उनका कुशलतापूर्वक उपयोग करना है।

भावना क्या है ?

- **भावना** शब्द को अक्सर ' **भावना' और 'मूड** ' शब्दों का पर्याय माना जाता है। उदाहरण के लिए, ख़ुशी, दुःख, आशा, प्रेम, उत्साह, क्रोध, घृणा और ऐसी कई भावनाएँ हम सभी दिन के दौरान अनुभव करते हैं।
- **भावना** भावना के सुख या दर्द के आयाम को दर्शाती है, जिसमें आमतौर पर शारीरिक कार्य शामिल होते हैं। अनुभूति वह नाम है जो हम भावनाओं को देते हैं और भावनाओं में विभिन्न भावनाएँ मिश्रित हो सकती हैं।
- **मनोदशा** लंबी अवधि की एक भावनात्मक स्थिति है लेकिन भावना की तुलना में कम तीव्रता की होती है।
- ये दोनों शब्द भावना की अवधारणा से अधिक संकीर्ण हैं।
- **प्रभाव** एक व्यापक शब्द है, जिसका उपयोग आम तौर पर भावना या भावना के अनुभव का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

भावनाएँ तर्कहीन हैं. भावनाएँ अनुत्पादक होती हैं। भावनाएँ व्यक्तिपरक होती हैं। भावनाओं को कभी भी प्रशासनिक
चाहिए।

भावनाएँ:

- भावनाएँ उत्तेजना, व्यक्तिपरक भावना और संज्ञानात्मक व्याख्या का जटिल पैटर्न हैं।
- भावनाएँ, जैसे ही हम उन्हें अनुभव करते हैं, हमें आंतरिक रूप से प्रेरित करती हैं।

- इस प्रक्रिया में शारीरिक के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएँ भी शामिल होती हैं
- भावना एक व्यक्तिपरक भावना है और भावनाओं का अनुभव हर व्यक्ति में अलग-अलग होता है।
- दस बुनियादी भावनाएँ खुशी, आश्चर्य, क्रोध, घृणा, अवमानना, भय, शर्म, अपराध, रुचि और उत्तेजना हैं जिनके संयोजन से अन्य भावनात्मक मिश्रण उत्पन्न होते हैं। यह देखा गया है कि हर जगह कम से कम छह भावनाओं का अनुभव और पहचान की जाती है। ये हैं: क्रोध, घृणा, भय, खुशी, दुख और आश्चर्य।
- सकारात्मक-नकारात्मक भावना संयोजनों में से कुछ हैं खुशी-दुख, स्वीकृति-घृणा, भय-क्रोध और आश्चर्य-प्रत्याशा।
- भावनाएँ उनकी तीव्रता (उच्च, निम्न) और गुणवत्ता (खुशी, दुःख, भय) में भिन्न होती हैं।
- व्यक्तिपरक कारक और स्थितिजन्य संदर्भ भावनाओं के अनुभव को प्रभावित करते हैं। ये कारक लिंग, व्यक्तित्व और कुछ प्रकार के मनोविकृति हैं।
- साक्ष्य इंगित करता है कि:
    - महिलाएं पुरुषों की तुलना में क्रोध को छोड़कर सभी भावनाओं का अधिक तीव्रता से अनुभव करती हैं।
    - पुरुषों को क्रोध की उच्च तीव्रता और आवृत्ति का अनुभव होने की संभावना होती है।
- इस लिंग अंतर को पुरुषों (प्रतिस्पर्धा) और महिलाओं (संबद्धता और देखभाल) से जुड़ी सामाजिक भूमिकाओं के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।

वयस्कों की 80% "सफलता" ईक्यू से आती है - डैनियल गोलेमैन

- भावात्मक बुद्धि
- भावनाओं को समझना
- भावनाओं को समझना
- भावनाओं का प्रबंधन
- (रचनात्मक रूप से) भावनाओं का उपयोग करना

भावना का महत्व:

- भावना से दान की प्राप्ति होती है। यह भावना ही है जिसने बिल गेट्स, अजीम प्रेमजी और अन्य को अपनी सारी संपत्ति दान के लिए देने के लिए प्रेरित किया है।

- राष्ट्रवाद, भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करें, संवैधानिक आदर्शों और संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करें, उन महान आदर्शों को संजोएं और उनका पालन करें जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरित किया।
- यह भावना ही है जो सिविल सेवकों को राष्ट्र के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है। समर्पण जुनून के साथ प्रतिबद्धता है. इसके साथ भावनाएँ जुड़ी हुई हैं।
- सहानुभूति और करुणा, सहनशीलता, क्षमा
- संवेदनशीलता - दूसरों के धार्मिक विश्वासों के प्रति सम्मान, जनजातीय लोगों की विनम्र परंपरा।
- भोजन दान, रक्तदान, अच्छे सामरी बनना
- गांधीजी का मंत्र दूसरों की असुरक्षा को समझने की भावना पर आधारित है।
- धर्म का विचार उस हृदय में पैदा होता है जो सहानुभूति और करुणा से भरा होता है।
- जिन मामलों में संदेह हस्तक्षेप करता है, उनमें अच्छे व्यक्ति के हृदय की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही प्राधिकार या निर्णायक बन जाती है। – कालिदास
- भावना मनोवृत्ति का एक महत्वपूर्ण घटक है।
- प्रतिबद्ध नौकरशाही की अवधारणा के लिए भावना की आवश्यकता होती है
- चार्ल्स डार्विन ने कहा कि भावना जीवित रहने में मदद करती है।
- सकारात्मक भावनाएं सकारात्मक व्यवहार की ओर ले जाती हैं - जैसे बागबान जैसी फिल्में देखने के बाद व्यक्ति माता-पिता का और भी अधिक सम्मान करना शुरू कर देगा।

भावना का तंत्र:

- भावना भड़काने वाली घटना
- शारीरिक प्रतिक्रिया उत्तेजना
- उत्तेजना के कारण की पहचान करने के लिए संज्ञानात्मक मूल्यांकन
- व्यक्तिपरक अनुभव अनुभूति
- व्यवहारिक प्रतिक्रिया - हम अपनी भावना को कैसे दिखाते हैं या उस पर प्रतिक्रिया करते हैं

ईआई आपकी सहायता करता है:

- तर्क और भावना दोनों का उपयोग करके समस्याओं का समाधान करें।
- बदलती परिस्थितियों में लचीले रहें।
- अन्य लोगों को उनकी ज़रूरतें व्यक्त करने में सहायता करें।
- मुश्किल लोगों को शांति से और सोच-समझकर जवाब दें।

- आशावादी और सकारात्मक बने रहें
- दूसरों के प्रति सहानुभूति, करुणा और देखभाल व्यक्त करें।
- लगातार सीखें कि खुद को और संगठन को कैसे बेहतर बनाया जाए।
- अन्य संस्कृति के लोगों के साथ अपनी बातचीत और संचार बढ़ाएँ।

भावनाओं के प्रकार:

- **सकारात्मक भावनाएँ**
  - खुशी, प्रसन्नता, प्रेम, कृतज्ञता आदि।
- **नकारात्मक भावनाएँ**
  - घृणा, क्रोध, दुःख, चिन्ता, भय आदि।

नकारात्मक भावनाओं का प्रबंधन:

- भावनाओं के बिना जीवन की कल्पना करना भी कठिन है। भावनाएँ हमारे दैनिक जीवन और अस्तित्व का हिस्सा हैं। वे हमारे जीवन और पारस्परिक संबंधों का मूल आधार बनाते हैं। किसी भावना की विभिन्न तीव्रताएँ होती हैं जिन्हें हम अनुभव कर सकते हैं। आप अत्यधिक प्रसन्नता या थोड़ी ख़ुशी, गंभीर दुःख का अनुभव कर सकते हैं।
- हालाँकि, हममें से अधिकांश लोग आमतौर पर भावनाओं का संतुलन बनाए रखते हैं। जब भावनाओं के बीच ऐसी विरोधाभासी स्थिति का सामना करना पड़ता है, तो हमें चिंता, अवसाद आदि जैसी असामान्य भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ेगा।

चिंता	चिंता एक ऐसी स्थिति है जो एक व्यक्ति में तब विकसित होती है जब वह उचित अहंकार रक्षा को अपनाने में विफल रहता है, मन/स्वयं को चिंता से बचाता है। **उदाहरण:** • यदि व्यक्ति अपने अनैतिक कार्य (जैसे धोखाधड़ी या चोरी) के लिए तर्कसंगतता के बचाव का पालन करने में विफल रहता है, तो उसे ऐसे कार्य के परिणामों के बारे में तीव्र आशंका विकसित हो सकती है। • चिंतित व्यक्तियों को छोटे-छोटे महत्वपूर्ण मामलों पर भी ध्यान केंद्रित करने या निर्णय लेने में कठिनाई होती है।
अवसाद	• यह किसी व्यक्ति की तर्कसंगत रूप से सोचने, यथार्थवादी महसूस करने और प्रभावी ढंग से काम करने की क्षमता को प्रभावित करता है। यह स्थिति व्यक्ति की मनोदशा को प्रभावित करती है। इसकी स्थायी प्रकृति के कारण, अवसाद से पीड़ित व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के लक्षण विकसित होते हैं जैसे सोने में कठिनाई, साइकोमोटर उत्तेजना या मंदता का स्तर बढ़ना, सोचने या ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी, और व्यक्तिगत या सामाजिक गतिविधियों में रुचि की हानि आदि। • दैनिक जीवन में हमें अक्सर परस्पर विरोधी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। कठिन और तनावपूर्ण परिस्थितियों में, व्यक्ति में काफी हद तक डर, चिंता, घृणा आदि जैसी कई नकारात्मक भावनाएँ विकसित हो जाती हैं। • यदि ऐसी नकारात्मक भावनाओं को लंबे समय तक हावी रहने दिया जाए, तो व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है। • यही कारण है कि अधिकांश तनाव प्रबंधन कार्यक्रम चलाए जाते हैं तनाव प्रबंधन के एक अभिन्न अंग के रूप में भावना प्रबंधन पर जोर दें। भावना प्रबंधन तकनीकों का मुख्य फोकस नकारात्मक भावनाओं को कम करना और आशा, खुशी, रचनात्मकता, साहस, आशावाद, प्रसन्नता आदि जैसी सकारात्मक भावनाओं को बढ़ाना है। •

क्रोध प्रबंधन	क्रोध एक नकारात्मक भावना है. यह मन को दूर ले जाता है या क्रोध की स्थिति के दौरान व्यक्ति व्यवहार संबंधी कार्यों पर नियंत्रण खो देता है। क्रोध का प्रमुख स्रोत **उद्देश्यों की हताशा है** । हालाँकि, गुस्सा कोई प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि यह हमारी सोच का परिणाम है। न तो यह स्वचालित है और न ही अनियंत्रित और दूसरों के कारण होता है, बल्कि यह एक **स्व-प्रेरित विकल्प है जिसे व्यक्ति बनाता है** । गुस्सा हमारी सोच का परिणाम है और इसलिए इसे आपके अपने विचारों से ही नियंत्रित किया जा सकता है। क्रोध प्रबंधन में कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं: • अपने विचारों की शक्ति को पहचानें • समझें कि आप अकेले ही इसे नियंत्रित कर सकते हैं • 'जलाने वाली आत्म-चर्चा' में शामिल न हों • नकारात्मक भावनाओं को बढ़ा-चढ़ा कर न दिखाएं. • इरादों और गुप्त उद्देश्यों को दूसरों पर न थोपें • लोगों और घटनाओं के बारे में तर्कहीन विश्वास रखने का विरोध करें • अपना गुस्सा व्यक्त करने के रचनात्मक तरीके खोजने का प्रयास करें • क्रोध की मात्रा और अवधि पर नियंत्रण रखें जिसे आप व्यक्त करना चुनते हैं • क्रोध पर नियंत्रण के लिए बाहर नहीं अंदर की ओर देखें • खुद को बदलने का समय दें। किसी आदत को बदलने में समय और मेहनत लगती है।

नकारात्मक भावनाओं को प्रबंधित करने के तरीके:

- **आत्म-जागरूकता बढ़ाएँ:**
- अपनी भावनाओं और संवेदनाओं के प्रति जागरूक रहें।
- अपनी भावनाओं के 'कैसे' और 'क्यों' के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें।
- **वस्तुनिष्ठ रूप से स्थिति का मूल्यांकन करें:**
- यह प्रस्तावित किया गया है कि भावना घटना के मूल्यांकन से पहले होती है। यदि घटना परेशान करने वाली लगती है, तो आपका सहानुभूति तंत्रिका तंत्र सक्रिय हो जाता है और आप तनाव महसूस करते हैं। यदि आपको यह घटना परेशान करने वाली नहीं लगती , तो कोई तनाव नहीं है। इसलिए, यह आप ही तय करते हैं कि दुखी और चिंतित महसूस करना है या खुश और आराम महसूस करना है।
- **स्वयं निगरानी:**

- इसमें आपकी पिछली उपलब्धियों, भावनात्मक और शारीरिक स्थितियों, वास्तविक और परोक्ष अनुभवों का निरंतर या आवधिक मूल्यांकन शामिल है। एक सकारात्मक मूल्यांकन से आपका खुद पर विश्वास बढ़ेगा और कल्याण और संतुष्टि की भावना बढ़ेगी।

- **स्व-मॉडलिंग में संलग्न रहें:**
  - अपने लिए आदर्श बनें. अपने पिछले प्रदर्शन के सर्वोत्तम हिस्सों का बार-बार निरीक्षण करें और उन्हें भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरणा और प्रेरणा के रूप में उपयोग करें।
- **अवधारणात्मक पुनर्गठन और संज्ञानात्मक पुनर्गठन:**
  - घटनाओं को अलग ढंग से देखने का प्रयास करें और सिक्के के दूसरे पहलू की कल्पना करें। सकारात्मक और आश्वस्त करने वाली भावनाओं को बढ़ाने और नकारात्मक विचारों को खत्म करने के लिए अपने विचारों का पुनर्गठन करें।
- रचनात्मक बनो:
  - कोई रुचि या शौक खोजें और विकसित करें। ऐसी गतिविधि में शामिल हों जिसमें आपकी रुचि हो और आपका मनोरंजन हो।
- अच्छे रिश्ते विकसित करें और पोषित करें:
  - अपने मित्र सावधानी से चुनें. ख़ुश और प्रसन्न दोस्तों की संगति में आप आम तौर पर ख़ुशी महसूस करेंगे।
- सहानुभूति रखें:
  - दूसरों की भावनाओं को भी समझने का प्रयास करें। अपने रिश्तों को सार्थक और मूल्यवान बनाएं। परस्पर सहयोग मांगें और प्रदान भी करें।
- सामुदायिक सेवा में भाग लें:
  - दूसरों की सहायता करके स्वयं की सहायता करें। सामुदायिक सेवा करके (उदाहरण के लिए, बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चे को अनुकूली कौशल सीखने में मदद करना), आप अपनी कठिनाइयों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करेंगे।

सकारात्मक भावनाओं को बढ़ाना:

- हमारी भावनाओं का एक उद्देश्य होता है। वे हमें बदलते परिवेश के अनुरूप ढलने में मदद करते हैं और हमारे अस्तित्व और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- हालाँकि नकारात्मक भावनाएँ ऐसी स्थितियों में हमारी रक्षा करती हैं, लेकिन इन भावनाओं का अत्यधिक या अनुचित उपयोग हमारे लिए जीवन के लिए खतरा बन सकता है, क्योंकि यह हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को नुकसान पहुँचा सकता है और हमारे स्वास्थ्य पर गंभीर परिणाम डाल सकता है।
- आशा, खुशी, आशावाद, संतोष और कृतज्ञता जैसी सकारात्मक भावनाएं हमें ऊर्जावान बनाती हैं और भावनात्मक कल्याण की हमारी भावना को बढ़ाती हैं। जब हम सकारात्मक प्रभाव का अनुभव करते हैं, तो हम विभिन्न प्रकार के कार्यों और विचारों के लिए अधिक प्राथमिकता प्रदर्शित करते हैं। हम जिन भी

समस्याओं का सामना करते हैं उन्हें हल करने के लिए हम अधिक संभावनाओं और विकल्पों के बारे में सोच सकते हैं और इस प्रकार, हम सक्रिय हो जाते हैं।

- सकारात्मक भावनाएँ हमें प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने और शीघ्र ही सामान्य स्थिति में लौटने की अधिक क्षमता प्रदान करती हैं। वे हमें दीर्घकालिक योजनाएँ और लक्ष्य निर्धारित करने और नए रिश्ते बनाने में मदद करते हैं।
- **सकारात्मक भावनाओं को बढ़ाने के विभिन्न तरीके नीचे दिए गए हैं:**
  - खुशी और सकारात्मक आत्म-सम्मान के व्यक्तित्व लक्षण
  - संकट में सकारात्मक अर्थ ढूंढना, दूसरों के साथ गुणवत्तापूर्ण संबंध और करीबी रिश्तों का सहयोगी नेटवर्क होना
  - काम में लगे रहना और महारत हासिल करना
  - एक ऐसा विश्वास जो सामाजिक समर्थन, उद्देश्य और आशा को बांधता है, उद्देश्यपूर्ण जीवन जीता है
  - अधिकांश दैनिक घटनाओं की सकारात्मक व्याख्या।

भावनाओं पर नौकरशाही	**भावनाओं पर आधुनिक तंत्रिका विज्ञान**
हमें अकुशल बनाता है	हमें प्रभावशाली बनायें
कमजोरी की निशानी	ताकत का संकेत
अच्छे निर्णय में हस्तक्षेप करता है	अच्छे निर्णय के लिए आवश्यक
हमें विचलित करता है	हमें प्रेरित करें
तर्क में बाधा डालता है या धीमा करता है	तर्क को बढ़ाएं और तेज़ करें
मनमाना और अत्याचारी	विश्वास और संबंध बनाए
कमजोर तटस्थता	नैतिक मूल्यों को सक्रिय करें
वस्तुनिष्ठ डेटा के प्रवाह को रोकें	महत्वपूर्ण जानकारी और प्रतिक्रिया प्रदान करें
जटिल योजना	रचनात्मक और नवीनता को जगाता है
प्रबंधन को कमजोर करें	नेतृत्व को बढ़ाता है

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मिश्रित मॉडल:

- मिश्रित मॉडल का सबसे प्रसिद्ध वर्णन डैनियल गोलेमैन द्वारा किया गया था, और यह ईआई के लिए व्यापक रूप से स्वीकृत और उपयोग किया जाने वाला मॉडल है। इसमें दक्षताओं की एक श्रृंखला शामिल है जो कौशल सेटों में विभाजित हैं और जो एक साथ मिलकर किसी व्यक्ति के ईआई के स्तर की तस्वीर बनाती हैं।

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अंतर्वैयक्तिक और पारस्परिक तत्व शामिल होते हैं।

- **ईआई के घटक**
  - अंतर्वैयक्तिक तत्व:
    - आत्म जागरूकता
    - स्व प्रेरणा
  - पारस्परिक तत्व:
    - सामाजिक जागरूकता
    - सामाजिक क्षमता

अंतर्वैयक्तिक तत्व:	**आत्म-जागरूकता -** नकारात्मक भावनाओं और आवेगों को नियंत्रण में रखने की क्षमता
	आत्म-प्रेरणा - असफलताओं के बावजूद हासिल करने की इच्छा, लक्ष्य हासिल करने के लिए कौशल विकसित करना और अवसरों पर कार्य करने के लिए पहल करना।
पारस्परिक तत्व:	**सामाजिक-जागरूकता** - जागरूकता और दूसरे की भावनाओं की सराहना करने की प्रवृत्ति
	सामाजिक-क्षमता - सामाजिक कौशल जो दूसरों के साथ तालमेल बिठाने में मदद करते हैं, जैसे टीम निर्माण, संघर्ष प्रबंधन, संचार कौशल।

आत्म-जागरूकता:

- यह किसी की भावनाओं, शक्तियों, कमजोरियों, प्रेरणाओं, मूल्यों और लक्ष्यों को जानने और निर्णय लेने के लिए आंतरिक भावनाओं का उपयोग करते हुए दूसरों पर उनके प्रभाव को पहचानने की क्षमता है।
- **उदाहरण** : व्यक्ति को अपनी भावना के प्रति स्वयं जागरूक होना चाहिए
  - खून देखकर डर लगता है
  - जब कोई ऊंचे स्वर और ऊंची आवाज में बात करता है तो गुस्सा आता है

दैनिक जीवन और प्रशासन में आत्म जागरूकता के लाभ:

- एक क्रोधी नौकरशाह, अपने क्रोध प्रबंधन के बारे में स्वयं जागरूक होने के कारण अपने आधिकारिक कर्तव्य में क्रोधित जनता को नियंत्रित कर सकता है
- एक जिला कलेक्टर पत्रकारों से तब सहजता से निपट सकता है जब वह मीडिया ब्रीफ के दौरान कई सवाल उठाता है और अपने प्रशासन की आलोचना करता है।
- जब कोई रोता है तो हमें उससे सहानुभूति हो जाती है। हमारी कमजोरी को जानकर कुछ फर्जी लाभार्थी केवल CRY के हथियार का उपयोग करके सरकार से लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं
- जब हम खुश होते हैं तो निजी जीवन में हम वादे नहीं करते। अत: यदि यह अयोग्य वादा पूरा नहीं हुआ तो अंत में हमें अफसोस नहीं होगा।

स्व प्रेरणा:

- व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यवहार किसी अंतर्निहित उद्देश्य के कारण होता है। व्यवहार लक्ष्य-संचालित है। लक्ष्य प्राप्ति तक लक्ष्य प्राप्ति का व्यवहार बना रहता है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लोग विभिन्न गतिविधियों की योजना बनाते हैं और उन्हें अपनाते हैं। व्यवहार की हमारी रोजमर्रा की अधिकांश व्याख्या उद्देश्यों के संदर्भ में दी जाती है।

उदाहरण: आप स्कूल या कॉलेज क्यों आते हैं? इस व्यवहार के कई कारण हो सकते हैं , जैसे आप सीखना चाहते हैं या दोस्त बनाना चाहते हैं, आपको अच्छी नौकरी पाने के लिए डिग्री की आवश्यकता है, आप अपने माता-पिता को खुश करना चाहते हैं, इत्यादि।

प्रेरणा चक्र:

आवश्यकता किसी आवश्यकता की कमी या कमी है। आवश्यकता की स्थिति ड्राइव की ओर ले जाती है। ड्राइव किसी आवश्यकता से उत्पन्न तनाव या उत्तेजना की स्थिति है। यह यादृच्छिक गतिविधि को सक्रिय करता है। जब यादृच्छिक गतिविधियों में से कोई एक लक्ष्य की ओर ले जाती है, तो यह ड्राइव को कम कर देती है, और जीव सक्रिय होना बंद कर देता है। जीव संतुलित अवस्था में लौट आता है।

- **प्रेरणा चक्र**
  - ज़रूरत
  - गाड़ी चलाना
  - कामोत्तेजना
  - लक्ष्य तलाशने वाला व्यवहार
  - उपलब्धि
  - उत्तेजना में कमी

स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी प्रेरित करने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं:

- आप जो भी करें उसमें योजनाबद्ध और व्यवस्थित रहें
- अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता देना सीखें
- अल्पकालिक लक्ष्य निर्धारित करें (कुछ दिनों, एक सप्ताह, एक महीने और इसी तरह)
- निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्वयं को पुरस्कृत करें
- हर बार लक्ष्य हासिल करने पर उपलब्धि हासिल करने के लिए खुद की सराहना करें (कहें "चीयर्स! मैंने यह कर दिखाया ", "मैं वास्तव में इसमें अच्छा हूं", "मुझे लगता है कि मैं चीजों को स्मार्ट तरीके से कर सकता हूं")
- यदि लक्ष्य हासिल करना मुश्किल लगता है, तो उन्हें फिर से छोटे-छोटे हिस्सों में बांट दें और एक-एक करके उन तक पहुंचें
- हमेशा अपने निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए की गई सभी कड़ी मेहनत के परिणामों की कल्पना करने या कल्पना करने का प्रयास करें।

स्व-प्रेरणा के लाभ:

- हम परियोजनाओं को समय पर पूरा कर सकते हैं।'
- नौकरशाह सरकारी योजनाओं, नीतियों को सबसे कुशलता से लागू करते हैं
- यौन गतिविधि के माध्यम से भूख, प्यास, प्रजातियों के अस्तित्व जैसे कुछ जैविक उद्देश्यों को पूरा करना
- शक्ति, सफलता जैसे शारीरिक उद्देश्य
- बच्चों की जिज्ञासा से उनमें बौद्धिक क्षमता का विकास होता है
- अन्वेषण इस ब्रह्मांड में कई प्रश्नों को हल करता है जैसे ब्रह्मांड की उत्पत्ति, जीवन कैसे विकसित हुआ आदि।

आत्मबोध का सिद्धांत :

- विभिन्न आवश्यकताओं को एक पदानुक्रम में व्यवस्थित करके मानव व्यवहार की एक तस्वीर चित्रित करने का प्रयास किया। प्रेरणा के बारे में उनका दृष्टिकोण अपने सैद्धांतिक और व्यावहारिक मूल्य के कारण बहुत लोकप्रिय है जिसे लोकप्रिय रूप से "आत्म- बोध का सिद्धांत " के रूप में जाना जाता है।
- परिकल्पित किया जा सकता है जिसमें इस पदानुक्रम का निचला भाग बुनियादी शारीरिक या जैविक आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करता है जो जीवित रहने के लिए बुनियादी हैं जैसे कि भूख, प्यास, आदि। केवल जब ये ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं, तो खतरे से मुक्त होने की आवश्यकता उत्पन्न होती है . यह शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रकृति की सुरक्षा आवश्यकताओं को संदर्भित करता है। इसके

बाद दूसरे लोगों की तलाश करने, प्यार करने और प्यार पाने की ज़रूरत आती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद, व्यक्ति सम्मान के लिए प्रयास करता है, अर्थात आत्म-मूल्य की भावना विकसित करने की आवश्यकता।

- पदानुक्रम में अगली उच्च आवश्यकता किसी व्यक्ति की क्षमता के पूर्ण विकास, यानी आत्म-साक्षात्कार के उद्देश्य को दर्शाती है। एक आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति आत्म-जागरूक, सामाजिक रूप से उत्तरदायी, रचनात्मक, सहज, नवीनता के लिए खुला और चुनौती वाला होता है। उनमें हास्य की भावना और गहरे पारस्परिक संबंधों की क्षमता भी है।
- पदानुक्रम में निचले स्तर की ज़रूरतें (शारीरिक) तब तक हावी रहती हैं जब तक वे असंतुष्ट रहती हैं। एक बार जब वे पर्याप्त रूप से संतुष्ट हो जाते हैं, तो उच्च आवश्यकताएं व्यक्ति का ध्यान और प्रयास पर कब्जा कर लेती हैं। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बहुत कम लोग उच्चतम स्तर तक पहुँचते हैं क्योंकि अधिकांश लोग निचले स्तर की जरूरतों से अधिक चिंतित होते हैं।

सामाजिक जागरूकता :

यह विविध पृष्ठभूमियों और संस्कृतियों के लोगों समेत दूसरों का दृष्टिकोण अपनाने और उनके साथ सहानुभूति रखने की क्षमता है और व्यवहार के लिए सामाजिक और नैतिक मानदंडों को समझने और परिवार, स्कूल और सामुदायिक संसाधनों और समर्थन को पहचानने की क्षमता है। यह भी शामिल है:

- **सेवा अभिविन्यास** - अन्य लोगों की आवश्यकता का अनुमान लगाना, पहचानना और उसे पूरा करना।
- **दूसरों का विकास करना** - प्रगति के लिए लोगों की जरूरतों को समझना और उनकी क्षमताओं को विकसित करना
- विविध लोगों के माध्यम से **अवसरों को समझना ।**

भावात्मक बुद्धि

सामाजिक पूंजी

-
  - सामाजिक जागरूकता

सामाजिक जागरूकता के लाभ:

- व्यक्तियों के बीच सहानुभूति और करुणा का विकास करना और ये सिविल सेवकों के लिए मूलभूत मूल्य हैं
- बेहतर सामाजिक रिश्ते

- दूसरों पर आधारित भावनात्मक जरूरतों को समझना
- कम जोखिम भरा व्यवहार
- सकारात्मक सामाजिक माहौल

सामाजिक योग्यता :

- यह सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से संभालने की क्षमता है। सामाजिक अंतःक्रियाओं की जटिलता को देखते हुए, सामाजिक क्षमता संज्ञानात्मक क्षमताओं, भावनात्मक प्रक्रियाओं, व्यवहार कौशल, सामाजिक जागरूकता और पारस्परिक संबंधों से संबंधित व्यक्तिगत और सांस्कृतिक मूल्यों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पाद है। यह उम्र दर उम्र या व्यक्ति दर व्यक्ति और स्थिति दर स्थिति पर निर्भर करता है।
- **उदाहरण** :
    - बच्चों से दोस्ती करने के लिए हमें बच्चों जैसा व्यवहार करना पड़ सकता है और उनके सामने बचकानी हरकतें करनी पड़ सकती हैं
    - विभिन्न संस्कृतियों को विकसित करने के लिए, हमें उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं को सीखना और उनका अभ्यास करना होगा

लाभ:

- जनजातीय संस्कृतियों का अध्ययन करना और यह सुनिश्चित करना कि सरकारी पहल उन तक पहुँचे
- नागरिक समाज तक पहुँचकर उन्हें प्रशासन का हिस्सा बनाना
- मानवीय रिश्तों को मजबूत करना
- विभिन्न विभागों के बीच समन्वय
- पेशे और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन

भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने के लिए आवश्यक कौशल:

- **लचीलापन** : भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग परिवर्तनों के प्रति अनुकूलन रखते हैं। वे विकल्प विकसित करने के लिए समस्या-समाधान का उपयोग करते हैं।
- **आशावाद** : भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोगों का जीवन के प्रति सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण होता है। उनका मानसिक दृष्टिकोण उन्हें असफलताओं के बावजूद लक्ष्य की ओर लगातार काम करने के लिए ऊर्जा देता है।
- **आत्म-जागरूकता** : भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग इस बात से अवगत होते हैं कि वे कैसा महसूस करते हैं, क्या प्रेरित करता है
- उन्हें हतोत्साहित करता है, और वे दूसरों को कैसे प्रभावित करते हैं।
- **सामाजिक कौशल** : भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग दूसरों के साथ अच्छी तरह से संवाद करते हैं और संबंध बनाते हैं। वे ध्यान से सुनते हैं और विविध पृष्ठभूमि सहित दूसरों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार अपने संचार को अनुकूलित करते हैं। वे दया दिखाते हैं.

- **भावनात्मक नियंत्रण** : भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग तनाव को समान रूप से संभालते हैं। वे परिवर्तन और पारस्परिक संघर्ष जैसी भावनात्मक रूप से तनावपूर्ण स्थितियों से शांति से निपटते हैं।

ईआई की उपयोगिता:

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक कौशल के बजाय एक वांछनीय नैतिक गुण है। एक अच्छी तरह से विकसित ईआई न केवल लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सहायक उपकरण के रूप में है, बल्कि दूसरों की क्षमता को छीनकर उन्हें हेरफेर करने के हथियार के रूप में इसका एक स्याह पक्ष भी है।
- नए साक्ष्यों से पता चलता है कि जब लोग अपने भावनात्मक कौशल को निखारते हैं, तो वे दूसरों के साथ छेड़छाड़ करने में बेहतर हो जाते हैं। जब आप अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में अच्छे होते हैं, तो आप अपनी सच्ची भावनाओं को छुपा सकते हैं। जब आप जानते हैं कि दूसरे क्या महसूस कर रहे हैं, तो आप उन्हें अपने सर्वोत्तम हितों के विरुद्ध कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
- जो नेता भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं, वे कई कारणों से हमारी क्षमताओं को छीन सकते हैं। यदि उनके मूल्य हमारे मूल्यों से मेल नहीं खाते हैं, तो परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।
- यह मानने के बजाय कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता हमेशा उपयोगी होती है, हमें इस बारे में अधिक ध्यान से सोचने की ज़रूरत है कि यह कहाँ और कब मायने रखती है।
- उदाहरण के लिए, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मदद के बीच कोई संबंध नहीं था। मदद हमारी प्रेरणाओं और मूल्यों से प्रेरित होती है, न कि भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की हमारी क्षमताओं से। हालाँकि, एक अलग व्यवहार की जांच करते समय भावनात्मक बुद्धिमत्ता परिणामी थी। सुधार के लिए विचारों और सुझावों के साथ बोलकर यथास्थिति को चुनौती देना। यहां यह मान्यता बढ़ती जा रही है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता-किसी भी कौशल की तरह-का उपयोग अच्छे या बुरे के लिए किया जा सकता है। इसलिए, यदि हम स्कूलों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पढ़ाना चाहते हैं और इसे कार्यस्थल पर विकसित करना चाहते हैं, तो हमें उन मूल्यों पर विचार करना होगा जो इसके साथ चलते हैं और यह वास्तव में कहां उपयोगी है।

ईआई का सकारात्मक पक्ष	ईआई का नकारात्मक पक्ष
अहिंसा के माध्यम से स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया · विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानन्द का भाषण और रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाएँ	जर्मनों की भावनाओं से खेलने के लिए भाषण दिये · वामपंथी उग्रवाद और आतंकवादी संगठनों ने निर्दोष युवाओं की भावनाओं से छेड़छाड़ की और उन्हें राज्य के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया

· मार्टिन लूथर किंग जेआर के भाषण ने कई अमेरिकियों और दुनिया भर को प्रेरित किया · नेहरू का नियति के साथ प्रयास भाषण	

प्रशासन और शासन में ईआई के अनुप्रयोग :

ईआई का उपयोग शासन और प्रशासन में स्थितियों से उत्पन्न होने वाली भावनाओं के मूल्यांकन और बेहतर निर्णय लेने, सार्वजनिक प्रबंधन गतिविधियों के दौरान प्रभावी भावनात्मक प्रबंधन के लिए किया जा सकता है।

- सहकर्मी कर्मचारियों के बीच **संगठनात्मक संबंधों में** सुधार करना
- नौकरशाही में अच्छे योग्य कर्मचारियों की **भर्ती** करना जो अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकें
- **प्रदर्शन को मापने** के लिए ई . सरकार के अधिकारियों का आकलन करने के लिए 360-डिग्री फीडबैक
- सरकार के लिए काम करने के लिए कॉरपोरेट्स और गैर सरकारी संगठनों के साथ **बातचीत** करना
- नागरिक समाज और निजी कंपनियों के बीच **सामाजिक जिम्मेदारी पैदा** करना
- **तनाव और** सार्वजनिक संपर्क के दौरान क्रोध प्रबंधन
- **हितों के टकराव को** रोकने के लिए .
- कार्यस्थल **पर आशावादी** रहने से **आत्मविश्वास** बढ़ता है और लक्ष्यों को पूरा करने में मदद मिलती है
- दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में **अवैयक्तिक वैराग्य**
- हमारी व्यक्तिगत विचारधारा के बावजूद **राजनीतिक तटस्थता** बनाए रखना
- यदि कोई उच्च अधिकारी या मंत्री आपसे केवल भावनाओं के आधार पर अपील कर रहे हैं तो **लिखित संचार का अनुरोध करें।**

हमारे ईआई को विकसित करने के लाभ:

- रिश्तों में सुधार
- ईमानदारी से काम करना

- तनाव का स्तर कम हो गया
- करियर की बेहतर संभावनाएँ
- दूसरों के साथ बेहतर संचार, आत्मविश्वास और सकारात्मक महसूस करना
- दूसरों से सम्मान
- बेहतर सहानुभूति कौशल
- गलतियों से सीखना
- रचनात्मकता में वृद्धि
- परिवर्तन को अधिक आत्मविश्वास से प्रबंधित करना, कार्यस्थल पर कम पावर गेम

भावनाएँ लोगों को प्रेरित करती हैं और लोग परिणामों को संचालित करते हैं। ईआई में निवेश **सामाजिक, संगठनात्मक और राष्ट्रीय भलाई और सफलता को बढ़ाने में मदद कर सकता है।**

ईआई बनाने के तरीके:

- बहस को प्रोत्साहित करना
- भावनात्मक निरक्षरता में सुधार
- भूमिका मॉडलिंग
- सुनने में सुधार
- संचार कौशल
- सहानुभूति उत्पन्न करना

EI को निम्नलिखित चरणों में प्रशासकों में शामिल किया जा सकता है:

एक सिविल सेवक और प्रशासक के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता को एक बहुत ही महत्वपूर्ण गुण के रूप में स्वीकार किया गया है जो न केवल उसे अपने आधिकारिक कार्यों में मदद करता है बल्कि कार्य-व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है।

भर्ती	**का** परिचय **सिविल सेवा परीक्षा में एथिक्स पेपर** उम्मीदवारों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की निगरानी के लिए रचनात्मक कदमों में से एक है।
प्रशिक्षण	**नीति आयोग ने** सभी सेवाओं के लिए मध्य-कैरियर प्रशिक्षण मॉड्यूल शुरू करने और योग्यता में सुधार के लिए कौशल अभिविन्यास के लिए हैंडबुक तैयार करने का सुझाव दिया है, जिसमें बदले में सॉफ्ट कौशल के अधिग्रहण पर भी ध्यान केंद्रित किया जा सकता है जिसमें सिविल सेवकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी शामिल है।

मूल्यांकन	**नीति आयोग** के अनुसार बेहतर जवाबदेही के लिए वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट (एसीआर) को मल्टी स्टेक होल्डर फीडबैक (एमएसएफ) से बदलने पर विचार आवश्यक सुधार है। बहु-हितधारक फीडबैक बदले में सिविल सेवकों में पक्षपाती भावनाओं को नियंत्रित करेगा और बदले में यह सिविल सेवकों को दूसरों की जरूरतों के प्रति अधिक उत्तरदायी और संवेदनशील बना सकता है।

ईआई पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव

ऑटोमेशन और एआई व्यवसायों और समाज दोनों के लिए **नए अवसर** और **अधिक दक्षता ला रहे हैं। यह अद्वितीय मानव संज्ञानात्मक क्षमताओं पर** कर्मचारियों और संगठनात्मक फोकस को बढ़ा रहा है जिसमें मशीनें आसानी से महारत हासिल नहीं कर सकती हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक ऐसा क्षेत्र है जिसका अनुकरण करना एआई और मशीनों के लिए कठिन है, जिससे यह आज के युग में एक आवश्यक कौशल सेट बन गया है।

नतीजे:

- एआई कंपनियों की जॉब प्रोफाइल बदल देगा
- नई भूमिकाएँ सृजित होंगी और कई पारंपरिक भूमिकाएँ स्वचालन द्वारा ग्रहण कर ली जाएंगी
- मानवीय बुद्धि और मानवीय भावनाओं से आगे निकलें
- मशीनों और मनुष्यों द्वारा किए गए कार्यों के बीच की रेखाओं को मिटा देता है
- जूनियर और सब जूनियर स्तर के कर्मचारियों को नौकरी छूटने का अधिक नुकसान होता है
- नैतिक निर्णय लेना सुनिश्चित किया भी जा सकता है और नहीं भी।

एआई के युग में ईआई के लाभ

- दक्षता एवं उत्पादकता में वृद्धि
- उच्च कार्य संतुष्टि
- बेहतर भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य
- नौकरी छूटने का डर कम हो गया
- बदलते नजरिए के प्रति खुलापन
- कम घर्षण
- एआई के माध्यम से जनसंपर्क में सुधार
- जब आपके पास ईआई होगा तो आप अपनी सेवा प्रदान करने में अधिक ईमानदार और प्रामाणिक होंगे जिसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक कार्यालयों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा

एआई पर मानव बुद्धि को मजबूत करने के तरीके:

- केवल वे कर्मचारी या लोग जो ईआई कौशल पर उच्च रेटिंग रखते हैं, उनके पास अपनी नौकरी बनाए रखने की अधिक संभावना होगी, उन लोगों की तुलना में जिनके पास केवल बुनियादी तकनीकी और डिजिटल कौशल हैं।
- कार्यबल को बार-बार पुनः कौशल प्रदान करना
- कर्मचारियों के लिए अवसरों का क्षेत्र बढ़ाना
- संगठनों में भर्ती, सीखने और फीडबैक कार्यक्रमों को मशीन की उम्र के अनुसार अनुकूलित नहीं किया गया है। प्रौद्योगिकी के बदलते नजरिए के साथ बदलाव के लिए तैयार हूं।

वर्षों से नौकरी की संतुष्टि में गिरावट आ रही है। **मनुष्य और मशीन के बीच तालमेल** हासिल करने के लिए , ईआई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खिलाफ जीतने के लिए मानव हाथ में एकमात्र तीर होगा।

10 आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नैतिकता

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है? एआई और नैतिकता कैसे संबंधित हैं? AI से संबंधित नैतिक चिंता क्या है? आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नैतिकता के लिए वैश्विक मानक क्या हैं? अधिक जानने के लिए आगे पढ़ें।

क्लाउड कंप्यूटिंग प्लेटफ़ॉर्म की गति और पैमाने और मशीन लर्निंग तकनीकों के विकास से कृत्रिम बुद्धिमत्ता में कई प्रगति संभव हुई है।

हालाँकि, जैसे-जैसे एआई अपने तंत्रिका नेटवर्क के आकार, ऊर्जा खपत, डेटा सेट की संख्या और प्रौद्योगिकी की प्रामाणिकता के मामले में दायरा बढ़ता है, यह कुछ महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दों को उठाता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है?

यह उस प्रक्रिया को परिभाषित करता है जिसके द्वारा मशीनें उन कार्यों को अंजाम देती हैं जिनके लिए अतीत में मानव बुद्धि की आवश्यकता होती थी। इसमें बड़े डेटा, तंत्रिका नेटवर्क, स्व-एल्गोरिदम, पैटर्न पहचान और मशीन लर्निंग जैसी प्रौद्योगिकियां शामिल हैं।

प्रोग्राम इलेक्ट्रिकल कंप्यूटर का निर्माण नहीं हुआ था।

एआई में जटिल कार्य शामिल हैं जैसे मशीन को डेटा का एक निश्चित सेट खिलाना और स्थिति के आधार पर अलग-अलग प्रतिक्रिया देने के लिए इसे प्रोग्रामिंग करना। इसमें बस स्व-शिक्षण पैटर्न विकसित करना शामिल है ताकि कंप्यूटर उन प्रश्नों का उत्तर दे सके जिनका उत्तर कभी भी मनुष्य की तरह नहीं दिया गया है।

उदाहरण के लिए: मानवीय आदेशों को समझने और मानवीय गतिविधियों से मिलते-जुलते कार्यों को करने के लिए, मनुष्यों के आसपास लाखों एल्गोरिदम और कोड मौजूद हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस फेसबुक द्वारा अपने उपयोगकर्ताओं के लिए सुझाए गए मित्रों की सूची और पॉप-अप पेज के लिए जिम्मेदार है जो इंटरनेट ब्राउज़ करते समय दिखाई देता है और उपयोगकर्ता के पसंदीदा ब्रांड के जूते और कपड़ों की बिक्री का सुझाव देता है।

एआई और नैतिकता कैसे संबंधित हैं?

संक्षेप में, नैतिकता और एआई में लगातार सवाल पूछना, शोध करना और उस तकनीक को हल्के में नहीं लेना शामिल है जो तेजी से मानव अस्तित्व पर अतिक्रमण कर रही है।

डेटा की मात्रा और उसका उपयोग एआई को चुनौती देने की आवश्यकता को और भी आवश्यक बना देता है। उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले डेटा की मात्रा और आवश्यक कम्प्यूटेशनल शक्ति की मात्रा के संबंध में, एआई सिस्टम विशाल होते जा रहे हैं।

उनकी तैनाती के दायरे और उनके द्वारा ली जाने वाली जिम्मेदारी की डिग्री के संदर्भ में, समाज में उनकी व्यापकता पीसी और इंटरनेट युग में कंप्यूटिंग से कहीं अधिक है।

बढ़ते पैमाने का तात्पर्य यह भी है कि प्रौद्योगिकी के कुछ हिस्से, विशेष रूप से इसकी गहन सीखने की क्षमता, यहां तक कि सबसे अनुभवी अभ्यासकर्ताओं की समझ से परे हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित नैतिक चिंताएँ क्या हैं?

कभी-कभी नई प्रौद्योगिकियों के विकास से त्रुटियां और गलत आकलन हो जाते हैं जिनका अनपेक्षित नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह एआई से संबंधित नैतिक चिंताओं को सामने लाता है।

एआई एथिक्स में बेरोजगारी का जोखिम:

श्रम के पदानुक्रम की मुख्य चिंता है । रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में विशेषज्ञता रखने वाली कंपनियाँ ऐसी चतुर मशीनें बना रही हैं जो फल चुनने और कैशियरिंग जैसी नौकरियों में कम वेतन वाले श्रमिकों की जगह ले सकती हैं।

इसके अतिरिक्त, वह दिन जल्द ही आएगा जब अकाउंटेंट, व्यापारियों और मध्य प्रबंधकों सहित कई डेस्क पदों को एआई द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।

एआई नैतिकता की बढ़ती असमानताएँ:

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से, कोई व्यवसाय मानव श्रम पर अपनी निर्भरता को काफी कम कर सकता है , जिसके परिणामस्वरूप कम व्यक्तियों को आय प्राप्त होगी।
- परिणामस्वरूप, एआई-संचालित व्यवसायों से लाभ कमाने वाले एकमात्र लोग उन व्यवसायों के मालिक हैं। एआई डिजिटल बहिष्कार को भी बढ़ा सकता है।
- इसके अतिरिक्त, फंडिंग उन देशों में स्थानांतरित होने की संभावना है जहां नैतिक एआई-संबंधित गतिविधि पहले से ही अच्छी तरह से स्थापित है, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रों के बीच और भीतर व्यापक असमानताएं हैं।

तकनीकी लत:

- प्रौद्योगिकी की लत लोगों पर निर्भरता का नवीनतम रूप है। एआई पहले से ही मानव का ध्यान केंद्रित करने और कुछ गतिविधियां शुरू करने में कुशल है।
- अगर इसे ठीक से संभाला जाए, तो यह समाज को बेहतर प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने का एक अवसर बन सकता है। हालाँकि, अगर यह गलत हाथों में पड़ जाए तो यह हानिकारक हो सकता है।

बड़े पैमाने पर निगरानी प्रतिक्रिया

- चेहरे की पहचान जैसे उपकरणों द्वारा संभव बनाए गए सामूहिक निगरानी के उपयोग की बढ़ती आलोचना हो रही है।
- ह्यूमन राइट्स वॉच के अनुसार, चीन के शिनजियांग प्रांत में धार्मिक उइगरों की निगरानी और म्यांमार में फरवरी में सैन्य अधिग्रहण सहित निगरानी के खिलाफ दबाव को देखते हुए, मानवाधिकार खतरे में हैं।
- ऐसी चिंताएँ हैं कि एआई उपकरण भविष्य के संघर्षों में बड़े पैमाने पर निगरानी और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए उपयोग किए जाने वाले प्राथमिक हथियार बन जाएंगे।

भेदभावपूर्ण रोबोट/सामाजिक पूर्वाग्रह:

- हमें इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि मनुष्य, जो पूर्वाग्रह और पक्षपात से ग्रस्त हैं, एआई सिस्टम डिजाइन करते हैं।
- रंग के व्यक्तियों के खिलाफ निगरानी और एआई चेहरे की पहचान प्रणालियों में भेदभाव हो सकता है।
- उदाहरण के लिए, इसमें ऐसे एल्गोरिदम शामिल हैं जो मानव चेहरों को किसी तरह से "सुंदर" या "अनाकर्षक" के रूप में वर्गीकृत करते हैं। GANs की तरह कथित रूप से जेनरेटिव एल्गोरिदम। इसका उपयोग दुनिया को उस विशेष सौंदर्यबोध से अभिभूत करने के लिए अन्य सभी को छोड़कर एक विशिष्ट सौंदर्यशास्त्र की लगातार नकल करने के लिए किया जा सकता है।

डेटा गोपनीयता संबंधी चिंताएँ:

- AI डेटा गोपनीयता के बारे में भी महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है। डेटा के लिए एल्गोरिदम की कभी न खत्म होने वाली खोज के परिणामस्वरूप हमारे डिजिटल पदचिह्नों को हमारी जागरूकता या सूचित सहमति के बिना पकड़ा और बेचा जा रहा है।
- कैम्ब्रिज एनालिटिका मामला , जिसमें मतदान निर्णयों को प्रभावित करने के लिए ऐसे एल्गोरिदम और विशाल डेटा का उपयोग किया गया था, को उन संभावित जोखिमों के बारे में एक मजबूत चेतावनी के रूप में कार्य करना चाहिए जो मौजूदा एआई व्यवसाय मॉडल व्यक्तियों और समाज दोनों के लिए पैदा करते हैं।

एआई इंसानों के खिलाफ हो रहा है:

- क्या होगा अगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता ही इंसानों के खिलाफ हो जाए?
- विश्व स्तर पर कैंसर को समाप्त करने के लिए एआई प्रणाली का अनुरोध करने की कल्पना करें। बहुत गणना के बाद, यह एक ऐसा फार्मूला तैयार करता है जो पृथ्वी पर सभी को खत्म करके कैंसर को समाप्त करता है। जो एआई एथिक्स के लिए बहुत बड़ा झटका होगा

नकली एआई नैतिकता का उदय

- तथ्य यह है कि तंत्रिका नेटवर्क अधिक से अधिक "उत्पादक" होते जा रहे हैं, जो पूर्वाग्रह के बारे में नैतिक चिंताएं पैदा करता है।
- रैखिक प्रतिगमन के लिए पारंपरिक मशीन लर्निंग प्रोग्राम। दुनिया उनके आविष्कारों से अभिभूत हो रही है।

- कार्यक्रम के साथ यथार्थवादी चेहरे बनाए जा सकते हैं , जिससे कृत्रिम समानता के युग की शुरुआत होगी।
- प्रौद्योगिकी के कुछ सीमित उपयोगों के लिए, एआई सिस्टम वर्तमान में पाठ, संगीत और दृश्यों का इतने उच्च स्तर तक निर्माण कर सकता है कि लोगों को सिंथेटिक और गैर-सिंथेटिक आउटपुट के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई नैतिकता के लिए वैश्विक मानक क्या हैं?

- यूनेस्को के सामान्य सम्मेलन ने 2021 में अपने 41वें सत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की नैतिकता पर सिफारिश का समर्थन किया।
- इसका इरादा एआई विकास में लगे लोगों, व्यवसायों और सरकारों के बीच शक्ति के वितरण में महत्वपूर्ण बदलाव लाने का है।
- यूनेस्को के सदस्यों द्वारा सकारात्मक कार्रवाई का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाएगा कि एआई डिजाइन टीमों में अल्पसंख्यकों और महिलाओं का उचित प्रतिनिधित्व हो।
- दिशानिर्देश पर्याप्त डेटा प्रबंधन, गोपनीयता और सूचना पहुंच के महत्व पर भी जोर देता है ।
- सदस्य देशों से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया जाता है कि संवेदनशील डेटा के प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त सुरक्षा विकसित की जाए और कुशल जवाबदेही और निवारण तंत्र की पेशकश की जाए।
- यह अनुशंसा बड़े पैमाने पर निगरानी या सामाजिक स्कोरिंग के लिए एआई सिस्टम का उपयोग करने के खिलाफ दृढ़ता से सुझाव देती है।
- इन प्रणालियों का बच्चों पर पड़ने वाले मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक प्रभावों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। सदस्य देशों को न केवल सूचना साक्षरता में निवेश करना चाहिए और उसे बढ़ावा देना चाहिए, बल्कि सामाजिक-भावनात्मक और एआई नैतिक क्षमताओं को भी बढ़ावा देना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त, यूनेस्को यह मापने के लिए तरीके स्थापित करने पर काम कर रहा है कि दिशानिर्देशों को कितनी अच्छी तरह लागू किया जा रहा है।

निष्कर्ष

नीति आयोग द्वारा #AIForAll अभियान की शुरुआत और यह सुनिश्चित करने के लिए अपनाई गई कई व्यावसायिक रणनीतियों के बाद से कि AI को साझा, मानवतावादी मूल्यों के साथ बनाया जाए, भारत ने नैतिक और जिम्मेदार AI शासन के निर्माण में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की है। .

कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों के विकास और कार्यान्वयन को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। सामान्य तौर पर, एआई नैतिक जिम्मेदारी वाले नैतिक प्राणियों में विकसित हो सकता है। एआई नैतिकता। एआई इंजीनियरों और डिजाइनरों को सिस्टम की अवधारणा, डिजाइन और कार्यान्वयन के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

एआई की विश्वव्यापी पहुंच को देखते हुए ऐसी "संपूर्ण समाज" रणनीति "संपूर्ण विश्व" दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए।

शुरुआत करने के लिए एक अच्छी जगह डिजिटल सहयोग पर संयुक्त राष्ट्र सचिव-रोडमैप जनरलों के साथ है। एआई को "भरोसेमंद, मानवाधिकार-आधारित, सुरक्षित और टिकाऊ, और शांति को बढ़ावा देने वाले" तरीके से तैनात करने के लिए, यह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर बहु-हितधारक गतिविधियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

11.सरकारी और निजी क्षेत्र में नैतिक चिंताएँ और दुविधाएँ

दुविधा को एक गंभीर समस्या के रूप में वर्णित किया गया है जो स्पष्ट रूप से संतोषजनक समाधान में असमर्थ है या ऐसी स्थिति है जिसमें समान रूप से असंतोषजनक विकल्पों (डेविस, अरोस्कर , लियाशेंको और सूखा, 1997) के बीच चयन शामिल है। यह अवधारणा स्लेटबोए (1997) द्वारा मूल्यांकित है, जिन्होंने तीन परिस्थितियों को पहचाना जो दुविधा को जन्म दे सकती हैं। इनमें चुनने के लिए दो या दो से अधिक विकल्प शामिल हैं; एक वांछित विकल्प अवांछित परिणाम की ओर ले जाता है; और एक विकल्प जहां कोई नहीं जानता कि क्या करना सही है। उन्होंने दुविधा की पांच परिभाषित विशेषताएं भी सुझाईं जैसे कि व्यस्तता, समान रूप से अनाकर्षक विकल्प, विकल्पों के बारे में जागरूकता, विकल्प की आवश्यकता और कार्यों की अनिश्चितता।

नैतिक दुविधा

नैतिक दुविधाएँ ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें दो विकल्पों के बीच चयन करना होता है, जिनमें से कोई भी स्थिति को नैतिक रूप से संतोषजनक तरीके से हल नहीं करता है। ऐसी परिस्थितियों में, सामाजिक और व्यक्तिगत नैतिक दिशानिर्देश चयनकर्ता के लिए कोई संतोषजनक परिणाम नहीं दे सकते हैं। नैतिक दुविधा एक जटिल स्थिति है जिसमें अक्सर नैतिक अनिवार्यताओं के बीच एक स्पष्ट मानसिक संघर्ष शामिल होता है, जिसमें एक का पालन करने का परिणाम दूसरे की अवज्ञा करना होगा।

सैद्धांतिक अध्ययनों से पता चला है कि एक नैतिक दुविधा ऐसी स्थिति से उभरती है जिसमें सिद्धांतों के परस्पर विरोधी सेटों के बीच चयन की आवश्यकता होती है। इसलिए एक नैतिक दुविधा को एक ऐसी परिस्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके लिए किसी दी गई, आमतौर पर अवांछनीय या भ्रमित करने वाली स्थिति में प्रतिस्पर्धी विचारधाराओं के बीच चयन की आवश्यकता होती है। हितों का टकराव शायद सबसे स्पष्ट उदाहरण है जो सार्वजनिक क्षेत्र के नेताओं को नैतिक दुविधा में डाल सकता है। अन्य प्रकार की नैतिक दुविधाएँ जिनमें सार्वजनिक अधिकारी स्वयं को पा सकते हैं, उनमें निम्नलिखित के बीच संघर्ष शामिल है: सार्वजनिक प्रशासन के मूल्य; संस्थानों के लिए औचित्य; आचार संहिता के पहलू; व्यक्तिगत मूल्य और पर्यवेक्षक या सरकारी निर्देश; पेशेवर नैतिकता और पर्यवेक्षक या सरकारी निर्देश; व्यक्तिगत मूल्य और व्यावसायिक नैतिकता बनाम सरकारी निर्देश; धुंधली या प्रतिस्पर्धी जवाबदेही; और नैतिक व्यवहार के आयाम (क्रैन्स्टन, एहरिच और किम्बर 2002)। एलिस और हार्टले (2001) ने घोषणा की कि नैतिक दुविधाओं का कोई दोषरहित समाधान नहीं है, और निर्णय लेने वाले लोग स्वयं को अपने निर्णयों का बचाव करने की स्थिति में पा सकते हैं। ब्यूचैम्प और चाइल्ड्रेस (2001) ने स्पष्ट रूप से कहा कि नैतिक दुविधाएँ ऐसी

स्थितियाँ हैं जिनमें नैतिक दायित्व की माँग यह प्रतीत होती है कि एक व्यक्ति दो या दो से अधिक वैकल्पिक कार्यों में से प्रत्येक को अपनाता है, फिर भी व्यक्ति सभी आवश्यक विकल्प नहीं निभा सकता है। हालाँकि, सामान्य तौर पर, नैतिक दुविधाएँ कम से कम दो रूपों में होती हैं। या तो कुछ साक्ष्य या तर्क दर्शाते हैं कि कोई कार्य नैतिक रूप से सही है, और कुछ साक्ष्य या दोनों पक्षों के तर्क की ताकत अनिर्णायक है या एक एजेंट का मानना है कि, नैतिक आधार पर, वह दो या अधिक परस्पर अनन्य कार्य करने के लिए बाध्य है।

नैतिक दुविधाओं के प्रकार

नैतिक दुविधाएँ तीन व्यापक श्रेणियों में हैं:

1. व्यक्तिगत लागत नैतिक दुविधाएँ: यह उन स्थितियों से उत्पन्न होती है जिनमें नैतिक आचरण के अनुपालन के परिणामस्वरूप समस्याग्रस्त स्थिति में निर्णय लेने वाले को पर्याप्त व्यक्तिगत लागत चुकानी पड़ती है।
2. सही-बनाम-सही नैतिक दुविधाएं: यह वास्तविक नैतिक मूल्यों के दो या दो से अधिक परस्पर विरोधी सेटों की स्थितियों से उत्पन्न होती है।
3. संयुक्त नैतिक दुविधाएँ: यह तब विकसित होती है जब एक सावधानीपूर्वक निर्णय लेने वाला "करने के लिए सही काम" की खोज में उपरोक्त संकेतित नैतिक दुविधाओं के एकीकरण के संपर्क में आता है।

निम्नलिखित स्थिति में भी नैतिक दुविधाएँ उत्पन्न होती हैं:

i. जब उसके विशेषज्ञ निर्देश उसके अपने व्यक्तिगत मूल्यों के विपरीत हों
ii. समुदाय के सर्वोत्तम हित के लिए काम करना बनाम सरकार के प्रति उत्तरदायी होना।
iii. नैतिक दुविधाएँ तब उत्पन्न हो सकती हैं, जब दो समान रूप से प्रभावशाली विकल्प कुछ स्थितियों में 'सही' के रूप में स्वीकार्य हों।

सरकार में नैतिक चिंता

एक सार्वजनिक अधिकारी जो एक पेशेवर के रूप में कार्य करने का प्रयास करता है, उसके लिए कानून की मांग, उसका कर्तव्य, निष्पक्षता, उचित प्रक्रिया एक उत्पादक आधार प्रदान करती है जिसमें नैतिक दुविधाएं पैदा होती हैं। व्हिसल ब्लोअर्स को इस समस्या का सामना करना पड़ता है क्योंकि जब चल रहा दुर्व्यवहार गंभीर हो तो उनका खुलासा अपराध का कारण बन सकता है।

नैतिक मानक व्यवस्थित नहीं हैं, इसलिए हमेशा उचित व्यवहार के बारे में दुविधा उत्पन्न होने और विसंगतियां उत्पन्न होने की संभावना बनी रहती है।

अन्य अध्ययनों में यह दिखाया जा सकता है कि नैतिक दुविधा उस स्थिति में उत्पन्न होती है जब विकल्प या व्यवहार अवांछनीय होता है और हानिकारक नैतिक परिणाम प्रस्तुत करता है। सही या गलत का स्पष्ट पता नहीं चल पा रहा है.

मुख्य रूप से, लोक सेवकों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाएँ इस प्रकार हैं:

1. प्रशासनिक विवेक
2. भ्रष्टाचार
3. भाई-भतीजावाद
4. प्रशासनिक गोपनीयता
5. सूचना लीक
6. सार्वजनिक जवाबदेही
7. नीतिगत दुविधाएँ

प्रशासनिक विवेक

सार्वजनिक नौकरशाह केवल सार्वजनिक नीति के सूत्रधार नहीं हैं। वे नागरिकों के जीवन से संबंधित निर्णय लेते हैं, उदाहरण के लिए, करों, अस्तित्व और लोगों की बर्खास्तगी के बारे में। ऐसा करने में वे विवेक का प्रयोग करते हैं। मुख्य चिंता यह है कि उन्हें नैतिक दुविधाओं से बचने के लिए निर्णय लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में, सामान्य कल्याण का प्रचार प्रशासनिक विवेक के उपयोग या शोषण पर निर्भर करता है।

यह तथ्यात्मक है कि विधायिका द्वारा निर्धारित नियमों और विनियमों के भीतर और निर्धारित प्रक्रियाओं के भीतर, सार्वजनिक अधिकारी के लिए अपने विवेक का उपयोग करने के पर्याप्त अवसर हैं। जब विकल्पों का सामना करना पड़ता है तो सार्वजनिक अधिकारी की पसंद एक नैतिक समस्या बन जाती है, यह विकल्प समाज के केवल एक छोटे वर्ग के लिए स्वीकार्य हो सकता है। समस्या यह है कि कई विकल्पों में से कार्रवाई के एक मार्ग का चयन अक्सर व्यक्तिगत पसंद, राजनीतिक या अन्य संघों, या यहां तक कि व्यक्तिगत अलंकरण के आधार पर किया जाता है, इस प्रकार पहचाने गए तथ्यों की अनदेखी की जाती है और इस प्रकार तर्कसंगत निर्णय लेने की संभावना होती है। यह अच्छी तरह से हो सकता है कि सभी निर्धारित नियमों, विनियमों और

प्रक्रियाओं का पालन किया जाए, लेकिन विवेकाधीन विकल्प को सिद्धांतहीन या कपटपूर्ण भी माना जा सकता है।

भ्रष्टाचार

सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार बड़ा मुद्दा है. अधिकांश नौकरशाह सार्वजनिक कार्यालय के लिए आवश्यक उच्च मानकों को बनाए रखते हैं और सामान्य कल्याण को बढ़ावा देने के लिए उत्साही होते हैं। हालाँकि, सार्वजनिक अधिकारियों के नैतिक मानक सीधे तौर पर समग्र रूप से समाज से संबंधित होते हैं । यदि जनता स्वीकार करती है कि किसी सार्वजनिक अधिकारी से त्वरित प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए कुछ मौद्रिक या अन्य प्रोत्साहन आवश्यक है, और अधिकारी प्रोत्साहन स्वीकार करता है, तो अधिकारियों और जनता के नैतिक आचरण के मानक वास्तव में इस बिंदु से सामंजस्य में हैं जनता के नजरिये से. निजी हितों द्वारा सार्वजनिक अधिकारियों का भ्रष्टाचार आमतौर पर अप्रत्यक्ष होता है, उदाहरण के लिए, जनता द्वारा दायित्व के तहत अधिकारी को उपकार करना और वह धीरे-धीरे अपनी सार्वजनिक निष्ठाओं को उन लोगों के प्रति प्रतिस्थापित कर देता है जो उस पर उपकार करते हैं । निजी हितों के परिणामस्वरूप भ्रष्ट आचरण के संबंध में सार्वजनिक अधिकारी के सामने आने वाली नैतिक दुविधा मुख्य रूप से स्थिति पर उनकी प्रतिक्रिया से संबंधित है। यदि कोई भ्रष्ट आचरण या भ्रष्टाचार का प्रयास उजागर होता है, तो यह बहुत संभव है कि अधिकारी की व्यक्तिगत वफादारी या पार्टी के राजनीतिक रिश्ते उसकी आधिकारिक जिम्मेदारियों के साथ टकराव में हों।

प्रशासनिक गोपनीयता

सरकारी कार्यालयों में, एक और प्रमुख नैतिक दुविधा सार्वजनिक व्यवसाय का गुप्त आचरण है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि गोपनीयता अनैतिक व्यवहार को छिपाने का अवसर प्रदान कर सकती है । गोपनीयता भ्रष्टाचार की सहयोगी है और भ्रष्टाचार हमेशा गुप्त तरीके से किया जाता है। आम तौर पर यह माना जाता है कि लोकतंत्र में लोगों को सरकार के कामकाज को समझने का अधिकार है और सार्वजनिक मामलों का प्रशासन खुले तौर पर संचालित होना जनता के हित में होगा।

भाई-भतीजावाद

सरकारी दफ्तरों में यह बहुत आम बात है. भाई-भतीजावाद सार्वजनिक पदों पर रिश्तेदारों और/या दोस्तों की नियुक्ति है और परिणामस्वरूप, योग्यता सिद्धांत की अनदेखी करने से सार्वजनिक सेवा की गुणवत्ता में गिरावट आ सकती है। इससे विश्वास को ठेस पहुंचती है और इसके परिणामस्वरूप अनैतिक प्रबंधन होता है, जिसका कारण कुछ चुनिंदा लोगों की नीति-निर्माता के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों के कारण नियंत्रण उपायों को कमजोर करने की क्षमता और उन्हें आसानी से बर्खास्त नहीं किए जाने या दूसरों द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किए जाने के कारण होता है। यह निजी और सरकारी दोनों क्षेत्रों में होता है। भाई-भतीजावाद में शामिल निजी क्षेत्र

की कंपनियां आंतरिक नाराजगी का जोखिम उठाती हैं। कार्यबल अपना सर्वश्रेष्ठ देना बंद कर सकते हैं और अपने वर्तमान स्तर पर करियर स्वीकार कर सकते हैं। इससे भी बदतर, वे किसी अन्य स्थान पर जा सकते हैं जहां ऊपर की ओर गतिशीलता संभव है। किसी भी स्थिति में, वर्तमान कंपनी हार जाती है। निजी क्षेत्र में भाई-भतीजावाद का एक अन्य उपोत्पाद कम-योग्य कर्मियों को दूसरों के लिए बेहतर अनुकूल पदों पर रखकर प्रतिभा पूल को कमजोर करने की क्षमता है (डब्ल्यू डेविस फॉल्सम, रिक बौलवेयर, 2009)। यह कहा जा सकता है कि जिनकी नियुक्ति इस विचार से की जाती है कि वे अपने नियुक्ति प्राधिकारी के मानकों और विचारों के अनुरूप होंगे, वे समस्याग्रस्त साबित हो सकते हैं। संबंधित व्यक्तियों की सापेक्ष योग्यता को ध्यान में रखे बिना, एक व्यक्ति के साथ दूसरे व्यक्ति का पसंदीदा व्यवहार , किसी व्यक्ति के उत्पीड़न के अलावा और कुछ नहीं दर्शाता है।

सूचना लीक

देखा गया है कि सरकारी अधिकारी इतने लापरवाह होते हैं कि सूचनाएं लीक होने के मामले सामने आते हैं। आधिकारिक जानकारी अक्सर संवेदनशील प्रकृति की होती है जैसे कि लंबित कर वृद्धि, भूमि का पुनर्वितरण, कर्मचारियों की लागत में कटौती जिससे जानकारी का खुलासा अशांति, भ्रष्ट आचरण या कुछ व्यक्तियों के लिए अनुचित वित्तीय लाभ का कारण बन सकता है। सार्वजनिक घोषणा से पहले किसी तारीख पर आधिकारिक जानकारी लीक करना प्रक्रियात्मक नुस्खों का अपमान है और इसके परिणामस्वरूप नैतिक दुविधा हो सकती है।

सार्वजनिक जवाबदेही

सार्वजनिक अधिकारियों पर प्रमुख सार्वजनिक नीतियों को लागू करने की बड़ी ज़िम्मेदारी है। उन्हें अपने आधिकारिक कार्यों के लिए अपने वरिष्ठों, अदालतों और जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। हालाँकि, उनके लिए निर्धारित प्रक्रियाओं, योग्यता की आड़ और यहां तक कि राजनीतिक पदाधिकारियों के पीछे छिपना संभव है।

नीतिगत दुविधाएँ

सरकारी निकायों में नीति निर्माताओं को अक्सर परस्पर विरोधी जिम्मेदारियों से चुनौती मिलती है। उनकी अपने मालिकों के साथ-साथ समाज के प्रति भी निश्चित निष्ठा होती है। उन्हें दूसरों की ओर से और उनके हित में कार्य करने की स्वतंत्रता है, लेकिन उन्हें अपने कार्यों के लिए दूसरों, अपने वरिष्ठों और समाज के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। राजनीतिक प्रक्रिया का सम्मान करने का अधिकारी का दायित्व नीति निर्माण की वस्तुओं के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है, इस पर उसके दृष्टिकोण से विरोधाभास हो सकता है। यह समझा

जा सकता है कि सार्वजनिक अधिकारी की दुविधा सार्वजनिक हित के बारे में उसकी राय और कानून की आवश्यकताओं के बीच टकराव है।

अन्य समस्या क्षेत्र: संभावित संघर्ष के इन क्षेत्रों के अलावा, अन्य समस्या क्षेत्र भी हैं जिनसे नैतिक दुविधाएं उत्पन्न हो सकती हैं जैसे कि लोक सेवकों की राजनीतिक गतिविधि जिसके परिणामस्वरूप उन अधिकारियों की ओर से विभाजित निष्ठा होती है जो एक विशिष्ट राजनीतिक दल के विचारों से सहमत होते हैं। अन्य अधिक महत्वहीन नैतिक समस्याएं, जैसे बीमार अवकाश विशेषाधिकारों का दुरुपयोग, विस्तारित चाय अवकाश और सामान्य रूप से कार्यालय नियमों का उल्लंघन।

प्रशासन में नैतिक दुविधा को हल करने की प्रक्रिया:

एक नैतिक दुविधा को सार्वजनिक और निजी दोनों कंपनियों के अधिकारियों के लिए एक जटिल मामले के रूप में देखा जाता है और यह जैसी दिखती है, उससे कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण है। इन दुविधाओं को इसकी प्रस्तुति की प्रारंभिक स्थिति के आधार पर हल नहीं किया जा सकता है। निर्णय लेने वाले को कई चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ता है जिसमें उसे परस्पर अनन्य विकल्पों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से एक विकल्प को चुनने का मतलब दूसरे का विरोध करना है जो समान रूप से महत्वपूर्ण है (रैपोपोर्ट, 1960)। इसका कारण यह है कि समस्याओं के विपरीत, दुविधाओं को उन शर्तों में हल नहीं किया जा सकता है जिनमें उन्हें शुरू में निर्णय-निर्माता के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

फिर भी सभी विकल्पों को व्यवस्थित और सुगम तरीके से संशोधित और पुनर्निर्मित करके एक दुविधा से भी उचित तरीके से निपटा जा सकता है। नैतिक दुविधाओं को हल करने के लिए, नैतिक दुविधाओं से निपटने की प्रक्रिया को आत्मसात करने और पुनर्व्यवस्थित करने के लिए तार्किक तर्क सेटों का एक क्रम प्रस्तावित है। वे हैं:

जवाबदेही

मंत्रियों के प्रति प्रशासन की वफादारी विधायिका के प्रति जवाबदेह और जिम्मेदार होने की उनकी जिम्मेदारी पर आधारित है जो लोगों की इच्छा और उनके सामान्य हित के प्रति जवाबदेह है। ऐसे में सिविल सेवकों पर निष्पक्षता और विवेक की भावना दिखाना और अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रदर्शन में अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को बाहर रखना एक आवश्यक नैतिक कर्तव्य है।

कानून का शासन और वैधता का सिद्धांत

कानून का शासन राजनीति और समाज के लिए केंद्रीय और सार्वभौमिक है। अधिकार का प्रयोग करने के लिए वैधता के सिद्धांत का सम्मान और आज्ञापालन एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कानून नैतिकता के लिए न्यूनतम मानक स्थापित करता है। सिद्धांतहीन आचरण स्पष्ट रूप से कानून का उल्लंघन करता है। इस प्रकार

प्रवर्तन के लिए, दुविधा की स्थिति में कानून को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। व्यावसायिक अखंडता: प्रशासनिक नौकरी में, पेशेवर नैतिकता को परिभाषित करने वाले कुछ मानकों के साथ ज्ञान और विशेषज्ञता का उपयोग किया जाना चाहिए, जैसे सेवाओं के वितरण में भ्रष्टाचार से बचना।

जवाबदेही

अपने नागरिकों के लिए सरकार का खुलापन राजनीतिक अर्थव्यवस्था में प्रमुख मुद्दा है। इस संबंध में, राज्य की कार्रवाई में नैतिक तर्क में यह शामिल है कि सार्वजनिक संस्थान समाज के प्रति उत्तरदायी हों और लोगों की आवश्यकताओं और मांगों पर ध्यान दें, सेवाओं तक पहुंच की सुविधा प्रदान करें और स्थायी मानव और सामाजिक प्रगति के लिए एक सहायक वातावरण बनाएं।

निजी संस्थानों में नैतिक चिंता:

निजी कंपनियों में, नैतिकता शासन, नैतिकता सुधार, आचार संहिता, नैतिकता संहिता और नैतिकता नियम जैसे नैतिक सिद्धांत शुरू में विकसित नहीं किए गए थे। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ, कई राज्यों ने नैतिकता मानकों के अनुपालन पर कुछ स्तर का नियंत्रण खो दिया है, और, अक्सर, श्रम कोड और पर्यावरण मानकों के उल्लंघन का आकलन करने और यहां तक कि मंजूरी देने की क्षमता भी खो दी है। हालाँकि, वैश्वीकरण ने कंपनियों के लिए नए अवसर पैदा किए हैं, जो अब राजस्व बढ़ाने के लिए अपने उत्पादन को दुनिया के उन हिस्सों में स्थानांतरित कर सकते हैं जहां श्रम की लागत सस्ती है।

निजी कंपनियों को भी नए प्रतिबंधों का सामना करना पड़ रहा है. जैसे-जैसे लोग अधिक जानकार हो गए हैं, ग्राहकों की चिंता धीरे-धीरे कंपनियों के नैतिक, पर्यावरण और श्रम मानकों पर केंद्रित हो गई है, जो कंपनियों को मानवाधिकार उल्लंघनों के बारे में शिकायत करने, कंपनियों के खिलाफ प्रदर्शन करने, कंपनी विरोधी स्वेटशॉप संगठनों का समर्थन करने के लिए लिखकर और कॉल करके वैश्विक बन गई हैं। , शेयरधारक संकल्प दाखिल करना, और कुछ मामलों में, उन उत्पादों और कंपनियों का बहिष्कार करना जो कथित तौर पर बुनियादी नैतिकता का सम्मान नहीं कर रहे हैं। इन नैतिक उल्लंघनों में बाल श्रम , कर्मचारी उत्पीड़न और दुर्व्यवहार से संबंधित मुद्दे और गैर-भेदभाव कानून, संघ की स्वतंत्रता, सामूहिक सौदेबाजी समझौते, स्वास्थ्य और सुरक्षा मानक और पर्याप्त वेतन और काम के घंटे शामिल हैं, लेकिन ये इन्हीं तक सीमित नहीं हैं।

ग्राहकों की बढ़ती नैतिक चिंता ने उस कारोबारी माहौल को तेजी से और पूरी तरह से नया रूप दे दिया है जिसमें कंपनियां काम करती हैं। प्रतिष्ठा अब अधिक महत्वपूर्ण हो गई है जो न केवल किसी कंपनी की आर्थिक जीत, बल्कि उसके अस्तित्व की भी कुंजी बनती है। यह सर्वविदित है कि पिछले दशकों में कंपनियों ने अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने और अपने ग्राहकों को एक निश्चित स्तर के नैतिक सिद्धांतों के पालन का आश्वासन देने के लिए सावधानीपूर्वक प्रयास किए हैं।

निजी क्षेत्र के नैतिकता मानकों को उपभोक्ता की आवश्यकता को पूरा करने के लिए आकार दिया गया है। इसे प्रभावी बनाने के लिए, निजी क्षेत्र मानवाधिकार मानकों का पालन करने के लिए दायित्वों की एक सूची विकसित करता है, और कॉर्पोरेट जिम्मेदारी या कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) आंदोलन की शुरुआत करता है। कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी व्यवसायों की नैतिक रूप से व्यवहार करने और सभी प्रासंगिक हितधारकों के साथ काम करके उनके जीवन को ऐसे तरीकों से बढ़ाने के लिए सतत आर्थिक विकास में योगदान करने की प्रतिबद्धता है जो व्यवसाय, सतत विकास एजेंडा और समग्र रूप से समाज के लिए अनुकूल हो।

हालाँकि कुछ कंपनियों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाएँ उनके उद्योग या कंपनी के लिए विशिष्ट हो सकती हैं, अन्य प्रकार के नैतिक मुद्दे सभी प्रकार की कंपनियों के लिए आम हैं। समझदारी के साथ नैतिक निर्णयों से निपटना छोटे व्यवसायों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। क्योंकि यदि इन मुद्दों को सही ढंग से हल नहीं किया गया तो संभावित रूप से विनाशकारी प्रभाव हो सकते हैं। नियोक्ताओं के लिए नैतिक विचार का एक क्षेत्र यह है कि श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा हितों के साथ व्यय नियंत्रण को कैसे संतुलित किया जाए। विनिर्माण संयंत्र और अन्य कार्यस्थल जहां कर्मचारी खतरनाक उपकरणों का उपयोग करते हैं या शारीरिक रूप से कठिन काम में संलग्न होते हैं, वहां मजबूत सुरक्षा मानक होने चाहिए जो न केवल संघीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, बल्कि दुर्घटनाओं को खत्म करने को भी प्राथमिकता देते हैं। यहां तक कि मानक कार्यालय कार्यस्थल भी उन कर्मियों के स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करते हैं जिन्हें पूरे दिन बैठने या खड़े रहने के लिए कहा जाता है। दुर्भाग्य से, कुछ निजी संस्थान पैसे बचाने के लिए सुरक्षा नियंत्रण, उपकरण और प्रशिक्षण में कटौती करते हैं। यदि बड़ी दुर्घटनाएँ घटित होती हैं तो यह अनैतिक और संभावित रूप से लंबे समय में हानिकारक है।

यह देखा गया है कि 21वीं सदी की शुरुआत में तकनीकी प्रगति और इंटरनेट के विकास ने निजी कंपनियों के लिए कई नैतिक दुविधाएं पैदा की हैं। कंपनी प्रबंधकों को मानकों को बनाए रखते हुए श्रमिकों की गोपनीयता और स्वतंत्रता को संतुलित करना होगा जिसके लिए आवश्यक है कि कंपनी प्रौद्योगिकी का उपयोग वैध व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए हो। कुछ कंपनियाँ कर्मचारी कंप्यूटरों और कार्य खातों से सभी ऑनलाइन उपयोग और ईमेल संचार की निगरानी करती हैं। किसी कंपनी के पास यह अधिकार हो सकता है, लेकिन उसके नेताओं को श्रमिकों के बीच गोपनीयता और संप्रभुता के बारे में संभावित चिंता को समझने की जरूरत है।

एक अन्य प्रमुख नैतिक चिंता पारदर्शिता है। दुनिया भर में, कई व्यवसाय और लेखांकन घोटाले हुए हैं, जिससे कंपनियों को खुलेपन और पारदर्शिता के साथ काम करना पड़ा। सार्वजनिक निगमों के लिए, इसमें अनिवार्य वित्तीय लेखांकन रिपोर्टों पर ईमानदार, सटीक और संपूर्ण रिपोर्टिंग शामिल है। बड़े और छोटे व्यवसायों के

लिए, पारदर्शिता में विपणन संदेशों सहित संचार संदेश शामिल हैं, जो गलत धारणा के लिए खुले नहीं हैं और जो स्पष्ट रूप से कंपनी के इरादों और उसके संदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उचित कामकाजी स्थितियाँ: निजी कंपनियों से आम तौर पर व्यावसायिक माहौल में अपने कर्मियों के लिए अनुकूल कामकाजी परिस्थितियाँ प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन कर्मचारी उपचार के प्रति जिम्मेदार होने का मतलब आम तौर पर उच्च श्रम लागत और संसाधन उपयोग होता है। काम के लिए उचित वेतन और लाभ एक निष्पक्ष कार्यस्थल की अधिक स्पष्ट विशेषताएं हैं । एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व एक गैर-भेदभावपूर्ण कार्य वातावरण का प्रावधान है, जिसमें फिर से विविधता प्रबंधन और प्रशिक्षण की लागत शामिल हो सकती है। कार्यस्थल में नैतिकता और मूल्य-आधारित दुविधाओं का प्रबंधन करना मुश्किल होता है जब श्रमिकों को अपने स्वयं के दर्शन के अनुसार सही और गलत कार्यों के बीच चयन करना होता है । कार्यस्थल नैतिकता नीतियों को लागू करने वाले आशावादी नियोक्ता आमतौर पर कार्यबल में राय, मूल्यों और संस्कृति की विविधता के कारण उत्पन्न होने वाले संभावित हितों के टकराव के लिए तैयार होते हैं। हालाँकि, कार्यस्थल में नैतिक मुद्दों से निपटने के लिए उन मामलों के प्रति एक स्थिर और सतर्क दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो संभावित रूप से असुरक्षित या गैरकानूनी हो सकते हैं।

नैतिक दुविधाओं को सफलतापूर्वक संभालने के लिए, निजी कंपनियाँ इन दो प्रभावी तरीकों में से किसी एक का अभ्यास करती हैं, वे हैं नैतिक सापेक्षवाद और नैतिक सार्वभौमिकता। नैतिक सापेक्षवाद का अर्थ है किसी देश में उसकी संस्कृति या नैतिकता का सख्ती से पालन करते हुए व्यापार करना, उदाहरण के लिए, यदि रिश्वतखोरी किसी विशिष्ट मेजबान देश में व्यापार करने की संस्कृति या नैतिकता है तो जीवित रहने के लिए, बहुराष्ट्रीय कंपनियों को स्थानीय का पालन करना होगा संस्कृति या नैतिकता. जहां तक नैतिक सार्वभौमिकता का अर्थ है कि नैतिक मानक समान हैं और यह उन सभी देशों पर लागू होता है जहां बहुराष्ट्रीय कंपनियां इसके साथ व्यापार कर रही हैं। नैतिक सापेक्षवाद बहुराष्ट्रीय कंपनियों को मेज़बान देश के बाज़ार में बिना किसी बाधा के टिके रहने में मदद कर सकता है, लेकिन इसके नुकसान यह होंगे कि यदि बाल श्रम मेज़बान देश की संस्कृति बन जाता है, तो यह श्रम अधिकारों और अन्य जैसे मानव अधिकारों के कानून के ख़िलाफ़ हो सकता है। जहां कंपनी की छवि पर बहुत सारे आलोचक खड़े होंगे। नैतिक सार्वभौमिकता का अधिक लाभ है क्योंकि इसे उच्च नैतिक जिम्मेदारी माना जाता है क्योंकि कहा जाता है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ मानवाधिकारों का पालन करने में अधिक सख्त हैं और यह अधिक नैतिक है। जहां तक कमियों का सवाल है, कुछ मामलों में, यह सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को जन्म दे सकता है, बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लगता है कि कुछ देशों की संस्कृति अनैतिक और घटिया है, इसलिए कुछ संघर्ष उत्पन्न हो सकते हैं।

12 नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण

' **नैतिकता , मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण** ' शीर्षक विषय से संबंधित है। यह 'नैतिकता ' पर हमारी श्रृंखला का हिस्सा है। अधिक लेखों के लिए आप यहां क्लिक कर सकते हैं।

नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण क्या हैं ?

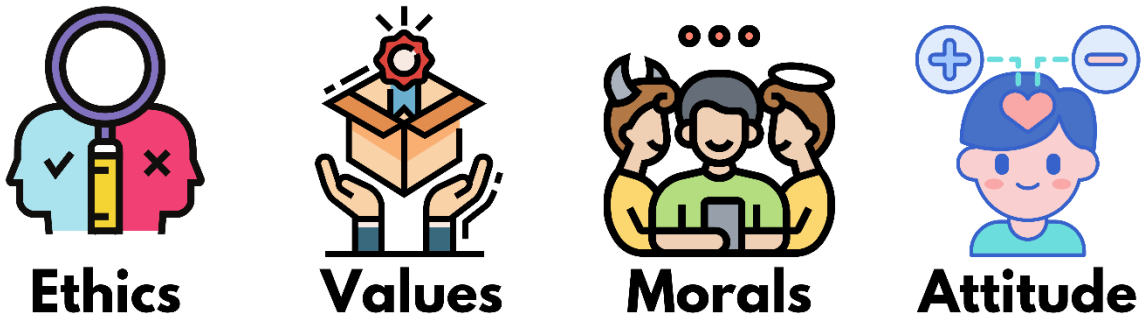

पूरा पाठ्यक्रम और पेपर चार-शब्दों के इर्द-गिर्द घूमता है

1. नीति
2. मान
3. नज़रिया
4. नैतिकता

सबसे पहले, हम नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण को परिभाषित करेंगे।

इन चार विषयों के बारे में सीखना क्यों महत्वपूर्ण है? इसका सरल उत्तर यह है कि दृष्टिकोण, मूल्य, नैतिकता और नैतिकता मानसिक संरचनाएं हैं जो हमारे व्यवहार को निर्देशित करती हैं। वे हमारी पसंद को प्रभावित करने, हमारे निर्णय लेने का मार्गदर्शन करने और हमारे व्यवहार को निर्देशित करने के लिए जिम्मेदार हैं।

ईवीएमए कैसे परस्पर संबंधित हैं?

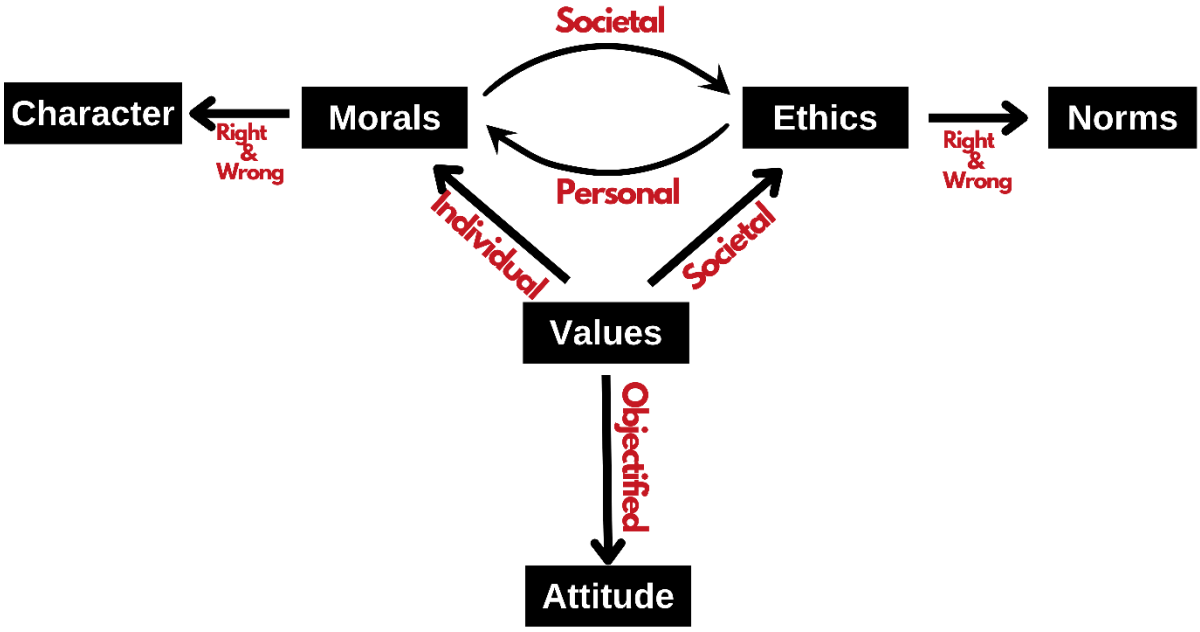

1. <u>मूल्य</u>

- मूल्य वह मूल्य और महत्व है जो हम (व्यक्ति या समाज के रूप में) किसी चीज़ को आवंटित करते हैं।
- वे **व्यवहार के सामान्य निर्धारक हैं** (अर्थात् वे व्यवहार के विशिष्ट निर्धारक नहीं हैं)। सरल शब्दों में, किसी व्यक्ति का मूल्य उसके व्यवहार की गारंटी नहीं देता है।
- हालाँकि, **मूल्य किसी विशिष्ट वस्तु से बंधे नहीं हैं** (उदाहरण के लिए शांति का मूल्य किसी वस्तु से बंधा नहीं है और अमूर्त है)।
- मूल्य जीवन में प्राथमिकता निर्धारित करने में मदद करते हैं।
- वे नैतिकता और सदाचार का आधार बनते हैं।

2. <u>मनोवृत्ति</u>

- जब **मूल्यों को वस्तुनिष्ठ बना दिया जाता है (अर्थात किसी वस्तु से बांध दिया जाता है)** , तो वे दृष्टिकोण बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में, दृष्टिकोण विशिष्ट वस्तुओं पर लागू मूल्य हैं।
- यह किसी वस्तु/घटना/लोगों या विचारों पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया को संदर्भित करता है।
- दृष्टिकोण **व्यवहार के विशिष्ट भविष्यवक्ता होते हैं।** (स्पष्टीकरण : यदि हमारे पास किसी व्यक्ति के मूल्यों और दृष्टिकोण को जानने के बीच कोई विकल्प है, तो हम किसी व्यक्ति के व्यवहार की

भविष्यवाणी करने के लिए किसे जानना पसंद करेंगे ? उत्तर रवैया है। उदाहरण के लिए शाम शांति को महत्व देता है लेकिन उसका रवैया पाकिस्तान विरोधी है। इस मामले में, वह ऐसा करेगा पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध से मुझे कोई आपत्ति नहीं)

- यह एक निश्चित तरीके से कार्य करने या प्रतिक्रिया करने के लिए मानस की तत्परता को निर्धारित करता है।

3. नैतिकता

- नैतिकता एक व्यक्ति द्वारा धारण किए गए मूल्य हैं जो उसे सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं।
- वे व्यक्तियों के चरित्र का निर्धारण करते हैं।
- इसमें दो चीजें हैं.
    - वे एक व्यक्ति के पास होते हैं.
    - वे व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं।
- नोट- सभी मूल्य सही और गलत का निर्धारण करने में मदद नहीं करते। उदाहरण के लिए,
    - मूल्य के रूप में सुंदरता : यदि कोई व्यक्ति सुंदर नहीं है तो इसे सही या गलत नहीं माना जाएगा। अत: यहां नैतिकता की अवधारणा लागू नहीं होती।
    - मूल्य के रूप में ईमानदारी: यदि कोई ईमानदार नहीं है तो उसे गलत माना जाएगा। अत: यहां नैतिकता की अवधारणा लागू होती है।
- नैतिकता को चलाने वाली मूल शक्ति विवेक और अहंकार-आदर्श है।

नोट: 'क्या न करें ' के बारे में विवेक हमारी आंतरिक आवाज़ है। ' क्या करें ' के बारे में आंतरिक आवाज़ें अहंकार-आदर्श कहलाती हैं।

- **विवेक** : आंतरिक आवाज जो हमारे कार्यों का मार्गदर्शन करती है और हमें गलत कार्यों से रोकती है।
- **अहं-आदर्श** : वे लक्ष्य जिन्हें पोषित किया जाता है और इसलिए उनका पीछा किया जाना चाहिए।

4. नैतिकता

- नैतिकता समग्र रूप से समाज द्वारा धारण किए गए मूल्य हैं और सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं।

- वे समाज के मानदंड निर्धारित करते हैं।
- नैतिकता क्या नहीं है?
    - नैतिकता धर्म नहीं है, क्योंकि बहुत से लोग नास्तिक हैं, लेकिन नैतिकता सभी पर लागू होती है।
    - कानून का पालन न करना ही नैतिकता है. कानून को कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मानकों को डिजाइन करने या लागू करने में कठिनाई हो सकती है और नई समस्याओं का समाधान करने में देरी हो सकती है। उदाहरण के लिए , वैवाहिक बलात्कार अवैध नहीं है। हालाँकि, इसे अनैतिक माना जाता है।
- जो चीज़ नैतिक रूप से शुरू हुई वह नैतिक बन सकती है।
    - राजा राम मोहन राय का उदाहरण - उनकी व्यक्तिगत मान्यता थी कि सती महिलाओं के खिलाफ अपराध का प्रतिनिधित्व करती है। हालाँकि, उस समय सती प्रथा नैतिक और सामाजिक आदर्श थी। अत: राजा राममोहन राय उस समय **अपनी नैतिकता से निर्देशित थे।** उन्होंने प्रयास करके पूरे समाज को उस मूल्य को स्वीकार करने के लिए राजी किया। समाज धीरे-धीरे बदला और सती प्रथा को गलत मानते हुए इसे अनैतिक बना दिया।
- कुछ नैतिक भी नैतिक बन सकता है।
    - मान लीजिए कि मैं एक सरकारी डॉक्टर हूं और मेरी नैतिक स्थिति है कि मैं उन पुरुष मरीजों का इलाज नहीं करूंगा जो महिलाओं के खिलाफ अत्याचार करते हैं। लेकिन नैतिकता कहती है कि डॉक्टरों को उन सभी व्यक्तियों का इलाज करना चाहिए जो उनके पास इलाज के लिए आते हैं। इसलिए, अगर मैं उनका इलाज करने से इनकार करता हूं, तो मेरे खिलाफ शिकायतें की जाएंगी और अगर मैंने ऐसा व्यवहार जारी रखा तो निलंबन की धमकी दी जाएगी । दबाव में, मैं हर बार पुरुष रोगियों का इलाज करते समय नैतिक अपराध बोध के साथ उनका इलाज करना शुरू कर देती थी। लेकिन धीरे-धीरे, मैं या तो **अपनी नैतिकता बदल दूंगा या नौकरी छोड़ दूंगा** क्योंकि कोई व्यक्ति इस तरह के नैतिक अपराध के साथ नहीं जी सकता।

हालाँकि, किसी को नैतिक होने को समाज द्वारा स्वीकार की जाने वाली बातों से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। अपवाद तब हो सकता है जब समाज या उसका प्रभावशाली वर्ग नैतिक रूप से भ्रष्ट हो जाए। उदाहरण के लिए, नाजी जर्मनी, जहां यहूदियों के नरसंहार को गलत नहीं माना जाता था। इसी प्रकार, समाज के प्रभावशाली सदस्यों की स्वीकृति के कारण भारत में जाति व्यवस्था सहस्राब्दियों से जारी है।

<u>तुलना: नैतिकता बनाम नैतिकता</u>

पैरामीटर	नीति	नैतिकता
यह क्या है?	नैतिकता समग्र रूप से समाज द्वारा धारण किए गए मूल्य हैं और सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं।	नैतिकता एक व्यक्ति द्वारा धारण किए गए मूल्य हैं जो उसे सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं।
सूत्रों का कहना है	बाहरी (यानी सामाजिक मानदंड)	आंतरिक (यानी आंतरिक मूल्य)
हम अनुसरण क्यों करते हैं?	क्योंकि समाज कहता है कि यह करना सही है।	क्योंकि हम किसी चीज के सही या गलत होने में विश्वास करते हैं।
अगर हम भटक गए तो क्या होगा?	इससे सामाजिक बहिष्कार हो सकता है।	इससे अपराधबोध या पश्चाताप की भावना पैदा हो सकती है।
FLEXIBILITY	चूँकि यह एक सामूहिक प्रस्ताव है, यह आम तौर पर उद्देश्यपूर्ण है।	नैतिकता अत्यधिक व्यक्तिपरक होती है क्योंकि वे हर व्यक्ति में अलग-अलग होती है।

नोट: मूल्य और निर्णय

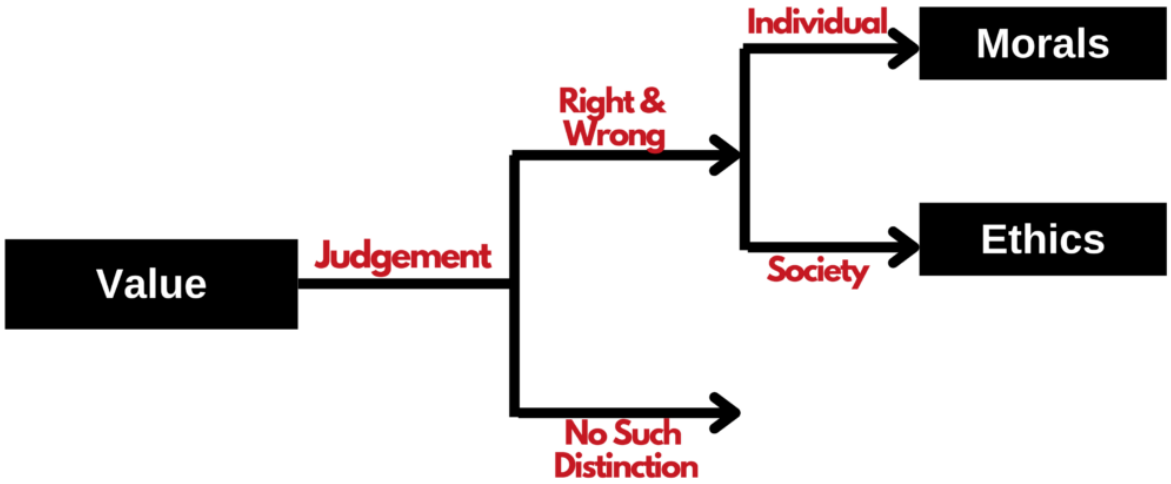

मूल्य में हमेशा निर्णय का तत्व होगा , लेकिन वह निर्णय **हमेशा सही और गलत के रूप में नहीं हो सकता है** । उदाहरण के लिए,

1. **सत्य** : इसमें सही और गलत का निर्णय किया जा सकता है।
2. **कला** : एक व्यक्ति यह निर्णय कर सकता है कि कला इंद्रियों के लिए अधिक सुखदायक है या कम। लेकिन कला सही है या गलत इसके बारे में हम कोई फैसला नहीं कर सकते। (एमएफ हुसैन ने भी यही बात कही कि कला के निर्णय में नैतिकता और नीतिशास्त्र नहीं आते क्योंकि कला में हम यह नहीं कह सकते कि यह सही है या गलत। हालांकि हम यह कह सकते हैं कि मुझे वह कला पसंद नहीं है , लेकिन कर सकते हैं यह मत कहो कि यह गलत कला है)।

अन्य अवधारणाएँ

1. विश्वास

- विश्वास किसी विशेष व्यक्ति या समूह द्वारा रखे गए **विचार और दृष्टिकोण हैं।**
- इनमें सच्चे और सत्यापन योग्य तथ्यों के साथ-साथ दंतकथाएं, मिथक, लोककथाएं और अंधविश्वास शामिल हैं।
- वे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें आशा देते हैं।
- विश्वास एक सांस्कृतिक समूह की नींव रखते हैं। वे अक्सर उस समूह के लिए अदृश्य होते हैं जो उन्हें धारण करता है।

- हालाँकि, **मान्यताओं को चुनौती दी जा सकती है,** और परिधीय मान्यताओं को बदला भी जा सकता है।

2. मानदंड

- मानदंड **सामाजिक अपेक्षाएं हैं** जो व्यवहार का मार्गदर्शन करती हैं।
- मानदंडों के अनुरूप न होने पर सजा का प्रावधान है। सज़ा नीची दृष्टि से देखे जाने, उपहास करने, बहिष्कार करने, प्रायश्चित करने आदि के रूप में हो सकती है। इसलिए, मानदंड किसी व्यक्ति पर सामाजिक नियंत्रण या सामाजिक दबाव का एक रूप है, जो एकरूपता पैदा करता है और विचलित व्यवहार की जाँच करता है।
- बाद के चरण में, जब समाज इन मानदंडों को संहिताबद्ध करने का निर्णय लेता है, तो वे कानून बन जाते हैं।

नैतिकता के निर्धारक

नैतिकता और नैतिकता सार्वभौमिक नहीं हैं. वे क्षेत्र, समय आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। नैतिकता के प्रमुख निर्धारक हैं

- **धर्म** : धार्मिक पाठ्यपुस्तकें इस सवाल से निपटती हैं कि एक व्यक्ति को कैसा व्यवहार करना चाहिए और समाज को कैसा होना चाहिए। उदाहरण के लिए, जैन धर्म में मांसाहार अनैतिक है, जबकि इस्लाम में ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं है।
- **संस्कृति** : संस्कृति के अनुसार मूल्य भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे : पश्चिमी संस्कृतियाँ = व्यक्तिवादी | भारतीय = सार्वभौमिकता और बहुलता
- **कानून और संविधान:** कानून और संविधान अक्सर नैतिक मानकों को शामिल करते हैं जिनका अधिकांश नागरिक समर्थन करते हैं।
- **नेतृत्व** : किसी समाज या संगठन या राष्ट्र का नेतृत्व उसके अनुयायियों या प्रशंसकों के आचरण को निर्धारित करने में भी मदद करता है। उदाहरण के लिए, लोकतांत्रिक, उदार, धर्मनिरपेक्ष और सहिष्णु परंपरा आधुनिक भारतीय समाज की उपहार निर्माता रही है।
- **दर्शन** : विभिन्न दार्शनिक और विचारक नैतिकता के विभिन्न सेटों की सदस्यता लेते हैं।
- **भूगोल** : पश्चिम बंगाल के ब्राह्मण मछली (एक मांसाहारी आहार) खाते हैं क्योंकि भूगोल उन्हें जीवित रहने के लिए मछली खाने का निर्देश देता है

- **आर्थिक कारक** : साम्यवादी समाजों में मुनाफाखोरी को अनैतिक माना जाता है, जबकि पूंजीवादी समाजों में मुनाफाखोरी को नैतिक माना जाता है।

नैतिकता के आयाम

इसे दो पहलुओं से देखा जाना चाहिए

1. भारतीय

- **आश्रम धर्म** : इस दर्शन के अनुसार, **जीवन को 4 आश्रमों में विभाजित किया गया है** और व्यक्ति का आचरण और **व्यवहार उन आश्रमों के अनुसार होना चाहिए** । ये 4 आश्रम हैं
    - **ब्रह्मचर्य आश्रम** : इस चरण में व्यक्ति को सीखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए
    - **गृहस्थ आश्रम (पारिवारिक चरण)** : व्यक्ति को पारिवारिक दायित्वों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
    - **वानप्रस्थ आश्रम** : एक व्यक्ति अपने सांसारिक व्यवसायों का त्याग करता है।
    - **संन्यास आश्रम** : एक व्यक्ति अपनी सांसारिक संपत्ति को त्याग देता है और खुद को आध्यात्मिक मामलों के लिए समर्पित कर देता है।

इस आश्रम के अनुसार व्यक्ति की उम्र के अनुरूप व्यवहार को नैतिक माना जाता है।

- **वर्ण धर्म**
    - वर्ण धर्म कहता है कि विभिन्न वर्णों के लोगों को अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।
    - लेकिन यह समानता और स्वतंत्रता के आधुनिक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है ।

2. पश्चिमी

- **मानक नैतिकता / अनुदेशात्मक नैतिकता** : यह 'हमें क्या करना चाहिए' से संबंधित है और **सही और गलत का निर्णय करने के लिए मानदंड और सिद्धांत प्रदान करता है** । यह 2 प्रकार का होता है।
    - **टेलीओलोजिकल/परिणामवादी** : यह सही या गलत का निर्णय करने के लिए अंत (परिणाम) को देखता है। जैसे: उपयोगितावाद/सुखवाद
    - **डोनटोलॉजिकल** : यह सही या गलत का निर्णय करते समय साध्य के बजाय साधन को देखता है जैसे : कांट का स्पष्ट अनिवार्यता, गीता का निष्काम कर्म आदि।

- **वर्णनात्मक/तुलनात्मक नीतिशास्त्र** : विभिन्न स्थानों और समयों में विभिन्न लोगों और संस्कृतियों की नैतिक मान्यताओं और प्रथाओं का अध्ययन।
- **मेटा-एथिक्स** : यह **नैतिक सिद्धांतों की उत्पत्ति और अर्थ को देखता है** । मेटाएथिक्स सही या गलत के प्रश्नों का उत्तर नहीं देता है। उदाहरणार्थ, सत्यनिष्ठा नैतिक सिद्धांत है। मेटा-एथिक्स इस बात पर गौर करेगा कि ईमानदार व्यक्ति होने का क्या मतलब है।
- **सदाचार नीति** : यह **क्रिया आधारित होने के बजाय व्यक्ति आधारित है** । इस दृष्टिकोण के अनुसार, एक **गुणी व्यक्ति हमेशा सही काम करता है** । यह उस प्रकार की विशेषताओं का मार्गदर्शन करता है जिन्हें एक उचित व्यक्ति को प्राप्त करना चाहिए। इन विशेषताओं में न्याय, धैर्य आदि शामिल हैं।
- **व्यावहारिक नैतिकता** : यह नैतिकता का हिस्सा है जो **वास्तविक जीवन की विवादास्पद स्थितियों** जैसे युद्ध, पशु अधिकार, मृत्युदंड, इच्छामृत्यु, मुखबिरी, मीडिया नैतिकता, अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता आदि की नैतिकता का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

नैतिकता, मूल्यों, नैतिकता और दृष्टिकोण को एक दूसरे और व्यवहार के साथ संरेखित करना

ध्यान देने योग्य मुख्य बात यह है

- हमारी नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण एक-दूसरे के अनुरूप होने चाहिए।
- हमारा व्यवहार उनमें से प्रत्येक के अनुरूप होना चाहिए।

नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण एक दूसरे के अनुरूप क्यों होने चाहिए?

- यह आवश्यक है कि नैतिकता, नैतिकता, मूल्य और दृष्टिकोण एक-दूसरे **के साथ संरेखित हों। यदि वे संरेखित नहीं हैं, तो यह एक व्यक्ति को अत्यधिक भ्रम और भावनात्मक उथल-पुथल** में छोड़ देगा , और वह आसानी से निर्णय लेने में सक्षम नहीं होगा। इसलिए, वे जितने अधिक संरेखित होंगे, व्यक्ति को उतनी ही अधिक शांति और शांति मिलेगी।

पार्श्व विषय: व्यवहार

- व्यवहार वह सब कुछ है **जो एक व्यक्ति करता है और जिसे देखा जा सकता है।**
- सभी व्यवहार **आनुवंशिकता और पर्यावरण** (जिसमें वह रहता है) के उत्पाद हैं

बी = आनुवंशिकता एक्स पर्यावरण

कुछ व्यवहार अधिक वंशानुगत और कम पर्यावरणीय होते हैं, और इसके विपरीत।

व्यवहार नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण के अनुरूप क्यों होना चाहिए ?

	यदि दोनों संरेखित नहीं हैं, तो इसका परिणाम होगा
यदि किसी व्यक्ति के **मूल्य व्यवहार** के अनुरूप नहीं हैं	**टकराव**
यदि किसी व्यक्ति का **आचरण आचरण** के अनुरूप नहीं है	**मतभेद**
यदि किसी व्यक्ति के **आचार-विचार व्यवहार** के अनुरूप नहीं हैं	**अपराध**
यदि किसी व्यक्ति की **नैतिकता व्यवहार** के अनुरूप नहीं है	**सामाजिक अलगाव एवं सामाजिक बहिष्कार**

उन सभी में एक बात समान है: वे **अवेरसिव स्टेट्स** (एक ऐसा राज्य जिसे आप नापसंद करते हैं) हैं। इसलिए प्रयास यह है कि असंगति न रहे।

लेकिन अक्सर, असंगतता तब होती है जब हमारे व्यवहार के लिए हमारे पास कोई औचित्य होता है। यदि हमारे पास औचित्य है, तो विसंगतियों के कारण उत्पन्न घृणा कम हो जाएगी, और व्यक्ति उन व्यवहारों को जारी रखेगा।

असंगति के लिए स्पष्टीकरण

- **लागत-लाभ विश्लेषण** : मनुष्य लागत-लाभ विश्लेषण के आधार पर अपने कार्य करता है। एक व्यक्ति व्यवहार तब दिखाता है जब उसका लाभ शामिल लागत से अधिक हो। सामान्य परिस्थितियों में, विचलित व्यवहार दिखाने में शामिल लागत भावनात्मक और मानसिक होती है, जो आम तौर पर शारीरिक लागत से अधिक होती है। इसलिए, एक व्यक्ति अपनी नैतिकता, मूल्यों, नैतिकता और दृष्टिकोण के अनुरूप व्यवहार करता है। लेकिन जब भौतिक लागत भावनात्मक और सामाजिक लागत से अधिक होती है, तो व्यक्ति अपने व्यवहार में असंगतता दिखाता है।

- **व्यवहार का औचित्य :** यदि किसी के पास अपने व्यवहार के लिए औचित्य है, तो व्यक्ति वह व्यवहार दिखाएगा, भले ही वह उसकी नैतिकता, मूल्यों, नैतिकता और दृष्टिकोण के अनुरूप न हो। उदाहरण के

लिए, राजा कई स्त्रियों से विवाह करते थे, जो अनैतिक और अनैतिक था, लेकिन फिर भी वे ऐसा करते थे। इसका कारण यह था कि उनके व्यवहार का औचित्य था , अर्थात् राजा को अपनी प्रजा के हितों की रक्षा के लिए कई स्त्रियों से विवाह करना पड़ता था।

कार्रवाई में नैतिकता या सदाचार की तलाश कब करें

- यदि हम किसी भी कार्य की नैतिकता और नैतिकता पर गौर करना चाहते हैं, तो सबसे पहले वह **मानवीय कार्य होना चाहिए।**
- किसी भी कार्रवाई को मानवीय कार्रवाई बनाने के लिए तीन आवश्यक शर्तें पूरी होनी चाहिए।

1. उस कार्य के परिणामों के बारे में कुछ मानवीय ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

- उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा पानी में मोबाइल डुबोता है, तो कोई कार्रवाई की नैतिकता की जांच नहीं कर सकता क्योंकि बच्चे को अपने कार्य के परिणामों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

2. कार्य स्वेच्छा से अर्थात बिना किसी दबाव के किया जाना चाहिए।

- अगर किसी मजबूरी में काम किया जाए तो नैतिकता और सदाचार सामने नहीं आता।
- उदाहरण के लिए, यदि कोई आपके माथे पर बंदूक रखकर आपसे कुछ करने के लिए कहता है। ऐसे परिदृश्य में, हमें कार्रवाई की नैतिकता का आकलन नहीं करना चाहिए।

3. विभिन्न विकल्पों की उपस्थिति होनी चाहिए

- चुनने के लिए कई विकल्प होने चाहिए.

इसलिए, ऐसे कृत्यों में इच्छा की स्वतंत्रता मौजूद होनी चाहिए।

नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण पर प्रश्न

1. क्या वे स्थिर या गतिशील हैं?

- ये न तो स्थिर हैं और न ही गतिशील हैं बल्कि **अपेक्षाकृत स्थायी हैं** ।
- स्पष्टीकरण: गतिशील और स्थैतिक चरम सीमाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। गतिशील का अर्थ है तेजी से बदलना, और स्थैतिक का अर्थ है कि वे शायद ही बदलते हैं। ये चीज़ें बदल सकती हैं, लेकिन बदलाव बहुत धीरे-धीरे आता है।

वे अपेक्षाकृत स्थायी क्यों हैं?

- नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण **किसी की पहचान का स्रोत हैं** (यानी वह कौन है)। व्यक्ति चाहते हैं कि उनकी एक स्थिर पहचान हो। इसलिए, इन चार चीजों में तेजी से बदलाव का विचार ही सवाल से बाहर है।

- एक व्यक्ति समय, लागत और ऊर्जा के बड़े **निवेश के साथ नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण (ईवीएमए) विकसित करता है** और उन्हें बदलने के लिए समय, लागत और ऊर्जा की भी आवश्यकता होती है। जब इन निवेशों की आवश्यकता होती है, तो लोग इन चीजों को आसानी से नहीं बदलते हैं।

- जब भी अंतर्निहित नैतिकता, मूल्यों, नैतिकता और दृष्टिकोण से विचलन होता है तो अपराध बोध होता है।

प्रश्न: वातावरण कभी-कभी बहुत तेजी से बदलता है, लेकिन फिर भी हम देखते हैं कि नैतिकता, नैतिकता, मूल्य और दृष्टिकोण इतनी तेजी से नहीं बदलते हैं। यदि नैतिकता और नैतिकता ऐसे उपकरण हैं जो पर्यावरण के साथ हमारा संतुलन सुनिश्चित करते हैं, तो हम यह विश्वास कैसे रख सकते हैं कि ईवीएमए अपेक्षाकृत स्थायी हैं, लेकिन पर्यावरण बदल रहा है?

- नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण (ईवीएमए) हमारी पहचान का आधार हैं। लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि व्यवहारों का एक स्पेक्ट्रम एक ही ईवीएमए को प्रदान किया जा सकता है। यह तथ्य व्यक्ति को तेजी से बदलते परिवेश के साथ तालमेल बिठाने में मदद करता है क्योंकि व्यक्ति यह तय कर सकता है कि किसी विशेष वातावरण में कौन सा व्यवहार प्रदर्शित करना है।

- पर्यावरण के आधार पर हम यह तय कर सकते हैं कि हम कौन सा व्यवहार प्रदर्शित करेंगे। जैसे, देशभक्ति. एक मूल्य के रूप में देशभक्ति को राष्ट्र-निर्माण की दिशा में निर्देशित व्यवहारों के संग्रह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ।

हर किसी में देशभक्ति का मूल्य होता है, लेकिन वे उन्हें देशभक्ति के मूल्य के तहत स्वीकार्य विभिन्न व्यवहारों में दिखाते हैं।

रक्षा सेवाओं के संदर्भ में , देशभक्ति राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान करने की तत्परता की मांग करती है। आपके अनुसार, रोजमर्रा के नागरिक जीवन में देशभक्ति का क्या अर्थ है? उदाहरण सहित समझाइये। (यूपीएससी) (10 अंक)

2. क्या वे पूर्ण या सापेक्ष हैं?

- **निरपेक्ष** : नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण (ईवीएमए) **संदर्भ और स्थिति-स्वतंत्र हैं** । वे हमेशा मान्य होते हैं और किसी पर भी, कहीं भी और कभी भी लागू होते हैं। जैसे, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, न्याय, जवाबदेही आदि।
- **सापेक्ष** : नैतिकता, मूल्य, नैतिकता और दृष्टिकोण (ईवीएमए) **संदर्भ और स्थिति पर निर्भर करते हैं** । वे समय, स्थान और परिस्थितियों के साथ बदलते रहते हैं।

समय	समय के साथ भारतीय संस्कृति में पितृसत्तात्मक मूल्य अपनी चमक खोते जा रहे हैं।
जगह	यदि कोई व्यक्ति भारत से अमेरिका में प्रवास करता है, तो उसे समाज में एकीकृत होने के लिए कुछ अमेरिकी मूल्यों को अपनाना होगा।
परिस्थितियाँ	उदाहरण के लिए, जो लोग मृत्युदंड के खिलाफ हैं वे भी कुछ जघन्य मामलों में फांसी का समर्थन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, निर्भया मामला जब हर वर्ग के लोगों ने जघन्य अपराध करने वालों को फांसी देने का समर्थन किया।

- उपरोक्त प्रश्न का कोई सटीक उत्तर नहीं है। कुछ विद्वान निरपेक्षता में विश्वास करते हैं, और अन्य सापेक्षता में विश्वास करते हैं। लेकिन आम तौर पर इंसान जिस तरह से होते हैं, वे सापेक्ष रूप से काम करते हैं।
- इसके अलावा, पूर्ण विद्यालय विविधता का सम्मान करने की आवश्यकता और इस दृष्टिकोण को नजरअंदाज करता है कि किसी कार्य का परिणाम भी उस कार्य की नैतिकता तय करने में एक कारक है। झूठ बोलना अनैतिक है, लेकिन ऐसे मामलों में जहां सामान्य जर्मनों ने यहूदियों की जान बचाने के लिए नाजी अधिकारियों से झूठ बोला, उन्हें अनैतिक या अनैतिक नहीं माना जा सकता।

- लेकिन सापेक्षवाद स्कूल को चुनौती भी दी जा सकती है क्योंकि, इस स्कूल में नैतिक विवादों को सुलझाने या विभिन्न समाजों के सदस्यों के बीच नैतिक मामलों पर सहमति तक पहुंचने के लिए कोई सामान्य रूपरेखा नहीं है।

3. क्या वे संस्कृति-विशिष्ट हैं या सार्वभौमिक?

- वे संस्कृति-विशिष्ट होने के साथ-साथ सार्वभौमिक भी हैं।
- कुछ ईवीएमए सार्वभौमिक हैं, उदाहरण के लिए प्रेम, अखंडता, प्रतिबद्धता आदि। ये हर संस्कृति के लोगों के पास होंगे।
- लेकिन उनमें से कुछ संस्कृति-विशिष्ट भी हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय संस्कृति के लिए कुछ अद्वितीय ईवीएमए हैं
    - पारिवारिक आज्ञाकारिता
    - सामूहिकता (पश्चिमी संस्कृतियाँ व्यक्तिवाद को महत्व देती हैं)

4. क्या वे व्यक्तिपरक या वस्तुपरक हैं?

मूल्यों के वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिपरक होने के संबंध में विरोधाभासी दृष्टिकोण हैं । उदाहरण के लिए,

1. प्लेटो के अनुसार, मूल्य व्यक्ति के बाहर होते हैं और उनकी धारणा या विश्वास पर निर्भर नहीं होते हैं। खूबसूरती का उदाहरण लीजिए. प्लेटो के अनुसार एक सुन्दर व्यक्ति सभी को सुन्दर लगेगा।
2. इसके विपरीत, प्रोटागोरस मूल्यों की व्यक्तिपरकता में विश्वास करता है। प्रोटागोरस के अनुसार, सभी मूल्य मानव पर्यवेक्षक पर निर्भर करते हैं। उन्होंने यह तर्क देकर प्लेटो के दावों का खंडन किया कि 'सौंदर्य देखने वाले की आंखों में निहित है।'

निष्कर्ष: अधिकतर, मूल्य व्यक्तिपरक होते हैं क्योंकि व्यक्तिगत अंतर धारणा, समझ और निर्णय के आधार पर होते हैं। मूल्यों की व्यक्तिपरकता के बीच, कुछ वस्तुनिष्ठ मूल्य भी होने चाहिए जो व्यक्तियों को समाज में बांधे रखें और समाज में अराजकता से बचें। इनमें अखंडता, करुणा आदि जैसे मूल्य शामिल हैं।

अणुव्रत के संदर्भ में समग्र विकास :

समग्र विकास का परिचय

समग्र विकास से तात्पर्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों को शामिल करते हुए उसके व्यापक विकास से है। यह जीवन के प्रति एक संतुलित और एकीकृत दृष्टिकोण पर जोर देता है जो न केवल बौद्धिक क्षमताओं को बल्कि भावनात्मक कल्याण, नैतिक व्यवहार और आध्यात्मिक विकास को भी पोषित करता है। समग्र विकास व्यक्तियों और उनके परिवेश के भीतर सामंजस्य को बढ़ावा देता है, जिससे वे पूर्ण और सार्थक जीवन जीने में सक्षम होते हैं।

भारतीय दर्शन और आध्यात्मिक परंपराओं के संदर्भ में, आत्म-जागरूकता, संतुलन और आंतरिक शांति प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न नैतिक और ध्यान संबंधी प्रथाओं के संबंध में समग्र विकास पर अक्सर चर्चा की जाती है। ऐसा ही एक प्रमुख दर्शन है **जीवन विज्ञान , जो जीवन जीने का विज्ञान है, जो अणुव्रत (छोटी प्रतिज्ञा) की नैतिक प्रथाओं और प्रेक्षा ध्यान** और **कायोत्सर्ग** जैसी माइंडफुलनेस तकनीकों के साथ संयुक्त है ।

---

1. जीवन विज्ञान: जीने का विज्ञान

जीवन विज्ञान (जीने का विज्ञान) एक व्यापक शैक्षिक और आध्यात्मिक ढांचा है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों के मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक आयामों में सामंजस्य स्थापित करके उनके समग्र विकास को बढ़ावा देना है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा विकसित यह दर्शन जैन धर्म के सिद्धांतों में गहराई से निहित है, जो मूल्य-आधारित शिक्षा और नैतिक आचरण पर केंद्रित है।

जीवन विज्ञान व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों के बारे में जागरूकता विकसित करने के महत्व पर जोर देता है। इसमें शामिल हैं:

- **आत्म-जागरूकता** : अपनी आंतरिक दुनिया की गहरी समझ विकसित करना।
- **सचेतनता** : वर्तमान क्षण के प्रति सचेत रहना और सकारात्मक विचारों का विकास करना।
- **नैतिकता और मूल्य** : जीवन के हर पहलू में नैतिक दिशा-निर्देश का पालन करना।
- **स्वास्थ्य और कल्याण** : शारीरिक और मानसिक कल्याण बनाए रखने के लिए संतुलित जीवन शैली पर जोर देना।

जीवन विज्ञान के माध्यम से व्यक्तियों को करुणा, सहानुभूति, अहिंसा और आत्म-अनुशासन जैसे सकारात्मक गुणों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो उनके समग्र विकास में योगदान देता है।

---

2. अणुव्रत आंदोलन: नैतिक विकास का आधार

अणुव्रत **आंदोलन एक नैतिक** और आध्यात्मिक आंदोलन है जो व्यक्तियों को धार्मिक जीवन जीने के लिए छोटे-छोटे व्रत या ' अणुव्रत ' लेने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस आंदोलन का सार आत्म-अनुशासन और नैतिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता की शक्ति में निहित है, चाहे व्यक्ति किसी भी धर्म, जाति या राष्ट्रीयता का हो।

अणुव्रत आंदोलन नैतिक नियमों का एक समूह रेखांकित करता है जिनका पालन व्यक्ति कर सकता है, जिनमें शामिल हैं:

- **अहिंसा** : किसी भी जीव को हानि न पहुँचाना।
- **सत्य** : सच बोलना और छल से बचना।
- **अस्तेय : चोरी न करना** और दूसरों की संपत्ति का सम्मान करना ।
- **ब्रह्मचर्य** : विचारों, शब्दों और कार्यों में पवित्रता बनाए रखना।
- **अपरिग्रह** : भौतिकवादी इच्छाओं और आसक्तियों को न्यूनतम **करना ।**

इस आंदोलन का उद्देश्य शांति, अहिंसा, सहिष्णुता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देने वाले नैतिक मूल्यों को स्थापित करना है, इस प्रकार समग्र विकास के नैतिक पहलू में योगदान देना है। इन छोटी-छोटी प्रतिज्ञाओं का पालन करके, व्यक्ति आत्म-अनुशासन, अखंडता और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा दे सकता है।

---

3. प्रेक्षा ध्यान: आत्म-साक्षात्कार के लिए ध्यान

प्रेक्षा ध्यान (प्रेक्षा ध्यान) आत्म-साक्षात्कार और आध्यात्मिक शुद्धि के लिए एक शक्तिशाली तकनीक है। इसे 1970 के दशक में आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा विकसित किया गया था , जो प्राचीन जैन दर्शन पर आधारित है। "प्रेक्षा" शब्द का अर्थ है "गहराई से समझना", और यह ध्यान तकनीक व्यक्तियों को उनके आंतरिक स्व की वास्तविक प्रकृति को समझने और महसूस करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

प्रेक्षा ध्यान में जागरूकता, एकाग्रता और आत्म-जागरूकता के कई तत्व शामिल हैं:

- **श्वास पर ध्यान (अनुप्रेक्षा)** : मानसिक स्पष्टता और शांति प्राप्त करने के लिए अपने श्वास पर ध्यान केन्द्रित करना।
- **कायोत्सर्ग (शरीर बोध) :** शारीरिक और भावनात्मक संतुलन को बढ़ाने के लिए शरीर और उसकी संवेदनाओं के प्रति सचेत जागरूकता विकसित करना।
- **मानसिक केंद्रों की धारणा (चैतन्य केंद्र प्रेक्षा)** : ऊर्जा प्रवाह को सुसंगत बनाने के लिए शरीर में विशिष्ट ऊर्जा केंद्रों (चक्रों) पर ध्यान करना।
- **विचारों की धारणा (भावना)** : अपने विचारों, भावनाओं और इच्छाओं का अवलोकन करना और उनके प्रति जागरूक होना, जिससे मानसिक शुद्धि होती है।

प्रेक्षा ध्यान का उद्देश्य क्रोध, भय और ईर्ष्या जैसी नकारात्मक भावनाओं को मन से साफ़ करना और उन्हें करुणा, प्रेम और शांति जैसे सकारात्मक गुणों से बदलना है। प्रेक्षा ध्यान को अपने दैनिक जीवन में शामिल करके, व्यक्ति मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और आध्यात्मिक विकास प्राप्त कर सकते हैं, जो उनके समग्र समग्र विकास में योगदान देता है।

---

4. कायोत्सर्ग : विश्राम और तनावमुक्ति की कला

कायोत्सर्ग , जिसका अर्थ है "शरीर का परित्याग", भौतिक स्व से गहन विश्राम और अलगाव की एक तकनीक है, जो अभ्यासियों को आंतरिक शांति और मानसिक स्पष्टता की स्थिति विकसित करने में मदद करती है। यह प्रेक्षा ध्यान का एक अभिन्न अंग है और इसे गहन ध्यान के लिए एक प्रारंभिक चरण के रूप में उपयोग किया जाता है।

कायोत्सर्ग की तकनीक में शामिल हैं:

- **शारीरिक विश्राम** : तनाव और दबाव को दूर करने के लिए शरीर के विभिन्न भागों को व्यवस्थित रूप से आराम देना।
- **मानसिक वैराग्य** : मन को सांसारिक विकर्षणों और विचारों से अलग करना, आंतरिक शांति के लिए स्थान बनाना।
- **आध्यात्मिक जागरूकता** : भौतिक शरीर और सच्चे स्व (आत्मा) के बीच अंतर को समझना, जिससे आध्यात्मिक जागृति होती है।

कायोत्सर्ग का अभ्यास करने से व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त करने, एकाग्रता बढ़ाने और तनाव और चिंता को कम करने में मदद मिलती है। यह भावनात्मक लचीलापन विकसित करने के लिए विशेष रूप से प्रभावी है, जिससे व्यक्ति नकारात्मक भावनाओं को छोड़ कर अपने आंतरिक विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

समग्र विकास में जीवन विज्ञान, अणुव्रत , प्रेक्षा ध्यान और कायोत्सर्ग का एकीकरण

अणुव्रत , प्रेक्षा ध्यान और कायोत्सर्ग के संदर्भ में समग्र विकास , संतुलित और नैतिक जीवन शैली की खेती पर जोर देता है। ये सिद्धांत और अभ्यास, जब दैनिक जीवन में एकीकृत होते हैं, तो व्यक्तियों को व्यक्तिगत विकास, मानसिक शांति और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने के लिए उपकरण प्रदान करते हैं।

- **मानसिक विकास** : प्रेक्षा ध्यान और माइंडफुलनेस तकनीकों के अभ्यास से व्यक्ति अपनी मानसिक स्पष्टता, फोकस और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ा सकते हैं। नियमित ध्यान तनाव और चिंता को कम करता है, जिससे व्यक्ति शांत और संयमित मन से चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होता है।
- **भावनात्मक विकास :** कायोत्सर्ग और प्रेक्षा ध्यान जैसी तकनीकें क्रोध, भय और ईर्ष्या जैसी नकारात्मक भावनाओं को प्रबंधित करने में मदद करती हैं। भावनात्मक लचीलापन बढ़ाकर, व्यक्ति सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रख सकते हैं और करुणा और सहानुभूति विकसित कर सकते हैं।
- **आध्यात्मिक विकास** : अणुव्रत और प्रेक्षा ध्यान आध्यात्मिक शुद्धि और आत्म-जागरूकता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। नैतिक आचरण और गहन ध्यान का अभ्यास करके, व्यक्ति भौतिकवादी इच्छाओं और अहंकार से प्रेरित कार्यों से ऊपर उठकर आध्यात्मिक विकास और आंतरिक शांति प्राप्त कर सकता है।
- **नैतिक विकास** : अणुव्रत आंदोलन नैतिक जीवन के महत्व पर जोर देता है। अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह की छोटी-छोटी प्रतिज्ञाओं का पालन करके व्यक्ति नैतिक अखंडता को बढ़ावा दे सकता है और समाज की भलाई में योगदान दे सकता है।
- **शारीरिक विकास** : जीवन विज्ञान शारीरिक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती पर भी जोर देता है। ध्यानपूर्वक सांस लेने, शरीर के प्रति जागरूकता और विश्राम तकनीकों जैसे अभ्यासों के माध्यम से, व्यक्ति शारीरिक फिटनेस बनाए रख सकते हैं और तनाव से संबंधित बीमारियों को रोक सकते हैं।

---

6. शिक्षा और दैनिक जीवन में समग्र विकास के अनुप्रयोग

अणुव्रत , प्रेक्षाध्यान और कायोत्सर्ग की अवधारणाओं को शिक्षा, व्यावसायिक सेटिंग्स और व्यक्तिगत संबंधों सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है।

- **शिक्षा में** : जीवन विज्ञान को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल करने से मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे छात्रों को न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से भी विकसित होने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। प्रेक्षा ध्यान को स्कूलों में माइंडफुलनेस अभ्यास के रूप में पेश किया जा सकता है, जिससे छात्रों की एकाग्रता में सुधार, चिंता को कम करने और उनके समग्र कल्याण को बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
- **कार्यस्थल में** : व्यावसायिक सेटिंग में, ये अभ्यास बेहतर मानसिक स्वास्थ्य, बढ़ी हुई उत्पादकता और बेहतर पारस्परिक संबंधों में योगदान दे सकते हैं। नियमित ध्यान और माइंडफुलनेस अभ्यास कर्मचारियों को तनाव का प्रबंधन करने और अधिक सामंजस्यपूर्ण कार्य वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं।
- **व्यक्तिगत संबंधों में** : दैनिक जीवन में अणुव्रत और प्रेक्षा ध्यान का अभ्यास करने से भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे व्यक्तियों को बेहतर संवाद करने और रिश्तों में संघर्षों को हल करने में मदद मिलती है। अहिंसा, सत्यनिष्ठा और सहानुभूति पर जोर व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत करता है और घर और समुदाय में शांतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण माहौल को बढ़ावा देता है।

आधुनिक समय में प्रेक्षा ध्यान एवं कायोत्सर्ग की भूमिका

कायोत्सर्ग की प्रथाएँ मन की शांति, विश्राम और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देकर इन आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रदान करती हैं। ये तकनीकें कालातीत हैं और शांति, स्पष्टता और व्यक्तिगत विकास चाहने वाले व्यक्तियों की दैनिक दिनचर्या में इन्हें आसानी से शामिल किया जा सकता है।

निष्कर्ष

अणुव्रत , प्रेक्षा ध्यान और कायोत्सर्ग द्वारा समर्थित समग्र विकास , जीवन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो मानव विकास के सभी आयामों- शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक को संबोधित करता है। इन प्रथाओं का पालन करके, व्यक्ति समाज में सकारात्मक योगदान देते हुए एक संतुलित और पूर्ण जीवन प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा, कार्य और व्यक्तिगत जीवन में इन सिद्धांतों का एकीकरण नैतिक जीवन, आंतरिक शांति और आत्म-जागरूकता के लिए एक आधार बनाने में मदद करता है।

जैन दर्शन का प्राचीन ज्ञान, माइंडफुलनेस और नैतिक आचरण के आधुनिक अनुप्रयोगों के साथ मिलकर, एक तेजी से जटिल होती दुनिया में समग्र कल्याण की ओर एक मार्ग प्रदान करता है। प्रेक्षा ध्यान और कायोत्सर्ग , विशेष रूप से, मानसिक स्पष्टता और भावनात्मक लचीलापन विकसित करने के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं, जो उन्हें आज के तेज़-तर्रार और तनावपूर्ण वातावरण में अत्यधिक प्रासंगिक बनाते हैं। इन प्रथाओं के माध्यम से समग्र विकास व्यक्तियों को सद्भाव, संतुलन और आंतरिक पूर्णता का जीवन जीने के लिए सशक्त बनाता है।

समग्र विकास के छह आयाम

जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत के अनुसार

परिचय

समग्र विकास व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है, जो न केवल बौद्धिक या शारीरिक पहलुओं को संबोधित करता है, बल्कि मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों को भी संबोधित करता है। **जीवन** विज्ञान और **अणुव्रत आंदोलन** के अनुसार , एक संतुलित और पूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए समग्र विकास महत्वपूर्ण है। ये दर्शन एक ऐसा ढांचा प्रदान करते हैं जो नैतिक जीवन, ध्यान, मनन और आत्म-अनुशासन को एकीकृत करता है, व्यक्तिगत और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है।

---

1. शारीरिक विकास (शारीरिक विकास)

जीवन विज्ञान समग्र कल्याण के आधार के रूप में अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के महत्व पर जोर देता है। मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखने के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है।

- **शारीरिक स्वास्थ्य का महत्व** : अनुशासित और केंद्रित जीवन के लिए शारीरिक फिटनेस महत्वपूर्ण है। एक अच्छी तरह से बनाए रखा शरीर सहनशक्ति बढ़ाता है और बीमारियों को रोकता है।

- **शारीरिक विकास के लिए तकनीकें** : सचेत श्वास, **कायोत्सर्ग जैसे विश्राम व्यायाम** और नियमित शारीरिक गतिविधियां एक मजबूत, स्वस्थ शरीर के विकास और उसे बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।
- **अणुव्रत की भूमिका :** अणुव्रत आंदोलन की छोटी-छोटी प्रतिज्ञाएं आहार में संयम तथा शराब और नशीले पदार्थों जैसे हानिकारक पदार्थों से परहेज को प्रोत्साहित करती हैं, जो समग्र शारीरिक स्वास्थ्य में योगदान करती हैं।

---

2. मानसिक विकास (मानसिक विकास)

मानसिक विकास बौद्धिक क्षमताओं, आलोचनात्मक सोच और मानसिक लचीलेपन को तेज करने पर केंद्रित है। **जीवन विज्ञान के अनुसार** , मानसिक विकास विचारों और भावनाओं पर सचेत नियंत्रण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

- **माइंडफुलनेस प्रैक्टिसेज** : प्रेक्षा **ध्यान जैसी तकनीकों का** उपयोग विचारों के प्रति जागरूकता पैदा करने और क्रोध, भय और चिंता जैसी नकारात्मक भावनाओं को प्रबंधित करने के लिए किया जाता है।
- **संज्ञानात्मक स्पष्टता** : ध्यान मन को साफ करने, स्मृति, ध्यान और निर्णय लेने के कौशल को बढ़ाने में मदद करता है।
- **अणुव्रत का नैतिक नियंत्रण** : नैतिक व्रतों के माध्यम से मानसिक अनुशासन व्यक्ति को हानिकारक विचारों से बचने और व्यक्तिगत विकास और मानसिक शांति की ओर उन्मुख मानसिकता विकसित करने में मदद करता है।

---

3. भावनात्मक विकास (भावनात्मक विकास)

जीवन विज्ञान के अनुसार , समग्र विकास में भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की तकनीकें शामिल हैं।

- **नकारात्मक भावनाओं का प्रबंधन : कायोत्सर्ग** जैसी ध्यान तकनीकें भावनात्मक तनाव को दूर करने में मदद करती हैं, जिससे भावनात्मक लचीलापन आता है।

- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता** : सहानुभूति, प्रेम और करुणा जैसे गुणों को बढ़ावा देकर, व्यक्ति पारस्परिक संबंधों को बेहतर ढंग से संभाल सकते हैं।
- **अणुव्रत का नैतिक प्रभाव : अहिंसा** जैसे नैतिक व्रत गैर-हानिकारक भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के अभ्यास को प्रोत्साहित करते हैं, जो संघर्षों को रोकते हैं और शांति को बढ़ावा देते हैं।

---

4. सामाजिक विकास (सामाजिक विकास)

सामाजिक विकास समाज में व्यक्ति की भूमिका पर जोर देता है। **जीवन विज्ञान** और **अणुव्रत के अनुसार** , सामाजिक सद्भाव और नैतिक आचरण में व्यक्ति का योगदान समुदाय की भलाई के लिए महत्वपूर्ण है।

- **नैतिक आचरण : अणुव्रत की छोटी-छोटी प्रतिज्ञाओं का** पालन करके व्यक्ति समाज में सकारात्मक योगदान दे सकता है, न्याय को बनाए रख सकता है और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा दे सकता है।
- **सामाजिक सद्भाव** : नैतिक व्यवहार, सत्यनिष्ठा और अहिंसा परिवारों, कार्यस्थलों और समुदायों के भीतर मजबूत और सकारात्मक संबंध बनाने के मूल में हैं।
- **सचेतन सामाजिक संपर्क** : प्रेक्षा ध्यान बातचीत में सचेतनता सिखाता है, व्यक्तियों को संघर्ष से बचने और आपसी समझ को बढ़ावा देने में मदद करता है।

---

5. आध्यात्मिक विकास (आध्यात्मिक विकास)

आध्यात्मिक विकास का मतलब है अपने सच्चे स्व को समझना और महसूस करना। इसमें जीवन के गहरे उद्देश्य को पहचानना और उच्च आध्यात्मिक सिद्धांतों के साथ जुड़ना शामिल है। **जीवन विज्ञान** और **अणुव्रत** आध्यात्मिकता को समग्र विकास के एक प्रमुख आयाम के रूप में महत्व देते हैं।

- **प्रेक्षा ध्यान** : यह ध्यान अभ्यास व्यक्तियों को आध्यात्मिक शुद्धि के मार्ग पर ले जाता है, जहां वे भौतिक इच्छाओं से ऊपर उठकर आंतरिक शांति और आत्म-साक्षात्कार पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- **कायोत्सर्ग :** कायोत्सर्ग की तकनीक के माध्यम से , साधक भौतिक शरीर से अलग होकर अपनी आत्मा पर ध्यान केंद्रित करना सीखते हैं, जिससे आध्यात्मिक जागृति होती है।
- **अणुव्रत का योगदान :** अणुव्रत द्वारा उल्लिखित नैतिक जीवन का अभ्यास, सत्यनिष्ठा और नैतिक जिम्मेदारी के जीवन को बढ़ावा देकर आध्यात्मिक शुद्धता में योगदान देता है।

6. नैतिक विकास (नैतिक विकास)

जीवन विज्ञान और **अणुव्रत** के अनुसार नैतिक विकास समग्र विकास का आधार है। इसमें नैतिक मूल्यों का अभ्यास करना शामिल है जो व्यक्तिगत अखंडता और सामाजिक जिम्मेदारी में योगदान देता है।

- **अणुव्रत आंदोलन :** अणुव्रत की छोटी-छोटी प्रतिज्ञाएँ रोज़मर्रा की ज़िंदगी में नैतिक रूप से जीने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इन प्रतिज्ञाओं में अहिंसा, सत्य, शुद्धता, चोरी न करना और अपरिग्रह जैसे ज़रूरी सिद्धांत शामिल हैं।
- **व्यक्तिगत अखंडता** : इन व्रतों का पालन करने से व्यक्तिगत अखंडता का विकास होता है, जो दीर्घकालिक खुशी और संतुष्टि के लिए आवश्यक है।
- **ध्यान की भूमिका** : ध्यान, विशेष रूप से **प्रेक्षा ध्यान** , आत्म-जागरूकता को बढ़ावा देकर और क्रोध और ईर्ष्या जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों को कम करके नैतिक मूल्यों को मजबूत करने में मदद करता है।

समग्र विकास को बढ़ाने में प्रेक्षाध्यान और कायोत्सर्ग की भूमिका

प्रेक्षाध्यान और **कायोत्सर्ग** सभी छह आयामों में समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक तकनीकें हैं।

- **प्रेक्षा ध्यान** : इस ध्यान अभ्यास का उद्देश्य जीवन की गहरी सच्चाइयों को समझना और समझना है। यह आत्म-जागरूकता और मन की शांति विकसित करने में मदद करता है, जो भावनात्मक और मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। सांस, विचारों और शरीर पर ध्यान केंद्रित करके, प्रेक्षा ध्यान एकाग्रता में सुधार करता है, मन को शांत करता है और भावनाओं को शुद्ध करता है।
- **कायोत्सर्ग** : आराम करने और जाने देने की कला, कायोत्सर्ग शारीरिक और मानसिक विश्राम को बढ़ावा देता है। यह शरीर और सांसारिक विकर्षणों से अलग होने में मदद करता है, आध्यात्मिक विकास और भावनात्मक संतुलन में योगदान देता है। नियमित अभ्यास से गहरी आंतरिक शांति मिलती है और व्यक्ति को तनाव और चिंता से निपटने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष: जीवन विज्ञान और अणुव्रत के माध्यम से समग्र विकास प्राप्त करना

समग्र विकास व्यक्तिगत विकास के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण है जो जीवन के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक पहलुओं को शामिल करता है। **जीवन विज्ञान** जीवन जीने के लिए एक वैज्ञानिक ढांचा प्रदान करता है, जबकि **अणुव्रत नैतिक मूल्यों को स्थापित करता है, और प्रेक्षा ध्यान** और **कायोत्सर्ग** जैसी तकनीकें दैनिक जीवन में ध्यान और विश्राम को एकीकृत करने में मदद करती हैं।

इन सिद्धांतों और प्रथाओं का पालन करके, व्यक्ति एक संतुलित, सामंजस्यपूर्ण और सार्थक जीवन प्राप्त कर सकते हैं, जो न केवल उनके स्वयं के कल्याण में बल्कि समाज के कल्याण में भी योगदान देता है। समग्र विकास संपूर्ण मानव को पोषित करता है, जिससे वे स्वयं, दूसरों और पर्यावरण के साथ सामंजस्य में रहने में सक्षम होते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न (एमसीक्यू)

1. **अणुव्रत आंदोलन का प्राथमिक फोकस क्या है ?**
    - ए) शारीरिक फिटनेस
    - बी) नैतिक जीवन और आत्म-अनुशासन
    - सी) आध्यात्मिक ज्ञान
    - डी) तकनीकी उन्नति

उत्तर: बी) नैतिक जीवन और आत्म-अनुशासन

2. **कौन सी तकनीक जीवन विज्ञान से सम्बंधित नहीं है?**
    - ए) प्रेक्षा ध्यान
    - बी) कायोत्सर्ग
    - सी) योग निद्रा
    - डी) ध्यान

उत्तर: सी) योग निद्रा

3. **जीवन विज्ञान के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा समग्र विकास का प्रमुख घटक है?**
    - ए) केवल शारीरिक स्वास्थ्य

- बी) केवल बौद्धिक विकास
- सी) शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक आयामों का एकीकरण
- डी) वित्तीय समृद्धि

उत्तर: सी) शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक आयामों का एकीकरण

4. **प्रेक्षाध्यान का मुख्य उद्देश्य क्या सुधारना है?**
    - ए) शारीरिक शक्ति
    - बी) वित्तीय स्थिरता
    - सी) आत्म-जागरूकता और भावनात्मक संतुलन
    - डी) व्यावसायिक कौशल

उत्तर: सी) आत्म-जागरूकता और भावनात्मक संतुलन

5. **कौन सा अणुव्रत व्रत व्यक्तिगत व्यवहार में नैतिक आचरण का प्रत्यक्ष समर्थन करता है?**
    - क) अहिंसा
    - बी) अपरिग्रह (अपरिग्रह)
    - C) सत्यवादिता
    - D) अस्तेय

उत्तर: ए) अहिंसा

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **समझाइए कि जीवन विज्ञान समग्र विकास में किस प्रकार योगदान देता है।**

उत्तर : जीवन विज्ञान शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्पष्टता, भावनात्मक संतुलन, सामाजिक जिम्मेदारी, आध्यात्मिक विकास और नैतिक जीवन के एकीकरण पर जोर देकर समग्र विकास में योगदान देता है। यह

प्रेक्षा ध्यान और कायोत्सर्ग जैसी प्रथाओं के माध्यम से व्यक्तिगत विकास के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है , जो किसी व्यक्ति के जीवन के कई आयामों को संबोधित करते हैं।

2. **नैतिक जीवन को बढ़ावा देने में अणुव्रत की भूमिका का वर्णन करें।**

उत्तर : अणुव्रत अपने छोटे-छोटे व्रतों के माध्यम से नैतिक जीवन को बढ़ावा देता है, जो अहिंसा, सत्य, चोरी न करना और अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों के पालन को प्रोत्साहित करते हैं। ये सिद्धांत व्यक्तियों को उनके दैनिक जीवन में नैतिक विकल्प बनाने, व्यक्तिगत अखंडता और सामंजस्यपूर्ण सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

3. **जीवन विज्ञान के अनुसार कायोत्सर्ग का अभ्यास करने के क्या लाभ हैं ?**

उत्तर : कायोत्सर्ग शारीरिक संवेदनाओं और बाहरी विकर्षणों से अलग रहने की शिक्षा देकर शारीरिक विश्राम और मानसिक शांति प्राप्त करने में मदद करता है। यह अभ्यास तनाव को कम करने, मानसिक स्पष्टता को बढ़ाने और आंतरिक शांति और आत्म-जागरूकता की स्थिति को बढ़ावा देकर समग्र कल्याण को बढ़ावा देने में सहायता करता है।

अभिकथन एवं कारण प्रश्न

1. **अभिकथन (A): जीवन विज्ञान समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रथाओं को एकीकृत करता है। कारण (R): प्रेक्षाध्यान और कायोत्सर्ग की प्रथाओं का उपयोग जीवन के सभी पहलुओं में संतुलन प्राप्त करने के लिए किया जाता है।**

उत्तर: अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, तथा कारण ही अभिकथन का सही स्पष्टीकरण है।

2. **अभिकथन (A): अणुव्रत आंदोलन व्यक्तिगत विकास के नैतिक पहलू पर केंद्रित है। कारण (R): आंदोलन की छोटी प्रतिज्ञाओं में अहिंसा और सत्यता जैसे सिद्धांत शामिल हैं, जो नैतिक व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं।**

उत्तर: अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, तथा कारण ही अभिकथन का सही स्पष्टीकरण है।

3. **अभिकथन (A): प्रेक्षाध्यान मुख्यतः एक शारीरिक व्यायाम तकनीक है। कारण (R): प्रेक्षा ध्यान का उद्देश्य मन की शांति और भावनात्मक स्थिरता विकसित करना है।**

उत्तर: अभिकथन गलत है, लेकिन कारण सही है। प्रेक्षाध्यान मुख्य रूप से एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक विकास पर केंद्रित है।

केस स्टडी-आधारित प्रश्न

1. **केस स्टडी: एक विश्वविद्यालय में एक छात्र शैक्षणिक दबाव से होने वाले तनाव को प्रबंधित करने के लिए प्रेक्षा ध्यान और कायोत्सर्ग का अभ्यास करना शुरू करता है। समय के साथ, वे अपनी भावनात्मक भलाई और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार देखते हैं।**

प्रशन:

- प्रेक्षाध्यान और कायोत्सर्ग इस छात्र के तनाव प्रबंधन में किस प्रकार योगदान देते हैं?
- इन प्रथाओं से छात्रों के समग्र विकास के लिए संभावित लाभ क्या हैं?

उत्तर:

- प्रेक्षा ध्यान विद्यार्थी को मानसिक संतुलन और मानसिक शांति को बढ़ावा देकर तनाव प्रबंधन में मदद करता है, जबकि कायोत्सर्ग शारीरिक और मानसिक विश्राम में सहायता करता है। ये अभ्यास तनाव को कम करने और ध्यान को बेहतर बनाने में योगदान देते हैं।
- इसके लाभों में भावनात्मक स्थिरता में वृद्धि, बेहतर एकाग्रता, बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन और जीवन के प्रति अधिक संतुलित दृष्टिकोण शामिल हैं।

2. **केस स्टडी: एक कर्मचारी अपने दैनिक जीवन में अणुव्रत सिद्धांतों को अपनाता है, जिसमें अहिंसा और सत्य पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। वे पाते हैं कि सहकर्मियों के साथ उनके रिश्ते बेहतर होते हैं और उनका कार्य वातावरण अधिक सामंजस्यपूर्ण हो जाता है।**

प्रशन:

- अणुव्रत सिद्धांत कर्मचारी के व्यावसायिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
- इन सिद्धांतों का पालन किस प्रकार सकारात्मक कार्य वातावरण में योगदान दे सकता है?

उत्तर:

- अहिंसा और सत्य के सिद्धांत सहकर्मियों के बीच विश्वास और सम्मान को बढ़ावा देते हैं, जिससे संबंधों और संचार में सुधार होता है।
- इन सिद्धांतों का पालन नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देकर, संघर्षों को कम करके, तथा टीम वर्क और आपसी सम्मान को बढ़ाकर सकारात्मक कार्य वातावरण में योगदान देता है।

3. **केस स्टडी: एक समुदाय समग्र कल्याण को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयास के रूप में जीवन विज्ञान प्रथाओं को अपनाता है। वे नियमित रूप से प्रेक्षा ध्यान सत्र और कायोत्सर्ग कार्यशालाएँ लागू करते हैं।**

प्रशन:

- इन प्रथाओं का समुदाय के समग्र विकास पर क्या संभावित प्रभाव हो सकता है?
- समुदाय इन प्रथाओं को एकीकृत करने की सफलता को कैसे माप सकता है?

उत्तर:

- इन प्रथाओं से शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार, मानसिक स्पष्टता, भावनात्मक स्थिरता और समुदाय के भीतर मजबूत सामाजिक बंधन हो सकते हैं। कुल मिलाकर, समग्र विकास को बढ़ावा मिलेगा।
- सफलता को सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि, बेहतर स्वास्थ्य मापदण्ड, बेहतर पारस्परिक संबंधों तथा प्रतिभागियों से उनके कल्याण के संबंध में प्राप्त सकारात्मक प्रतिक्रिया के माध्यम से मापा जा सकता है।